ISSN 2349-6614

दिसम्बर, 2018

मूल्य : 25 ₹

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

दावों की हकीकत बताएगा 11 दिसम्बर का आईना

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 16 अंक 10 Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2018-2020 Posting Date : 27th-28th of Every Month RNI No. : RAJHIN/2003/9297 Posting Office : Shastri Circle, Udaipur

जंग रोधक सीमेंट

SHREE
ULTRA
RED-OXIDE

With Best Compliments from:

SHREE CEMENT LIMITED

A-6, Yudhisthar Marg, Opp. Yojana Bhawan, C-Scheme, Jaipur - 30205
Ph.: 0141-229733,223917,2222864 • Fax No.: 0141-2224841
For more details log on : www.shreecementltd.com

क्रिसमस पर्व पर हार्दिक बधाई !

दिसम्बर
2018
वर्ष 16, अंक 10

प्रत्यूष

अन्दर के पृष्ठों पर...

मूल्य 25 ₹
वार्षिक 300 ₹

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं
तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत-शत नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक नीरज शर्मा, डॉ. वीणा शर्मा

विपणन प्रबन्धक नितेश कुमार, नन्द किशोर मदन, भूमिका, उषा चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

कम्प्यूटर ग्राफिक्स Supreme Designs
विकास सुहालका

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी, कुलदीप इन्दौरा
कृष्ण कुमार हरितवाल, धीरज गुर्जर, अभय जैन
गजेन्द्र सिंह शक्तावत, लाल सिंह झाला
ओम शर्मा, अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमन्त भागवानी, डॉ. राव कल्याण सिंह
अशोक तम्बोली, सुन्दरदेवी सालवी

छायाकार :
कमल कमावत, जितेन्द्र कमावत,
ललित कमावत

बीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक-संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
"रक्षाबंधन", धानमण्डी, उदयपुर-313001

6 मध्यप्रदेश

नेताओं की मंदिर परिक्रमा

10 आस्था

इन 7 मंदिरों में पुरूषों की नो एंट्री!

22 परिणय

'दीपवीर' ने लिए फेरे

30 आरबीआई विवाद

ठंडे पड़े 'तनातनी' के अंगारे

32 अनावरण

'सरदार' खुश होंगे ?

कार्यालय पता : 2, 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष एवं फैक्सः 0294-2427703 वाट्सएप 9414077697
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
Email:pankajkumarsharma2013@gmail.com, Visit us at: www.pratyushpatrika.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. गुलाब बाग रोड, उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर से प्रकाशित।

डिसाइड का वादा, कपड़े धुले साफ और ज्यादा

AADHAR PRODUCTS

डिसाइड®

हमारे अन्य उत्पाद

- डिसाइड वाशिंग पाउडर
- डिसाइड सुपर व्हाईट वाशिंग पाउडर
- डिसाइड सुपर व्हाईट वाशिंग पाउडर 4कि.ग्रा. जार
- डिसाइड गोल्ड वाशिंग पाउडर
- एडवाइस वाशिंग पाउडर
- एडवाइस डिटर्जेन्ट केक
- डिसाइड डिशवाश बार
- डिसाइड डिशवाश टब
- डिसाइड डिटर्जेन्ट केक
- डिसाइड नमक
- डिसाइड बाथ सोप

AADHAR PRODUCTS PVT. LTD.
(AN ISO 9001:2015 CERTIFIED COMPANY)
RIICO Industrial Area, Gudli, Udaipur - 313 024 (Raj.) India

FOR CONSUMER FEEDBACK, PLEASE CONTACT TO EXECUTIVE (CUSTOMER CARE) ON
77278 64004
or email at aadharproducts@rediffmail.com

www.aadharproducts.in

जहरीली हवा में सिमटती सांसे

देश में हवा की गुणवत्ता तेजी से गिर रही है और इसकी वजह है, प्रदूषण। पिछले दिनों दिल्ली में वायु सूचकांक पर प्रदूषण का स्तर 'बेहद खराब' श्रेणी में दर्ज किया गया। प्रदूषण की वजह से जहरीली होती हवा में सिर्फ मनुष्य का ही सांस लेना दुभर नहीं हो रहा बल्कि समुद्री जीवों का भी दम घुट रहा है। दिल्ली-एनसीआर सहित उत्तर भारत में तो पिछले वर्षों की तरह इस बार भी दिवाली से प्रदूषण की समस्या गहरा गई है।

विशेषज्ञों की मानें तो दिल्ली की हवा में पटाखे और आतिशबाजी से निकलने वाला धुंआ दिवाली के बाद भी कई दिनों तक जमा रहा। यह धीरे-धीरे जब बैठने लगा तो पंजाब-हरियाणा में पराली के जलने से उठने वाले धुंए की चादर ने दिल्ली सहित इन राज्यों के कई गांवों को अपनी चपेट में ले लिया। पिछले साल दिवाली पर दिल्ली पीएम 2.5(बारीक कण, जो श्वसन और फेफड़ों की बीमारी का कारण बनते हैं) का स्तर राष्ट्रीय मानक से 16 गुना और अन्तरराष्ट्रीय सुरक्षित सीमा से 40 गुना अधिक था। तब भारी वाहनों के प्रवेश को सीमित करने के अलावा निजी कारों की संख्या कम करने के लिए ऑड-इवन जैसी व्यवस्था करनी पड़ी थी। लेकिन चूंकि वह एक तात्कालिक उपाय था, इसलिए उसका कोई परिणाम नहीं निकल पाया। दिल्ली के सर गंगाराम अस्पताल के थौरेसिस सर्जन श्रीनिवास के. गोपीनाथ के अनुसार मरीज़ों के लिए दिल्ली की हवा 'सजा-ए-मौत' से कम नहीं है। यह सिर्फ दिल्ली की ही स्थिति नहीं है, कम-ज्यादा हर बड़े औद्योगिक शहर इससे रूबरू हैं। वायु प्रदूषण कई बीमारियों का स्रोत तो है ही, गर्भावस्था के दौरान मां यदि ऐसे प्रदूषण की जद में है तो भ्रूण पर प्रतिकूल असर पड़ता है और शिशु बीमारी अथवा विकृति के साथ दुनिया में अपनी आंख खोलता है। वह समय पूर्व बहुत कम वजन के साथ भी जन्म ले सकता है। नवजात शिशु के सामने खतरा भी कम नहीं होता।

विकसित होने के क्रम में बच्चों के फेफड़े कहीं ज्यादा संवेदनशील होते हैं, क्योंकि वे तेजी से सांस लेते हैं। मांओ के साथ वे घर से बाहर भी निकलने लगते हैं, ऐसे में वायु प्रदूषण के सम्पर्क में आने से फेफड़ों के काम करने की क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और वे बचपन से ही शरीर में रोगों को आश्रय देने के लिए मज़बूर हो जाते हैं। उनकी याददाश्त व आईक्यू पर भी विपरीत प्रभाव होता है। इस समस्या से आनन-फानन में उठाए जाने वाले कदम अपर्याप्त ही होते हैं जबकि ज़िन्दगी से खिलवाड़ करने वाले हालातों पर योजनाबद्ध ढंग से हल्ला बोलते हुए प्रत्येक मनुष्य को सुरक्षित और स्वस्थ परिवेश दिया जाना चाहिए। इस मामले में केन्द्र हो अथवा राज्य सरकारें, फिसड्डी ही साबित हुई हैं। स्टेट ऑफ ग्लोबल एयर-2018 की रिपोर्ट बताती है कि भारत में वायु प्रदूषण की वजह से 11 लाख लोग हर साल दम तोड़ते हैं। अस्थमा के अलावा वायु प्रदूषण के कारण मस्तिष्क आघात, क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव प्ल्मोनरी डिज़ीज, हृदय रोग, फेफड़ों का संक्रमण, श्वास नली और फेफड़ों का कैन्सर आदि भी हो सकते हैं।

प्रदूषण कैसा भी हो, प्राणिमात्र के लिए घातक है। प्रदूषण के कारण समुद्री जीवों का भी दम घुट रहा है। समुद्र उम्मीद से कई गुना ज्यादा उष्मा सोख रहे हैं, जिससे पानी में ऑक्सीजन लगातार कम होती जा रही है।

एक शोध के मुताबिक पिछले 25 वर्षों में समुद्र ने 60 फीसदी ज्यादा उष्मा सोखी है। इसका सीधा तात्पर्य है कि जीवाश्म ईंधन उत्सर्जन के मामले में धरती अनुमान से कहीं ज्यादा संवेदनशील है। इससे इस सदी के अंत तक ग्लोबल वार्मिंग को नियंत्रण में रखना कठिन होगा। प्रदूषण के लिए मनुष्य भी कम जिम्मेदार नहीं है, जब हम खुद ही हवा, पानी और जंगल को खत्म करने पर तुले हैं तो फिर दोष के लिए बहाने क्यों गढ़ें और बचाव की गुहार भी किससे करें। इन हालातों पर जितना जल्दी हो सके विचार कर उपाय ढूंढ लेना हितकर होगा, अन्यथा स्थितियां भावी पीढ़ी के लिए कल्पना से भी बाहर बहुत भयावह होंगी।

नेताओं की मंदिर परिक्रमा

भाजपा के डीएनए में तो शामिल था ही हिन्दुत्व, गुजरात के सकारात्मक परिणाम के बाद कांग्रेस पर भी चढ़ने लगा धर्म का नशा

हमारे यहां एक कहावत प्रचलित है-मियां की दौड़ मस्जिद तक। इसी तर्ज पर एमपी में नेता चुनावी वैतरणी पार करने की जुगत में लगे हैं। यहां चुनावों की घोषणा से पहले ही तैयारियां और प्रचार में प्रमुख राजनीतिक दल और सत्ता पर काबिज लोग पहले से ही सक्रिय थे। इस बार के विधानसभा चुनाव में प्रचार के तौर तरीकों में पिछली बार की तुलना में काफी बदलाव देखने को मिल रहा है। पहले चुनावों में नेता घर-घर जाते थे, गांवों में डेरा जमाते थे, लोगों से सुख-दुख की बात करते थे। लेकिन इस बार नेता मंदिर-मंदिर दौड़ रहे हैं। सूचना और संचार तकनीक की भी भरपूर मदद ली जा रही है। एक समय था जब बच्चे छोटी-छोटी टोलियों में राजनीतिक दलों के पहचान वाली टोपियां पहन, बैच और झंडियां लहराते गली-गली घूमते थे। वो वोटर तो नहीं थे लेकिन चुनाव प्रचार को चरम तक पहुंचाने में अपना योगदान जरूर देते थे। पार्टियां भी तब बिल्ले (बैज), टोपी, बिंदी वगैरह छपवाती थीं। आभास होता था कि लोकतंत्र का बड़ा त्योहार आने वाला है। अब पार्टियां हाईटेक हो रही हैं। राजनेता भी जनता से पहले भगवान की शरण में पहुंच रहे हैं। गुजरात चुनाव में कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी ने करीब 27 मंदिरों की परिक्रमाएं की और कई दरगाहों पर मत्था टेका। जिन क्षेत्रों में वे ये धर्मस्थल धोकने गए उन क्षेत्रों की तकरीबन 50 सीटें कांग्रेस की झोली में आ गिरीं। तभी से कांग्रेस का विश्वास धर्म की चौखट के प्रति प्रबल हो गया।

सोशल मीडिया प्रचार का बड़ा माध्यम

राज्य और केंद्र की सत्ता में काबिज बीजेपी ने फेसबुक और ट्विटर जैसी सोशल साइट्स पर 'अबकी बार दो सौ पार' अभियान चलाया है। वहीं मध्यप्रदेश में सत्ता के वनवास को खत्म करने की कोशिश में कांग्रेस ने भी 'वक्त है बदलाव का' मुहीम छेड़ी है। चुनाव में प्रचार सिर्फ सोशल मीडिया साइट्स के दंगल तक ही सीमित नहीं है। बीजेपी के साइबर योद्धा बनाम कांग्रेस के सोशल सिपाहियों के बीच जंग के साथ इन दोनों पार्टियों के प्रमुख मंदिर-मंदिर घूम कर वोट के वरदान की जुगत में हैं। सबसे पुरानी राजनीतिक पार्टी कांग्रेस के मुखिया राहुल गांधी राज्य के सत्ता-वनवास से निजात पाने के लिए चित्रकूट में भगवान राम की शरण में पहुंचे और वहीं से चुनाव प्रचार की शुरुआत की। हालांकि इससे पहले वे कैलाश-मानसरोवर जाकर भोलेनाथ से आशीर्वाद ले आए थे। उन्होंने यहां आकर नर्मदा की आरती की। दतिया की पीतांबरा शक्तिपीठ में भी माथा टेका और महाकाल के भी दर्शन किए। मंदिर-मंदिर मैराथन में सीएम शिवराज सिंह चौहान भी पीछे नहीं रहे। उन्होंने 14 साल के शासन की उपलब्धियों को लेकर जनआशीर्वाद यात्रा की शुरुआत उज्जैन के महाकाल मंदिर से की। इस यात्रा के दौरान विंध्य में मैहर वाली शारदा देवी और पीतांबरा पीठ में बगुलामुखी देवी से भी आशीर्वाद लिया। शिवराज अयोध्या के राम मंदिर पर तो खामोश रहे लेकिन ओरछा के रामराजा मंदिर में जरूर माथा टेक आए।

230 में से 160 पर है धर्मस्थलों का प्रभाव

राजनेताओं द्वारा मंदिरों की सीढ़ियां चढ़ने की मजबूरी का कारण है स्थानीय लोगों की धर्म तथा देवीय मान्यताओं के प्रति जन आस्था। राज्य की 230 में से तकरीबन 160 सीटों पर क्षेत्रीय पीठों का प्रभाव है। पिछले चुनावों में इन सीटों में से ज्यादा पर बीजेपी का कब्जा रहा है। पिछले विधानसभा चुनावों की बात की जाए तो मंदिर-मंदिर नतमस्तक होने की रणनीति का लाभ बीजेपी को मिलता रहा है। ऐसे में कांग्रेस भी इस ट्रेंड का अनुसरण कर रही है। जिन धार्मिक स्थलों का सीटों पर असर रहा है, उनमें प्रमुख हैं-महाकाल मंदिर जिसका असर मालवा की लगभग 32 सीटों पर है। इनमें से ज्यादातर पर अभी बीजेपी का कब्जा है। वहीं ग्वालियर और चंबल संभाग की करीब 28 सीटों पर पीतांबरा पीठ का असर रहता है। मैहर और चित्रकूट का विंध्य की 28 सीटों पर तो बुंदेलखंड इलाके के ओरछा मंदिर का 11 सीटों पर गहरा प्रभाव रहता है। मंदिरों से इतर नर्मदा के पानी का भी मध्य प्रदेश की राजनीति पर गहरा असर है। इसका ज्यादातर प्रभाव अमरकंटक, होशंगाबाद, खंडवा, जबलपुर आदि जिलों पर है। ऐसे में राजनीतिक पंडितों का कयास है कि बीजेपी के डेढ़ दशक के शासन को खत्म कर कांग्रेस सत्ता पर काबिज हो सकती है। कांग्रेस सत्ता के शीर्ष पर पहुंचने के लिए जनता जनार्दन के घर द्वार दस्तक देने से पहले मंदिरों की सीढ़ियां नाप रही है। बीजेपी भी पूरा जोर लगा कर सत्ता की पुनरावृत्ति चाहती है और इसके लिए उसने भी जनता की जाजम के कोने थामने के साथ महाकाल के चरणों में अर्जी लगा रखी है।

कांग्रेस भी मैराथन में शामिल

कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष की जिम्मेदारी मिलने के बाद कमलनाथ ने सबसे पहले मंदिरों की तरफ रुख किया। जिसकी शुरुआत राजधानी भोपाल स्थित हनुमान मंदिर से हुई। इसके बाद वे उज्जैन में महाकाल और फिर दतिया की पीतांबरा पीठ में गए। नर्मदा यात्रा के बाद वरिष्ठ कांग्रेसी और पार्टी के चाणक्य दिग्विजय सिंह ने 31 मई को ओरछा में राम राजा के दरबार से एक बार फिर यात्रा शुरू की। भोपाल के लालघाटी स्थित हनुमान मंदिर तक प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष बनने के बाद कमलनाथ ने पहली दौड़ लगाई, जमकर भजन-कीर्तन भी किया। सिर्फ कमलनाथ ही क्यों, सूत्रों के मुताबिक मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ चुनावों में पार्टी ने राहुल गांधी को भी मंदिर-मंदिर धोक दिलाने की योजना बनाई। चुनाव प्रचार अभियान समिति के अध्यक्ष ज्योतिरादित्य सिंधिया ने भी चुनाव अभियान की शुरुआत महाकालेश्वर मंदिर में पूजा-अर्चना, अभिषेक के बाद की थी। कांग्रेस के इस मंदिर प्रेम पर भाजपा ने सवाल भी उठाया। इस पर सिंधिया ने कहा कि कोई व्यक्ति मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारा जाए ये उसका निजी मामला है। हिन्दू धर्म भाजपा की बपौती नहीं, हिन्दुस्तान का धर्म है। कमलनाथ ने बीजेपी के सवाल पर कहा कि उन्होंने ठेका लिया है हिन्दू धर्म का, मैंने छिंदवाड़ा में कई साल पहले 101 फुट का हनुमान मंदिर बनवाया, आज चुनाव में ये धर्म को राजनीति के मंच पर लाना चाहते हैं। भाजपा उपाध्यक्ष प्रभात झा ने कहा हनुमान मंदिर बनवा सकते हैं तो राम मंदिर का विरोध क्यों? हिन्दू मूर्ख नहीं हैं, ड्रामा समझते हैं।

-जगदीश सालवी

दीपावली एवं नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

ANGEERA
PURE VEGETERIAN

Address : Opp. Ashoka Palace, 100 ft Road, Shobhagpura, Udaipur

Angeera is always with you to serve best Quality Food and Hospitality

Please save and Educate Daughters

छोटे राज्य में बड़ी चुनौतियां

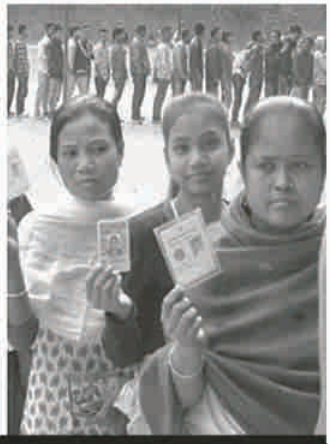

कांग्रेस की लगातार तीसरी बार सत्ता में वापसी व बीजेपी की खाता खोलने के साथ 'कांग्रेस मुक्त पूर्वोत्तर' अभियान का आखिर किला फतह करने की कोशिश

-सनत जोशी

केवल दस लाख की आबादी वाले छोटे से पर्वतीय राज्य मिजोरम में 28 नवंबर को चुनाव काफी दिलचस्प होंगे। यहां दलों के राजनीतिक समीकरण उलझे हुए हैं। सत्तारूढ़ कांग्रेस और मुख्य विपक्षी एमएनएफ दोनों अपनी 'बीजेपी विरोधी' पहचान साबित करने का प्रयास कर रहे हैं और दोनों का बीजेपी से अपना-अपना गठजोड़ रहा है। ईसाई बहुल इस राज्य की सभी 40 विधानसभा सीटों पर चर्च का दबदबा है। यहां कांग्रेस सत्ता की हैट्रिक लगाने की जुगत में है जबकि मिजो नेशनल फ्रंट और मिजोरम पीपुल्स कांफ्रेंस सत्ता में वापसी के लिए जद्दोजहद कर रही हैं।

वर्ष 2013 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने मिजोरम में जबर्दस्त प्रदर्शन कर 40 में से 34 सीटें जीती थीं। माना जा रहा है कि दूसरे दो दलों को तोड़कर अपने पाले में मिलाने वाली भाजपा के लिए मिजोरम की जीत काफी अहम है। तीन प्रमुख दलों के अलावा इस बार मिजोरम की क्षेत्रीय पार्टियों ने आपस में गठबंधन किया है. पीपुल्स रिप्रजेंटेशन ऑर आइडेंडिटी एंड स्टेट और मिजोरम, सेव मिजोरम फ्रंट एंड ऑपरेशन मिजोरम गठबंधन किया है। इसके साथ ही जोराम राष्ट्रवादी पार्टी और जोराम मूवमेंट ने हाथ मिलाया है। जबकि बीजेपी अकेले मैदान में है। फिलहाल राज्य में ललथनहवला के नेतृत्व में कांग्रेस की सरकार है। कांग्रेस 2008 से यहां सत्ता पर काबिज है।

मौजूदा विधानसभा में कांग्रेस के 34 विधायक हैं जबकि एमएनएफ के पांच और मिजोरम पीपुल्स कॉन्फ्रेंस का एक विधायक है। कांग्रेस ने 2013 में अपनी सीटों में इजाफा किया था। 2008 के चुनाव में उसे 32 सीटें मिली थीं। लगातार दो बार सत्ता में बने रहने के बाद आंतरिक कलह और सत्ता विरोधी लहर की वजह से कांग्रेस के लिए मिजोरम में मुश्किलें खड़ी होती दिख रही हैं। कांग्रेस के कई नेता पार्टी का साथ छोड़कर दूसरे दलों का दामन थाम चुके हैं। बीजेपी इस बार सत्ता हासिल करने के लिए पूरा जोर लगा रही है। हालांकि यहां एमएनएफ भी दो बार 1998 और 2003 में सरकार बना चुकी है। राज्य की 87 फीसदी आबादी ईसाई है. ऐसे में बीजेपी पर लगा हिंदुत्व का ठप्पा ही उसकी राह का सबसे बड़ा रोड़ा है। इसी के मद्देनजर एमएनएफ ने बीजेपी के साथ चुनाव में नहीं उतरी है। मिजोरम में बीजेपी पांच बार चुनाव लड़ने के बावजूद अपना खाता खोलने में नाकाम रही है। लेकिन अबकी बार पार्टी को इस राज्य से उम्मीदें हैं। दरअसल पूर्वोत्तर के चार राज्यों में बीजेपी सत्ता में है और दो में सरकार की साझीदार है। ऐसे में लोगों को उसे लेकर संभावनाएं भी दिख रही हैं। बीते महीने बीजेपी अध्यक्ष अमित शाह ने यहां पार्टी के चुनाव अभियान की शुरुआत की थी। मिजोरम में क्षेत्रीय पार्टियां पूरी ताकत से लड़ रही हैं। अगर राज्य में कांग्रेस बहुमत के आंकड़े को नहीं छू पाती है तो ऐसे स्थिति में क्षेत्रीय पार्टियों के बिना सरकार बनाना आसान नहीं होगा। यहां बीजेपी का मुख्य चुनावी मुद्दा मिजोरम के तीन दशक के चुनावी इतिहास के आंकड़ों के विपरीत है। दरअसल, बीजेपी ने अब तक यहां कभी विधानसभा चुनाव नहीं जीता है, लेकिन अब वह कांग्रेस और

यहां कांग्रेस के साथ भी बीजेपी कर चुकी है 'गठबंधन'

हालांकि कांग्रेस राज में उसकी पारंपरिक प्रतिद्वंद्वी रही एमएनएफ पर आगामी चुनावों में बीजेपी के साथ गठबंधन पर चुप्पी साधने का आरोप लगा रही है। कांग्रेस ने बीजेपी और एमएनएफ के बीच संबंधों को दिखाने के लिए मिजो भाषा में 50 हजार पुस्तिकाएं छपवाई हैं जिसमें दो दलों के प्रमुख अमित शाह और जोरामथांगा एक साथ बैठे दिख रहे हैं। उधर, एमएनएफ चुनावों के लिए बीजेपी के साथ किसी भी तरह के संबंधों से इनकार कर रही है और मिजोरम के चकमा स्वायत्त जिला परिषद (सीएडीसी) में दोनों राष्ट्रीय दलों के गठबंधन को उछाल रही है।

मिजो नेशनल फ्रंट (एमएनएफ) के चुनाव अभियान के साथ मुख्य प्रतिद्वन्द्वी निशाने पर है। ये दोनों दल एक के बाद एक मिजोरम पर शासन करते रहे हैं।

कांग्रेस के शासन वाला पूर्वोत्तर अकेला राज्य : चुनाव प्रचार में तेजी आने के बीच, कांग्रेस और एमएनएफ बीजेपी को 'ईसाई-विरोधी' बताने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। उधर बीजेपी ने भी उत्तर-पूर्व के इस राज्य में सत्ता हासिल करने के लिए योजनाबद्ध तरीके से प्रचार शुरू किया है। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह ने दावा किया है कि इस साल दिसंबर में क्रिसमस बीजेपी के शासन में मनाया जाएगा। मतगणना 11 दिसंबर को होनी है।

बीजेपी नेता मिजोरम को अपने 'कांग्रेस मुक्त पूर्वोत्तर' अभियान में अंतिम मोर्चे के रूप में देख रहे हैं। क्योंकि पार्टी असम, त्रिपुरा, मणिपुर और अरुणाचल प्रदेश में सत्ता हासिल कर चुकी है जबकि मेघालय और नगालैंड में वह सत्तारूढ़ गठबंधन में शामिल है। मिजोरम कांग्रेस के लिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि उसके शासन वाला यह पूर्वोत्तर का अकेला राज्य है।

बीजेपी लगा रही जोर

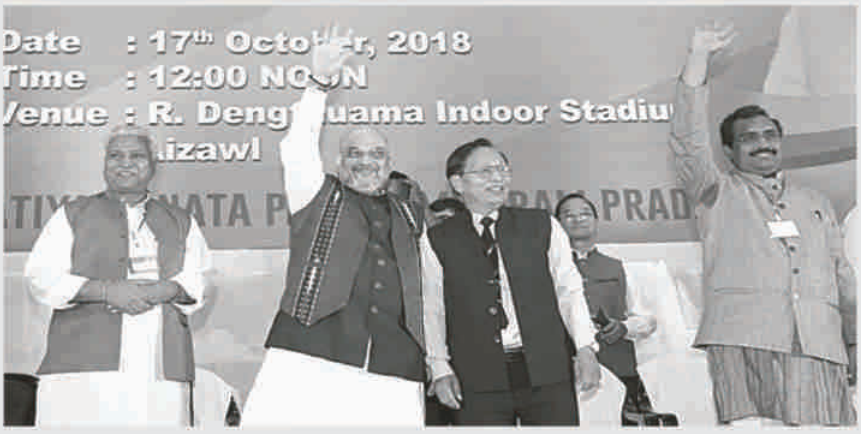

केवल दो साल पहले कांग्रेस की असम, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश और मणिपुर सहित इस क्षेत्र के पांच राज्यों में सरकार थी। कांग्रेस 2008 से मिजोरम में सत्ता में हैं और वह लगातार तीसरी जीत पर नजर गड़ाए हुए है। निवर्तमान विधानसभा में कांग्रेस के 34 विधायक हैं जबकि एमएनएफ के पांच और मिजोरम पीपुल्स कॉन्फ्रेंस का एक विधायक है। कांग्रेस ने 2013 में अपनी सीटों में इजाफा किया था। वर्ष 2008 में उसके पास 32 सीटें थीं, लेकिन बीजेपी इस बार सत्ता हासिल करने के लिए पूरा जोर लगा रही है। इससे पहले पूर्वोत्तर के दो अन्य ईसाई बहुल राज्यों मेघालय और नगालैंड में बीजेपी ने दूसरे स्थान पर रही पार्टियों के साथ हाथ मिलाकर सरकार बना ली और सर्वाधिक सीटों वाली पार्टी (मेघालय में कांग्रेस सहित) सरकार नहीं बना पाई। एमएनएफ बीजेपी नीत एनडीए में शामिल रह चुकी है, लेकिन बीजेपी ने सभी 40 सीटों पर अकेले चुनाव लडने का फैसला किया है।

HP GAS
SHYAM GAS CENTRE
जीहाँ!
HP GAS
your friendly gas
Sabji Market, Near Pipli, Ganeshpura, Hathipole, Udaipur-313001
Telephone: 0294-2413979, 2421482
Mobile: 9414167979, 9950783379, 9829409860

इन 7 मंदिरों में पुरुषों की नो एंट्री!

सबरीमला के उलट भारत में ऐसे 7 मंदिर हैं जहां पुरुषों का जाना मना है या पहले कभी मना था

-अशोक तम्बोली

सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद 16 नवंबर को सबरीमला में भगवान अयप्पा के मंदिर के कपाट खुले। इसी के साथ महिलाएं मंदिर में प्रवेश कर पाई। हालांकि महिलाओं के अधिकारों के लिए काम करने वाली सामाजिक कार्यकर्ता तृप्ति देसाई को बैरंग ही लौटना पड़ा। सबरीमला मंदिर पूरे देश में उस वक्त चर्चा में आया जब यहां महिलाओं के प्रवेश पर रोक लगी। 28 सितंबर को कोर्ट ने सभी उम्र की महिलाओं को सबरीमला मंदिर में प्रवेश के आदेश दिए। इस मामले में सुप्रीम कोर्ट में दाखिल 48 पुनर्विचार याचिकाओं पर 22 जनवरी को सुनवाई होगी। इधर, सबरीमला में महिलाओं को न जाने देने को लैंगिक समानता के विपरीत माना जा रहा है। इसका समर्थन और विरोध करने वालों की संख्या बराबर है। गाहे-बगाहे ऐसी कई धार्मिक जगहों पर महिलाओं की एंट्री को लेकर विवाद होते रहे हैं और महिलाओं ने भी इन जगहों पर जाने की ठानी हुई है। 2016 से पूर्व महिलाओं का हाजी अली दरगाह में जाना निषेध था। इसके बाद 2017 में तृप्ती देसाई ने महाराष्ट्र के अहमद नगर जिले के शनि शिगनापुर मंदिर में प्रवेश की ठानी हालांकि तब वे सफल नहीं हुई। ये थी सबरीमला मंदिर की बात। अब आपको बता दें कि भारत में ऐसे भी मंदिर हैं जहां पुरुषों का जाना मना है या पहले कभी मना था। ऐसे एक दो नहीं बल्कि पूरे सात मंदिर हैं। हालांकि इन मंदिरों में सबरीमला की तरह नियम नहीं हैं, लेकिन मान्यता यही कहती है कि पुरुषों को अंदर नहीं जाना चाहिए। कई जगहों पर पुरुष सिर्फ मंदिर के आंगन तक ही जाते हैं, गर्भगृह तक नहीं।

अट्टकल मंदिर (तिरुवनंतपुरम)

जहां 2017 तक पोंगल के वक्त देवी को भोग सिर्फ महिलाएं ही चढ़ा सकती थीं। ये वो मंदिर है जिसका नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज था क्योंकि यहां एक साथ 35 लाख महिलाएं आई थीं। ये अपने आप में महिलाओं की सबसे बड़ा ऐसा जुलूस था जो किसी धार्मिक काम के लिए इकट्ठा हुआ था। यहां भद्रकाली की पूजा होती है और कथा है कि कन्नागी जिसे भद्रकाली का रूप माना जाता है उनकी शादी एक धनाढ्य परिवार के बेटे कोवलन से हुई थी, लेकिन कोवलन ने एक नाचने वाली पर सारा पैसा लुटा दिया और जब उसे अपनी गलती का एहसास हुआ तब तक वो बर्बाद हो चुका था। कन्नागी की एक बेशकीमती पायल ही बची थी जिसे बेचने वह मदुरई के राजा के दरबार में गया। उसी समय रानी की वैसी ही पायल चोरी हुई थी और कोवलन को इसका दोषी मान उसका सिर कलम कर दिया गया था। इसके बाद कन्नागी ने अपनी दूसरी पायल दिखाई थी और मदुरई को जलने का श्राप दिया था. कन्नागी उसके बाद मोक्ष को प्राप्त हुई थीं। ऐसा माना जाता है कि भद्रकाली अट्टकल मंदिर में पोंगल के दौरान 10 दिन रहती हैं।

चक्कुलाथुकावु मंदिर (नीरात्तुपुरम)

ये मंदिर भी केरल का ही है। यहां हर साल पोंगल के अवसर पर नवंबर/दिसंबर में नारी पूजा होती है। इस पूजा में पुरुष पुजारी महिलाओं के पैर धोते हैं। उस दिन को धानु कहा जाता है। इस दिन पुजारी पुरुष भी मंदिर के अंदर नहीं जा सकते। पोंगल के समय 15 दिन पहले से ही यहां महिलाओं का हुजूम दिखने लगता है। महिलाएं अपने साथ चावल, गुड़ और नारियल लेकर आती हैं ताकि पोंगल बनाया जा सके और प्रसाद के तौर पर दिया जा सके। ये मंदिर मां दुर्गा को समर्पित है। इस मंदिर को महिलाओं का सबरीमला भी कहा जाता है। हिंदू पुराण देवी महात्म्य में इस मंदिर के बारे में बताया गया है। देवी को शुंभ और निशुंभ नाम के दो राक्षसों को मारने के लिए सभी देवताओं ने याद किया था क्योंकि वो किसी पुरुष के हाथों नहीं मर सकते थे. देवी ने यहां आकर दोनों का वध किया था।

संतोषी माता मंदिर (जोधपुर)

वैसे तो संतोषी माता का मंदिर और व्रत दोनों ही महिलाओं के लिए है, लेकिन पुरुष भी इस मंदिर में जाते हैं। जोधपुर में विशाल मंदिर है जो पौराणिक मान्यता रखता है। हालांकि, संतोषी माता की पूजा की अगर ऐतिहासिक कहानी देखी जाए तो ये 1960 के दशक में ही ज्यादा लोकप्रिय हुई, उसके पहले नहीं। संतोषी माता के मंदिर में शुक्रवार को महिलाओं को खास पूजा करने की इजाजत है और महिलाएं ही इस व्रत को रखती हैं। व्रत कथाओं में संतोषी माता की भक्त सत्यवती की कहानी कही जाती है। शुक्रवार को यहां पुरुषों के जाने की मनाही है. हालांकि, ये मनाही सिर्फ एक दिन की ही है, लेकिन फिर भी इसे जरूरी माना जाता है।

ब्रह्म देव का मंदिर (पुष्कर)

पूरे हिंदुस्तान में ब्रह्मा का एक ही मंदिर है और वो है पुष्कर में। ये मंदिर ऐतिहासिक मान्यता रखता है और यहां कोई भी ऐसा पुरुष जिसकी शादी हो गई हो वो गर्भगृह में जाकर पूजा नहीं करता। ऐसा करना उसके लिए शुभ नहीं माना जाता। मान्यता है कि वैवाहिक जीवन शुरू कर चुके पुरुष अगर यहां आएंगे तो उनके जीवन में दुख आ जाएगा। पुरुष मंदिर के आंगन तक जाते हैं, लेकिन अंदर पूजा सिर्फ महिलाएं करती हैं।

मुजफ्फरपुर का माता मंदिर

बिहार के मुजफ्फरपुर में एक ऐसा देवी का मंदिर है जहां पुरुषों का आना एक सीमित समय के लिए वर्जित होता है। इस मंदिर के नियम इतने कड़े हैं कि यहां पुरुष पुजारी भी इस दौरान नहीं आ सकता और सिर्फ महिलाएं ही यहां पूजा करती हैं।

कोट्टनकुलंगरा/ भगवती देवी मंदिर (कन्याकुमारी)

ये मंदिर कन्याकुमारी में स्थित है और यहां मां भगवती या आदि शक्ति की पूजा होती है, जो दुर्गा का रूप मानी गई है। इस मंदिर में पुरुषों का आना मना है। यहां भी पूजा करने के लिए सिर्फ स्त्रियां ही आती हैं। किन्नरों को भी इस मंदिर में पूजा करने की आजादी है, लेकिन अगर पुरुष यहां आना चाहें तो उन्हें पूरी तरह से सोलह श्रृंगार करना होगा। मान्यता है कि देवी यहां तपस्या करने आईं थीं ताकि उन्हें भगवान शिव पति के रूप में मिल सकें। एक और मान्यता कहती है कि सती माता की रीढ़ की हड्डी यहां गिरी थी और उसके बाद यहां मंदिर बना दिया गया। ये सन्यास का भी प्रतीक है इसलिए सन्यासी पुरुष मंदिर के गेट तक तो जा सकते हैं, लेकिन उसके आगे वो भी नहीं।

कामरूप कामाख्या मंदिर (गुवाहाटी)

असम का कामाख्या मंदिर. मान्यता है कि ये वो मंदिर है, जहां देवी की पीरियड के समय पूजा की जाती है। महिलाएं यहां पीरियड्स के समय भी आ सकती हैं। यहां पुजारी भी महिलाएं ही हैं। माता सती का मासिक धर्म वाला कपड़ा बहुत पवित्र माना जाता है। ये मंदिर 108 शक्ति पीठों में से एक है। मान्यता है कि जब सती माता ने अपने पिता के हवन कुंड में कूदकर जान दी थी तब शिव इतने क्रोधित हो गए थे कि वो सति का शरीर लेकर तांडव करने लगे। विष्णु भगवान से सृष्टि को बचाने के लिए सति के शरीर को सुदर्शन चक्र से काट दिया था। सति के 108 टुकड़े हुए थे जो पृथ्वी पर जहां भी गिरे वहां शक्ति पीठ बन गई। कामाख्या में माता सती का गर्भ और उनकी योनि गिरी थी। इसीलिए मूर्ति भी योनि रूपी है और मंदिर में एक गर्भ गृह भी है। इस मंदिर की देवी को साल में तीन दिन महावारी होती है।

प्रेम का पर्याय यीशु

ईसा का कहना है कि 'प्यार सिर्फ पड़ोसी से नहीं, वरन् दुश्मन से भी हो' । वजह यह है कि 'पिता' ईश्वर भलों और बुरों के बीच फर्क नहीं करता, बल्कि सूरज की रोशनी व बारिश का पानी दोनों को बराबर देता है। 'इंसान के लिए जो कुछ किया जाता है, वही ईश्वर के लिए किया जाता है' इन शब्दों से ईसा ने स्पष्ट कर दिया कि 'भाईचारे के व्यवहार' में ही 'खुदा की इबादत' पूरी होती है।

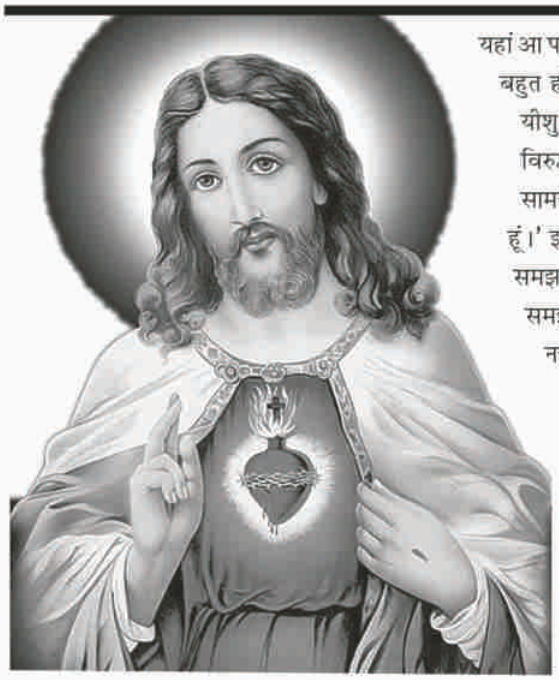

- श्रीश्री रविशंकर

क्रिसमस के दिन यीशु का जन्म हुआ था। यीशु का अर्थ प्रेम है। यदि आप प्रेम की बात करते हैं तो आपको यीशु कहने की आवश्यकता नहीं है और यदि आप यीशु कहते हैं तो आपको प्रेम कहने की आवश्यकता नहीं है। यीशु ने एक बार कहा, 'यदि आप ईश्वर को मेरे नाम से पुकारते हैं तो जो भी आपको चाहिए, वह मिलेगा। ईश्वर के लिए ही प्रेम है।' इस प्रकार प्रेम की पूर्ण अभिव्यक्ति आपको यीशु में ही मिलेगी। प्रेम ही जीवन की एकमात्र खोज है और सबसे बड़ा रहस्य भी। हम प्रेम को अनेक तरह से व्यक्त करते हैं। लेकिन यह फिर भी रहस्य ही है। प्रेम की पूर्ण अभिव्यक्ति बहुत ही कम हो पाती है।

प्रेम आपको कमजोर करता है, लेकिन यह स्वर्ग का साम्राज्य प्रदान करता है। आप कितने भी शक्तिशाली क्यों ना हों, आप प्रेम में सबसे कमजोर होते हैं। चूंकि प्रेम आपको कमजोर करता है, यह भय उत्पन्न करने वाला भी है। हजारों में से कुछ ही यीशु का अनुकरण कर पाते हैं। अनेक लोग सुनते हैं, बहुत ही कम यहां आ पाते हैं। अनेक चमत्कारों के बाद भी बहुत ही कम लोग उन्हें पहचान पाते हैं यीशु ने कहा, 'मैं इंसान को इंसान के विरुद्ध रखने आया हूं। पिता को पुत्र के सामने, पुत्री को माता के विरुद्ध रखता हूं।' इस बात का अर्थ बहुत कम लोग समझ पाते हैं। जिसे हम अपना मित्र समझते हैं, वह वास्तव में आपका मित्र नहीं है, वह भौतिक वस्तुओं में आपका विश्वास दृढ़ करता है और आत्मा से आपका विश्वास कम करता है। 'मैं एक-दूसरे के विरुद्ध एक-दूसरे को करने आया हूं, मैं यहां आग लगाने आया हूं। आपको शांति देने नहीं आया।' यीशु ने ऐसा इसलिए कहा, क्योंकि वे नींद की गहराई जानते थे। जब आप कोई प्रिय बात करते हैं, शांति की बात करते हैं, हर कोई नींद में चला जाता है और जब आप कोई उत्तेजक बात करते हैं तो लोग जग जाते हैं और सुनते हैं। इसी तरह से मनुष्य का मन चलता है। और इसी तरह यीशु ने मन को पार करके आत्मा तक जाने का काम किया, जीवन के स्रोत तक जाने का काम किया। आप अपनी सीमाओं को तोड़ें और अपने भीतर की दिव्यता को पहचानें। आप मनुष्य से बहुत ज्यादा हैं, आप दिव्यता का अंश हैं। आप को विरासत में राज मिला है और वह साम्राज्य यहीं है, आपके भीतर।

प्रेम का कोई नाम नहीं है, कोई आकार नहीं है। प्रेम सूक्ष्म है, लेकिन फिर भी सुदृढ़ है। इस का खुद का कोई नाम या स्वरूप नहीं है, लेकिन हर नाम और स्वरूप में प्रकट होता है। यह रचना का रहस्य है। आप पूरी सृष्टि में प्रेम देख सकते हैं, बस देखने वाली आंखें चाहिए। जरा देखो, किस प्रकार एक पक्षी अपने घोंसले में अपने बच्चों को पालता है। और वह बच्चा किस प्रकार अपनी मां की प्रतीक्षा करता है। पक्षी आता है और अपने बच्चों को खिलाता है। इस में प्रेम है। इसी तरह मछली में प्रेम है। आकाश में प्रेम है। पानी के भीतर प्रेम है। भूमि पर प्रेम है और बाहरी अंतरिक्ष में प्रेम हे।

हर आकार प्रेम से पूर्ण है और हर नाम प्रेम को व्यक्त करता है। और इसी प्रकार यीशु परमपिता के साथ एकाकार हैं। परमपिता सृष्टि के साथ एकाकार हैं। भारत में सृष्टि, और रचयिता को नृत्य और नर्तक के रूप में बताया गया है। आप नर्तक के बिना नृत्य को नहीं पा सकते। नर्तक की हर गति एक नृत्य है। रचयिता रचना के हर हिस्से में है। इसे सर्वविद्यमान और सर्वत्र उपलब्ध कहते हैं। यदि ईश्वर सर्वत्र विद्यमान है तो वह हर स्थान पर उपस्थित है। है कि नहीं? रचयिता यदि सृष्टि से अलग है तो वह रचना में उपलब्ध नहीं है। तो वह सर्वत्र विद्यमान भी नहीं है। ईश्वर की सारी परिभाषा ही बदल जाती है। प्रेम हर स्थान पर है, लेकिन कहीं-कहीं पर यह पूर्ण प्रकट होता है। और स्वयं का ज्ञान आपको पूर्ण प्रकटता की ओर ले जाता है, प्रेम की पूर्ण अभिव्यक्ति की ओर, प्रेम के खिलने की ओर।

यीशु ने कहा, 'एक-दूसरे को इतना ही प्रेम करो, जितना मैं तुमसे करता हूं।' आपको प्रेम को शाश्वत स्वरूप में देखने के लिए और क्या चाहिए? जान लें कि आप प्रेम से निर्मित हैं। आप क्रिसमस का एक पेड़ हैं, जिसकी हर शाखा ऊपर की ओर जाती है। जब अन्य पेड़ सूख जाते हैं तो भी यह हरा-भरा ही रहता है और अनेक उपहार देता है। आप भी उपहार और प्रकाश रखते हैं, आपके स्वयं के लिए नहीं, दूसरों के लिए। यह याद रखें कि आपके जीवन में जो भी आप रखते हैं, वह दूसरों के लिए ही है। जो भी आपके पास आए, उसे उपहार दें।

दीपावली एवं नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

ADINATH OLI INDUSTRIES, BHINDER

JAI MEWAR BRAND MUSTARD OIL

ADINATH OIL INDUSTRIES

Mfrs. of Mustard and Groundnut Oil & Oil Cakes

Sunder Lal Jain

Neeraj Kumar Jain

Near Railway Station, Bhinder - 313603, Distt - Udaipur (Raj)

Ph. : 02957-220235 (Fact.) 220215 (O), 220352-53 (R)

टूर गाइड बेहतर करियर

ऐसे बहुत से लोग हैं, जिन्हें नई जगहों पर जाना, नए लोगों से मिलना व उनसे बातचीत करना बेहद पसंद होता है। घूमने से उनका तन - मन तरोताजा हो जाता है। अगर आपको भी सैर करना भाता है तो आप बतौर टूर गाइडिंग अपना भविष्य बना सकते हैं। टूर गाइड बनकर आप न सिर्फ अपनी घुमक्कड़ी के शौक को पूरा कर सकते हैं, बल्कि इसके जरिए अच्छी कमाई भी की जा सकती है। टूर गाइडिंग के क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं। वैसे भी आज के दौर में पर्यटन किसी भी देश की अर्थव्यवस्था का एक अहम हिस्सा है।

कुछ कौशल भी हैं जरूरी

एक टूर गाइड को अपने काम के दौरान बहुत अधिक घूमना फिरना पड़ता है, इसलिए उसका शारीरिक व मानसिक रूप से सक्षम होना बेहद आवश्यक है। इतना ही नहीं, टूर गाइडिंग के काम में नई जगहों, लोगों व क्लाइंट्स से साथ घूमना होता है, इसलिए आपकी कम्युनिकेशन स्किल बेहतर होनी चाहिए। साथ ही विपरीत परिस्थितियों को अच्छी तरह से हैंडल करना आना चाहिए। इसके अतिरिक्त जिस जगह ट्यूर जा रहा है, पहले से ही उस जगह की पर्याप्त जानकारी आवश्यक है, तभी आप अपने क्लाइंट को अच्छी तरह संतुष्ट कर पाएंगे। अगर आप कॅरियर में नई ऊंचाइयों को छूना चाहते हैं तो बेहतर होगा कि कुछ क्षेत्रीय, राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय भाषाओं का ज्ञान हासिल करें। ऐसे में आप सिर्फ देश में ही नहीं, बल्कि विदेशों में टूर गाइड बनकर अपने काम को अंजाम दे पाएंगे। नई जगहों के बारे में जानने व अपने ज्ञान का दायरा बढ़ाने के लिए आपको इंटरनेट पर रिसर्च वर्क व किताबें पढ़ने की आदत डालनी होगी।

कोर्स की अवधि

टूर गाइडिंग कोर्स की अवधि करीबन दो वर्ष होती है। कोर्स पूरा होने के पश्चात् सर्टिफिकेट व लाइसेंस प्रदान किया जाता है। यह पर्यटक गाइड लाइसेंस राज्य व केन्द्र सरकार के पर्यटन विभाग द्वारा दोनों स्तर पर जारी किए जाते हैं। वर्तमान में ऐसे बहुत से राज्य हैं जहां टूर गाइडिंग के लिए पंजीकरण अनिवार्य है। वैसे आप चाहें तो विभिन्न यूनिवर्सिटी व प्राइवेट संस्थानों द्वारा भी बारहवीं के पश्चात् टूर एण्ड ट्रेवल में स्नातक, डिप्लोमा व शॉर्ट टर्म कोर्स करके भी इस क्षेत्र में कदम रख सकते हैं। पर्यटन क्षेत्र देश की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है, इसलिए सरकार द्वारा भी इस क्षेत्र को काफी प्रोत्साहन दिया जाता है। यही कारण है कि इस में काम की कोई कमी नहीं है।

दरअसल, केन्द्रीय व राज्य सरकारों का पर्यटन विभाग आवश्यकता के अनुसार टूर गाइड को काम देता है। आप भी चाहें तो भारत पर्यटन विकास निगम व राज्य पर्यटन विकास निगम द्वारा स्वीकृत नौकरियों के लिए अप्लाई कर सकते हैं। प्राइवेट सेक्टर में भी नौकरियों की ढेरों संभावनाएं मौजूद हैं। टूर ऑपरेटर्स, ट्रैवल एजेंसी, होटल या ट्रांसपोर्ट इंडस्ट्री, एयरलाइंस या क्रूज लाइनों के साथ काम कर सकते हैं। वैसे टूर गाइड के लिए ऑनलाइन दुनिया में भी नौकरी की कोई कमी नहीं है। विभिन्न टूरिंग वेबसाइट भी लोगों की सुविधा के लिए उन्हें टूर गाइड सेवाएं प्रदान करती हैं। अगर आप किसी कंपनी में नौकरी नहीं करना चाहते तो बतौर फ्रीलांसर भी विभिन्न कंपनियों में अपनी सेवाएं दे सकते हैं। कुछ सालों के अनुभव के पश्चात् खुद की ट्रेवल एजेंसी भी एक खोल सकते हैं।

आमदनी

इस क्षेत्र में आपकी सैलरी आपके ज्ञान, मेहनत व स्किल्स पर निर्भर करती है। अगर आप किसी कंपनी में नौकरी करते हैं तो आपको शुरुआती दौर में दस से बीस हजार रुपए प्रतिमाह आसानी से मिल जाते हैं। वहीं फ्रीलांसर के तौर पर आपकी आमदनी आपको मिलने वाले काम पर निर्भर करेगी। वैसे एक फ्रीलांसर आमतौर पर एक दिन का हजार रुपए या उससे भी अधिक कमा सकता है। छुट्टियों के दिनों में या पीक सीजन में आपकी आमदनी चालीस से पचास हजार रुपए प्रतिमाह भी हो सकती है।

– फिरोज अहमद शेख़

योग्यता

भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय द्वारा टूर गाइड के लिए ट्रेनिंग कोर्स कंडक्ट किया जाता है। इस कोर्स में दाखिला लेने के लिए आपका किसी भी स्ट्रीम से ग्रेजुएट होना आवश्यक है। आप चाहें तो टूरिज्म या हॉस्पिटैलिटी के क्षेत्र में भी तीन साल का कोर्स करने के बाद इस कोर्स में दाखिला ले सकते हैं। दाखिले के लिए पहले एक टेस्ट लिया जाता है जिसमें कम से कम पचास प्रतिशत स्कोर करना आवश्यक होता है।

TATA MOTORS

TATA

भरोसा हर कदम

PRESENTING THE NEW
TATA XENON YODHA BS IV.

आपके व्यवसाय का विश्वसनीय साथी

C.K. MOTORS

City Station Road, Udaipur

XENON YODHA

UDAIPUR	CHITTORGARH	DUNGARPUR	BANSWARA
9828070987, 9828613801	9828070987, 9928357979	9828070987, 9929090450	9828070987, 9413306682

सर्दी में बालों की खास देखभाल

सर्दी में बालों के झड़ने के पीछे केवल शुष्क हवा ही नहीं, घर को गरम रखने के लिए चलाए जाने वाले हीटर या ब्लोअर भी ज़िम्मेदार हैं। घर के अन्दर की गरमी भी बालों को सूखा बनाती है। ऐसी स्थिति में नाना प्रकार की समस्याओं से रूबरू होना पड़ता है। सर्दी के मौसम में बालों की खास देखभाल जरूरी है।

– रेणु शर्मा

बाकी ऋतुओं के मुकाबले सर्दी में सभी को अपने शरीर की अधिक देखभाल करनी पड़ती है। कभी क्रीम लगा कर शरीर की नमी बनाए रखते हैं, तो कभी तेल से खुद की त्वचा को रूखी होने से बचाते हैं। सर्दी में केवल हाथ, पैर या मुंह की त्वचा रूखी नहीं होती, बल्कि हमारे बाल झड़ने के पीछे भी शुष्कता एक प्रमुख कारण है। दरअसल, सर्दी के मौसम में शुष्क हवा चलती है। इससे हमारी खोपड़ी की नमी खत्म हो जाती है, जिससे बालों में सूखापन बढ़ जाता है। इस तरह सर्दी में बाल अधिक टूटने लगते हैं। सर्दी में बालों के झड़ने के पीछे केवल शुष्क हवा नहीं, घर को गरम रखने के लिए चलाए जाने वाले हीटर या ब्लोअर भी ज़िम्मेदार हैं। घर के अंदर की गरमी भी बालों को सूखा करती है और बाल टूटने लगते हैं। खोपड़ी की नमी खत्म होने से रूसी यानी डैंड्रफ पैदा होता और सिर में खुजली बढ़ती है। डैंड्रफ भी बालों के झड़ने का एक कारण है। सर्दी का मौसम आते ही महिलाओं में बालों को लेकर अनेक तरह की समस्याएं सामने आने लगती हैं।

बालों को ढक कर रखें

बालों को ढक कर रखने से नमी बनी रहती है। नमी की वजह से बालों में निर्जलीकरण नहीं होता है। बालों को ढकने के लिए आजकल बाजार में विशेष प्रकार के मास्क उपलब्ध हैं। अगर आप मास्क नहीं लेना चाहती, तो किसी तरह के कपड़े से बालों को ढक सकती हैं। जब भी आप घर से बाहर निकलें तो बालों को ढक कर रखें।

खानपान

बालों का झड़ना खानपान पर भी निर्भर करता है। दरअसल, अगर बचपन से हम संतुलित भोजन नहीं लेते हैं, सभी पोषक तत्व हमारे शरीर को नहीं मिलते हैं तो बाल स्वत: झड़ने और टूटने लगते हैं। इसलिए जरूरी है कि मौसम चाहे कोई हो सभी खानपान में पोषक तत्वों पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

तेल की मालिश

बदलती जीवनशैली में हमें बालों में तेल लगाने का भी समय ही नहीं मिलता। एक समय था जब हमारे बुजुर्ग बालों में तेल लगाने की हिदायत देते थे। पर आज हमने बालों में तेल लगाना बंद कर दिया है। सर्दी के मौसम में पर्यावरण में शुष्कता बढ़ने के कारण बाल अधिक झड़ते हैं, इसलिए बालों में नमी बनाए रखना जरूरी है। हफ्ते में कम से कम एक बार तेल की मालिश जरूर करें। इससे बाल झड़ेंगे भी नहीं और घने भी होंगे।

सावधानियां

गरम पानी

गरम पानी बालों के लिए नुकसानदेह है। इसलिए सर्दी में गरम के बजाय हल्के, गुनगुने पानी से बाल धोएं।

तौलिया

महिलाओं में अक्सर नहाने के बाद तौलिए से बाल झाड़ने की आदत होती है। दरअसल तौलिए से झाड़ने पर बाल अधिक टूटते हैं और उनकी जड़ें फटने लगती हैं। इससे बालों का लंबा होना रुक जाता है। इसलिए मौसम चाहे कोई भी हो, बालों को तौलिए से न झाड़ें।

इसके अलावा

- बाल सुखाने के लिए हेअर ड्रायर का प्रयोग न करें। यह बालों को नुकसान पहुंचाता है।
- अच्छी गुणवत्ता के शैंपू व कंडीशनर का प्रयोग करें।
- सप्ताह में दो बार से अधिक बाल न धोएं।

सही विटामिन का उपयोग

अगर पालन-पोषण बचपन से ही ठीक हो तो बड़े होने पर शरीर हृष्टपुष्ट बना रहता है। इसी तरह बचपन से ही सही विटामिन लेने पर बाल भी सेहतमंद बने रहेंगे। इसलिए जरूरी है कि हमेशा सही विटामिन लिए जाएं।

शैंपू और तेल बदलें

हमारे बालों के रूखेपन, झड़ने और पतलेपन के पीछे हमारे शैंपू और तेल भी जिम्मेदार हैं। अगर आप कई साल से एक ही तेल या शैंपू इस्तेमाल करते आ रहे हैं और आपके बाल टूटने बंद नहीं हो रहे हैं तो इस बार अपना शैंपू या तेल बदल कर देख लीजिए। हो सकता है कि बाल झड़ने बंद हो जाएं।

इन पर भी दें ध्यान

- दोमुंहे बालों से छुटकारा पाने के लिए उन्हें समय-समय पर ट्रिम करते रहें। घर में ट्रिम करने के लिए बालों को मोड़कर बाहर की ओर निकले दो मुंहे बालों को कैंची की मदद से काट दें। इससे दोमुंहे बाल तो कम होते ही हैं, रोग से भी बचे रहेंगे।
- बाहर जाने की जल्दी में कई बार गीले बालों को कंघी करना मजबूरी होती है। गीले बालों को जड़ों से कंघी करने के बजाय नीचे से थोड़ी-थोड़ी कंघी करते हुए ऊपर जाएं।
- बालों को खुला रखने पर उलझना स्वाभाविक है। खुला रख ही रही हैं तो स्कार्फ की मदद से बालों को ढक लें या गाड़ी पर जा रही हैं तो क्लच कर लें। बाल उलझेंगे नहीं।
- बालों में थोड़ा सा शैम्पू ही काफी होता है। शैम्पू के बाद बालों को धोते वक़्त उंगलियों को जड़ों में अच्छे से फेरती जाएं ताकि शैम्पू पूरी तरह निकल जाए।
- बालों को घुंघराले करने के लिए मशीन(इलेक्ट्रिक कर्लर) का प्रयोग करने की बजाए लकड़ी के कर्लर का प्रयोग करें इनसे बालों को नुकसान नहीं पहुंचता।
- बाउंसी बालों के लिए हेयर ड्रायर का इस्तेमाल करने के बजाए पानी में सेब का सिरका डालकर बाल धोएं। बाल घने और बाउंसी लगेंगे।
- बालों को घर में कंडीशनर करने के लिए एक अंडे में दही को मिलाकर 10 मिनट तक लगाकर धो दें। बाल मुलायम व चमकदार बनेंगे।

मज़बूत बालों के लिए बादाम के तेल का इस्तेमाल करें। एक कटोरी में थोड़ा सा बादाम का तेल लेकर करीब 40 सेकंड तक गुनगुना करें हल्का गुनगुना रहने पर ही बालों की जड़ों में मालिश करें। तीस मिनट बाद बालों को धो लें।

Anil Bajaj
Mob No:- 9414169173

JMB
SINCE 1964

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

JAGDISH MISTHAN BHANDAR
16, Sarang Marg. Suraj Pole, Udaipur
Customer Care NO 0294-2414972

JAYESH MISTHAN BHANDAR
123, Parmatma plaza, Chetak Circle , Udaipur
Customer Care No 0294-2429323, Mobile No. 9829465585

JAI MISTHAN BHANDAR
Hiranmagri Sector 3, Opposite Nehru Hostel, Udaipur
Customer Care NO 0294-2467777

सर्दी में गैस और एसिडिटी आखिर वजह क्या है?

सर्दी के दिनों में ठंड लगने, अल्लम-गल्लम खाने से भोजन न पचे तो हर 10 सेकंड के बाद पेट में गैस बनती है। जिससे पेट में मरोड़ उठती है और कई बार दर्द इतना असहनीय हो जाता है कि बार-बार बाथरूम जाना पड़ता है। कई लोगों के लिए यह रोज की समस्या हो जाती है।

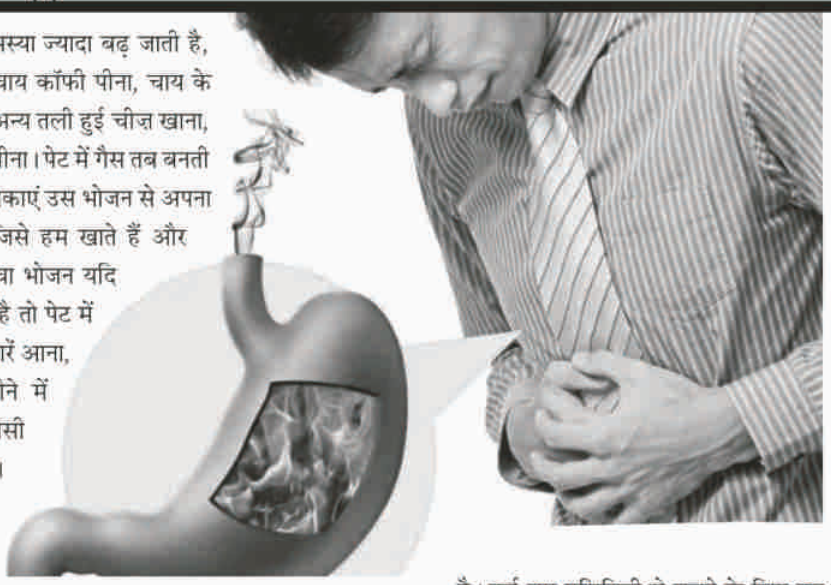

सर्दी के दिनों में गैस की समस्या ज्यादा बढ़ जाती है, जिसकी वजह है बार-बार चाय कॉफी पीना, चाय के साथ गर्मागर्म पकौड़े अथवा अन्य तली हुई चीज़ खाना, टमाटर सूप में बटर डालकर पीना। पेट में गैस तब बनती है, जब हमारे शरीर की कोशिकाएं उस भोजन से अपना तालमेल नहीं बिठा पातीं, जिसे हम खाते हैं और अपच हो जाती है। बिना पचा भोजन यदि लंबे समय तक पेट में रहता है तो पेट में दर्द, गैस निकलना, खटी डकारें आना, एसिडिटी, उल्टी आना, सीने में जलन, पेट में मरोड़ जैसी शिकायत होने लगती है। अपच की समस्या, अल्सर, कब्ज, पेट में इंफेक्शन या किसी दूसरी वजह से भी हो सकती है, जो लोग बीमारी के कारण नियमित दवाओं का सेवन करते हैं, पेनकिलर, एंटीबॉयटिक्स या गर्भनिरोधक गोलियां लेने के कारण भी ऐसा होता है। इन तमाम वजहों के अलावा लाइफस्टाइल से जुड़ी आदतों के कारण एसिडिटी या अपच होती है।

खाना जल्दी-जल्दी खाना, ज्यादा खाना, ज्यादा वसायुक्त भोजन या तनाव के कारण बार-बार खाने, ज्यादा सिगरेट शराब पीना, थकान या ज्यादा तनाव में रहने वालों को दूसरों की तुलना में अपच की समस्या ज्यादा होती है। खान-पान की आदतों में बदलाव करके हम इस समस्या से राहत पा सकते हैं।

पानी : सर्दी हो या गर्मी पर्याप्त मात्रा में पानी पीना चाहिए क्योंकि पानी ही हमारी पाचन क्रिया को दुरुस्त रखता है। यह हमें कब्ज से बचाता है और भोजन को वेस्ट में बदलता है। पानी कम पीकर ही हम इस समस्या को और ज्यादा बढ़ने का मौका देते हैं। भोजन के साथ या तुरन्त बाद कभी पानी न पीयें। भोजन से 10 मिनट पहले और आधे घंटे बाद पानी पीना चाहिए।

ड्रिंक्स : कैफीनयुक्त ड्रिंक्स जैसे कोल्ड ड्रिंक, चाय, कॉफी यह सभी हमारी पाचनक्रिया पर बुरा असर डालते हैं और इनकी वजह से अपच की समस्या में इजाफा होता है। कई बार एसिडिटी से बचने के लिए हम इन पेय पदार्थों को लेते हैं लेकिन इससे अपच की समस्या और बढ़ जाती है। कैफीनयुक्त इन ड्रिंक्स को लेने की बजाय हर्बल टी, दूध या सादा पानी अपच की समस्या से काफी हद तक राहत दिलाता है।

रेशेदार भोज्य पदार्थ : रेशेदार भोज्य पदार्थ हमारी पाचनक्रिया को दुरुस्त करते हैं। मैदे की बजाय गेहूं की ब्रेड, ब्राउन राइस, ज्वार, बाजरा, मक्की, जौ, बींस, फल और सब्जियों को अपने नियमित आहार में शामिल करें।

प्रो-बायोटिक्स : प्रो-बायोटिक्स ऐसे प्राकृतिक बैक्टीरिया है जो हमारे शरीर में मौजूद होते हैं। उनका लाभ उठाने के लिए ही आजकल बाजार में प्रो-बायोटिक्स दूध, ड्रिंक्स, दही और आइस्क्रीम मिलती है, जिनके सेवन से भी अपच की समस्या को दूर किया जा सकता है।

- डॉ. ओम प्रकाश महात्मा

1.80 लाख करोड़ डूबे कर्ज की होगी वसूली

नई दिल्ली। सरकार को वित्त वर्ष 2018-19 में 1.80 लाख करोड़ रुपये के डूबे हुए कर्ज(एनपीए) की वसूली की उम्मीद है। यह नए ऋणशोधन अक्षमता और दिवालिया कोड(आईबीसी) के आने से संभव हुआ है। एस्सार स्टील और भूषण पावर एण्ड स्टील जैसे मामलों से करीब 70 हजार करोड़ रुपये की वसूली की उम्मीद है। इससे वित्त वर्ष में आईबीसी और अन्य तरीकों से 1.80 लाख करोड़ रुपये से अधिक के डूबे कर्ज वसूली हो सकगी।

- बैंकों ने पहली तिमाही में 36.551 करोड़ रुपये की वसूली की है
- 2017-18 में बैंकों ने 74.562 करोड़ रुपये की वसूली की थी

दीपावली एवं नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

Deepak Bordia

Chartered Engineer. M.I.E., F.I.V.
Approved Valuer

BORDIA & ASSOCIATES

ARCHITECTURAL DESIGNER, PLANNER & BUILDER EXECUTE
ALL KIND OF CIVIL ENGINEERING WORKS

211, Shubham Complex, 11-A New Fatehpura, Near Sukhadia Circle
Uaipur -313 004 (Raj.), Ph.: 2419465 (O) 2524202 (R)
e-mail : deepakbordia@hotmail.com I bordiaandassociates@gmail.com

इंसानों से संपर्क को बेताब एलियन

ऐसा लगता है कि एलियन हमसे संपर्क करने को बेताब हैं या फिर वे हम पर नजर रख रहे हैं। अंतरिक्ष से मिल रहे रहस्यमयी संकेत इस बात की ओर इशारा कर रहे हैं। अगस्त महीने में भारतीय वैज्ञानिक डॉक्टर विशाल गज्जर ने एलियन की मौजूदगी का दावा किया था। उन्हें आकाशगंगा में कुल 15 फास्ट रेडियो बर्स्ट(एफआरबी) का पता चला था। अब ऑस्ट्रेलिया की स्वाइनबर्न यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी के वैज्ञानिकों को रिकॉर्ड संख्या शक्तिशाली संदेशों का पता चला है।

पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के सिसरो रेडियो टेलिस्कोप ने 19 एफआरबी का पता लगाया है, जो अब तक मिले एफआरबी से दोगुने हैं। इन 19 संकेतों में कुछ तो बेहद चमकदार और करीबी हैं। एफआरबी ऐसे छद्म संकेत होते हैं, जो कुछ मिलीसेकंड तक ही रहते हैं। माना जाता है कि यह संकेत करोड़ों प्रकाश वर्ष दूर से आते हैं। हालांकि वैज्ञानिक अब तक इसके पीछे के कारणों का पता नहीं लगा पाए हैं।

ये संकेत बहुत ज्यादा मात्रा में ऊर्जा भी पैदा करते हैं। यह इतनी ऊर्जा होती है, जितनी 80 साल तक सूरज के लगातार चमकने से पैदा होती है। अध्ययन के प्रमुख लेखक रयान शैनन का कहना है, 'हमने एक साल के भीतर 20 फास्ट रेडिया बर्स्ट' का पता लगाया है। यह संख्या 2007 से अब तक मिले संकेतों से दोगुनी है।' वैज्ञानिकों का यह भी कहना है कि इससे यह बात भी साबित होती है कि एफआरबी ब्रह्मांड के दूसरे छोर से आ रहे हैं क्योंकि ये करोड़ों प्रकाश वर्ष की यात्रा करते हैं और अक्सर गैस के कई बादलों को पार करते हैं। एक बर्स्ट अपनी यात्रा के दौरान कितनी सामग्री रखता है, इसे जानने के लिए वैज्ञानिकों ने अलग-अलग तरंगों का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि अलग-अलग तरंगों से बनने वाले बर्स्ट की गति अलग-अलग रही।

कहां से आ रहे संकेत

वैज्ञानिकों को यह तो पता चल गया है कि ये रहस्यमयी संकेत आधे ब्रह्मांड का रास्ता तय करके आ रहे हैं, लेकिन उन्हें यह पता नहीं चल पा रहा है कि आखिर ये आ कहां से रहे हैं ? पहले माना गया था कि यह बर्स्ट न्यूट्रॉन तारे से आ रहा है। जबकि कुछ शोधकर्ताओं का मानना है कि ये संकेत एलियन के हैं, जो इंसानों से संपर्क करना चाहते हैं।

15 एफआरबी का पता चला

हाल ही में एक भारतीय वैज्ञानिक ने 15 एफआरबी(फास्ट रेडियो बर्स्ट) का पता लगाया है। पांच घंटे की निगरानी के बाद ये एफआरबी एक छोटी आकाशगंगा में दिखाई दिए हैं। जिस छोटी आकाशगंगा में इन एफआरबी का पता लगाया गया है, वह पृथ्वी से तीन मिलियन प्रकाश वर्ष दूर हैं। यह खोज ब्रेकथ्रू लिसन के शोधकर्ता और भारतीय वैज्ञानिक विशाल गज्जर ने की है।

वैज्ञानिकों को मिली थी सफलता

इसी साल अगस्त में बैकथ्रू लिसन प्रोजेक्ट पर शानदार कार्य करते हुए भारतीय वैज्ञानिक डॉक्टर विशाल गज्जर की मेहनत काम आई। उन्होंने 15 फास्ट रेडियो बर्स्ट(एफआरबी) का पता लगाया था। यह 15 एफआरबी छोटी आकाशगंगा में डिटेक्ट किए गए, जो कि धरती से करीब 30 प्रकाश वर्ष दूर थे।

दैनिक हिन्दुस्तान से साभार

PIMS पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, उमरड़ा
मल्टी सुपरस्पेशियलिटी सुविधाएँ
डॉ. सुदीप चौधरी
डॉ. संदीप कुमार गोलछा
डॉ. सुभाब्राता दास
सर्जिकल ऑंकोलोजिस्ट
डॉ. अनुराग पटेरिया
न्यूरो सर्जन
डॉ. प्रवीण झंवर
डॉ. विकास गुप्ता
डॉ. एम.पी. अग्रवाल
डॉ. बकुल गुप्ता
कार्डियक सर्जरी
कार्डियोलॉजी
कैंसर सर्जरी
न्यूरो सर्जरी
यूरोलोजी
किडनी रोग
प्लास्टिक सर्जरी
नवजात शिशु के ऑपरेशन
24/7 EMERGENCY SERVICE
आपातकालीन सुविधाएँ उपलब्ध
एम्बुलेंस सेवा
भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना
लाभार्थियों को अन्तरंग ईलाज हेतु कैशलेस सुविधा
प्रत्येक परिवार को प्रतिवर्ष चिन्हित सामान्य बीमारियों हेतु रु. 30 हजार
और चिन्हित गंभीर बीमारियों हेतु 3 लाख तक का स्वास्थ्य बीमा कवर
भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना के अंतर्गत 3 लाख तक का निःशुल्क उपचार
कैशलेस सुविधा
तुरन्त भर्ती एवं जाँच
तुरन्त उपचार
निःशुल्क दवाईयाँ
ICU • ICCU • PICU • NICU • SICU • BURN ICU
SAI TIRUPATI UNIVERSITY UDAIPUR
साई तिरूपति यूनिवर्सिटी, उदयपुर
CONSTITUENT COLLEGES
पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज
MBBS
वेन्केटेश्वर कॉलेज ऑफ नर्सिंग
B.Sc. | M.Sc.
वेन्केटेश्वर स्कूल ऑफ नर्सिंग
GNM
वेन्केटेश्वर इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी
D. Pharma
वेन्केटेश्वर कॉलेज ऑफ फिजियोथेरेपी
B. PT.
GLOBAL MASS COMMUNICATION
अम्बुआ रोड़, उमरड़ा, उदयपुर
0294-3010000
www.pacificmedicalsciences.ac.in

'दीपवीर' ने लिए फेरे

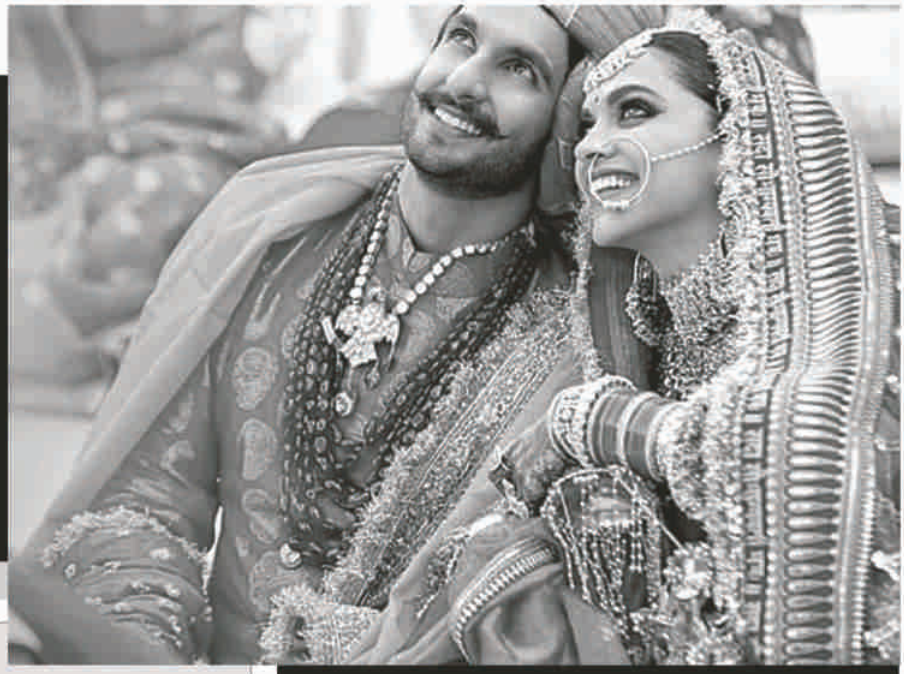

बॉलीवुड की खूबसूरत जोड़ी दीपिका पादुकोण और रणवीर सिंह 14 नवंबर को इटली के लेक कोमो में कोंकणी रीति-रिवाज से 7 फेरे लेकर शादी के बंधन में बंध गए। दीपवीर के वेडिंग वेन्यू तक मेहमानों को याट से पहुंचाया गया। वेन्यू को दीपिका के पसंदीदा फुल वाटर लिली से सजाया है। बाद में 15 नवंबर को रणवीर-दीपिका ने सिंधी रीति-रिवाज से शादी की। सिंधी रीति रिवाज से शादी इसलिए की क्योंकि रणवीर सिंह सिंधी हैं। दीपवीर की शादी में आने वाले मेहमानों का स्वागत खास अंदाज में किया गया। प्रत्येक व्यक्ति का स्वागत हाथ से लिखे एक कार्ड के द्वारा किया गया। सभी मेहमानों को स्वागत का यह अंदाज पसंद आया है। कोंकणी रीति रिवाज के अनुसार शादी में दीपिका ने साड़ी और सोने के गहने पहने।

सिंधी रीति-रिवाज से होने वाली शादी में दीपिका ने गुलाबी और पर्पल रंग का लहंगा पहना। दरअसल दीपिका और रणवीर एक चैरिटी क्लब को सपोर्ट करते हैं। उसका नाम है 'द लिव लव लाफ फाउंडेशन'। यह एनजीओ मानसिक स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता फैलता है। उन्होंने मेहमानों से कहा कि वे उन्हें गिफ्ट्स ना दें। अगर वे कुछ देना ही चाहते हैं तो फाउंडेशन को डोनेशन कर दें। दीपिका और रणवीर सिंह की जोड़ी ने 'रामलीला', 'बाजीराव मस्तानी' और 'पद्मावत' में अपने अभिनय से दर्शकों को काफी प्रभावित किया है। 'दीपवीर' की जोड़ी ने बेंगलुरू में 21 और मुम्बई में 28 नवम्बर को रिसेप्शन का भव्य आयोजन किया।

प्रियंका और निक ने लिया शादी का लाइसेंस

बॉलीवुड अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा और अमेरिकी गायक निक जोनस को अमेरिका में शादी का लाइसेंस मिल गया है। दोनों इस साल दिसम्बर में शादी के बंधन में बंधने जा रहे हैं। इस साल अगस्त में दोनों की सगाई हुई थी। दोनों अमेरिका के ब्रेवरी हिल्स कोर्ट हाउस में लाइसेंस के लिए जरूरी दस्तावेजों की प्रक्रिया पूरी की। शादी के बाद लाइसेंस को वह अमेरिका में पेश करेंगे। इसके बाद दोनों देशों में उनकी शादी को वैध माना जाएगा। प्रियंका और निक इस साल दिसम्बर में राजस्थान के मेहरानगढ़ किले में शादी के बंधन में बंधेंगे। पहले माना जा रहा था कि वे इटली में शादी करेंगे, लेकिन बाद में प्रियंका ने अपने ही देश में मेहरानगढ़(जोधपुर)किले को चुना। अमेरिका के सभी नागरिकों को शादी के पहले लाइसेंस हासिल करना जरूरी होता है, उसके बाद ही शादी मान्य होती है।

इसलिए जरूरी : जब कोई अमेरिकी नागरिक अन्य देश के नागरिक से विवाह करता है, तो उसे शादी का लाइसेंस हासिल करना जरूरी है। प्रियंका ने पिछले दिनों मां मधु चोपड़ा के साथ पेरिस में शादी के लिए ज़रूरी शॉपिंग की। प्रियंका जल्दी ही फरहान अख्तर स्टारर फिल्म 'द स्काई इज़ पिंक' में काम करती भी नज़र आएंगी।

Rasiklal M. Dhariwal
PUBLIC SCHOOL
(English Medium Co-Education)

Manikchand®

CHITRAKOOT NAGAR, UDAIPUR (RAJ.) Ph.:-0294-6509446

- Dedicated & Experienced Teachers
- Homely environment with individual attention
- Child centric approach for Pre-primary classes
- Knowledge hub, a student friendly Library
- Value based education with innovative methodology
- A modern airy, naturally well-lighted & eco-friendly school building
- Well equipped computer & science laboratory
- Air conditioned classrooms for Pre-primary sections
- Special attention on Social, Spiritual, Emotional, Physical & Mental growth • Digital classrooms with projector
- Indoor & outdoor sports facility • Conveyance facility available
- Well equipped self-contained hostel facility with air cooled & A.C. rooms • Parents satisfaction is our motto.
- Teacher student ratio 1:30

GENEROUS OFFER

- **For** IX, X class-no tution fee for first 10 new admission.
- **For** Play Group-No tution fee.
- **3rd** brother/sister will be exempted from tution fee.
- **Jain** Society grant scholarship of 50% tution fee to Jain students

For Further Enquiries Contact

Gajendra Bhansali
(Hon. Secretary)
0294-2421077

Principal
0294-6509446

राजेन्द्र सिंह देवड़ा

मोबाइल
9413665250
9001010790

माते श्वरी कंस्ट्रक्शन

भवन निर्माण का कार्य मय मटेरियल सहित किया जाता है।

"वरडा हाऊस"

27, राजेश्वर नन्द कॉलोनी, 100 फीट रोड, मीरा नगर, भुवाणा, उदयपुर

नकारात्मकता से मुक्ति का विज्ञान - वास्तु

वास्तु शास्त्र विज्ञान की वह शाखा है जो मनुष्य व उसके इर्द-गिर्द व्याप्त वातावरण का अध्ययन करती है और उसे मनुष्य की शक्ति व मानसिक स्थिति के अनुकूल बनाने में सहायता करती है। व्यक्ति जीवन का अधिकतर समय घर अथवा अपने कार्यस्थल पर व्यतीत करता है। ऐसी स्थिति में उन स्थलों के बारे में आवश्यक जानकारी उसके लिए जरूरी है, क्योंकि इससे व्यक्ति का कुशलक्षेम जुड़ा है। वास्तु विज्ञान मानव मन को शांति प्रदान करने वाली स्थिति का निर्माण करता है। यह विज्ञान बहुत प्राचीन विद्या है। जिसका उल्लेख प्राचीनतम ऋग्वेद में भी मिलता है। वास्तु पुरूष की प्रार्थना पर ब्रह्माजी, उनके मानस पुत्र विश्वकर्मा व अन्य देवों ने वास्तुशास्त्र संहिता की रचना की थी। इनकी अनदेखी पर व्यक्ति को शारीरिक और मानसिक संताप तथा आर्थिक हो सकती होती है। वास्तु देवता की सन्तुष्टि के लिए अनेक उपाय भी हैं।

पं. विनोद बिहारी याज्ञिक

प्रकाशक
हिमांशु पब्लिकेशन, उदयपुर/नई दिल्ली
मूल्य : 300/-
पृष्ठ संख्या - 138

उदयपुर निवासी वास्तुविद् पं. विनोद बिहारी याज्ञिक के अनुसार चार वेदों से चार उपवेदों ने जन्म लिया तथा पांचवा उपवेद है स्थापत्य वेद। यह स्थापत्य वेद ही समस्त वास्तु ज्ञान का स्रोत है। पं. याज्ञिक की हाल ही में वास्तु विज्ञान को लेकर एक पुस्तक प्रकाशित हुई है 'ए टू जेड ऑफ वास्तु' इसका शीर्षक आंग्ल भाषा में है, किन्तु यह सरल हिन्दी में वास्तु सम्बन्धी सम्पूर्ण जानकारी देने के साथ घर/व्यावसायिक भूखण्ड चयन की प्रक्रिया से लेकर भवन निर्माण तथा भवन में रहने वाले अथवा व्यापार करने वाले की मांगलिक अवस्था से लेकर पीढ़ी-पर्यन्त सुखी एवं सम्पन्न जीवन यापन का मार्गदर्शन करती है।

किसी भी निर्माण अथवा कार्य के पूर्व अथवा दौरान बरती जाने वाली सावधानियों का ब्यौरा पं. याज्ञिक की पुस्तक 'ए टू जेड ऑफ वास्तु' उपलब्ध कराती है। व्यक्ति इसके माध्यम से नकारात्मकता के प्रभाव से दूर रहते हुए सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर रहकर अपना व परिवार का मंगल कर सकता है। यदि घर/व्यावसायिक प्रतिष्ठान/कार्यस्थल/पड़ौस अथवा परिवेश वास्तुदोष से ग्रस्त हैं तो, उसका समाधान भी पुस्तक में दिया गया है। पं. याज्ञिक की इससे पूर्व एक पुस्तक 'एकोहं बहुस्याम्: विप्र वंश विन्यास' प्रकाशित हो चुकी है। इस अच्छी दूसरी कृति के लिए बधाई।

- नन्द किशोर

दरकते मानवीय मूल्यों की चिंता

जगदीश अग्रवाल 'आकाश' की सद्य प्रकाशित पुस्तक 'काल चिंतन' जीवन पथ पर मिले अनुभवों का संग्रह है। जिन्हें इन्होंने 'अनपोस्टेड-लेटर्स' भी कहा है। मुझे तो यह कड़वी-मीठी अनुभूतियों से भरी-पूरी डायरी सी लगा। घर, परिवार और समाज के बदलते माहौल को लेकर कवि का चिंतन ही इसमें प्रमुख है। टूटते परिवार, सम्बन्धों में छलावा, मैत्री में धोखा, तिरोहित होता आपसी प्रेम और सद्भाव, वचन भंग करती राजनीति, पैसों का पहाड़ खड़ा करने की होड़, चरमराती व्यवस्था आदि-आदि, कवि-लेखक जगदीश भाई की पुस्तक में अभिव्यक्त वह पीड़ा है, जो पाठक पर भी सुई की चुभन सा प्रभाव छोड़ती है।

जगदीश आकाश

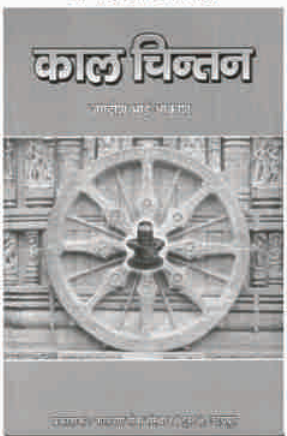

प्रकाशक
नारायण सेवा संस्थान
उदयपुर
मूल्य : 300/-
पृष्ठ संख्या : 148

द्वीप के चारों ओर अजीब सा मौसम बन रहा है। जो द्वीप ही नहीं, नक्षत्र तक परमाणु विखण्डित कर/पूरे सौरमण्डल की गति ही असंतुलित न कर दे। मानस मंथन से द्वीप का विष अलग करना होगा। 'अमृत' केवल पात्रों को देना होगा।

पुस्तक में चिंता और चिंतन को गद्य-पद्य की विधाओं में प्रस्तुत किया गया है। पद्य भी लय, ताल या छन्द से परे है, लेखक को अपने चिंतन की अभिव्यक्ति के लिए जो भी शैली उचित लगी, उसने बिना सीमाओं की परवाह किए कलम चलाई और यही कारण है कि जो कुछ लिखा वह कलात्मक बन पड़ा। अंधेरे का आतंक, दर्द के दस्तावेज, एटमी अटैक, खूनी खेल आदि ऐसी ही रचनाएं हैं।

एक सागर मचलता तो है, मेरे सीने में/एक शहर जलता तो है मेरे सीने में/सीने से टकरा कर कई नदियों ने तोड़ा है, दम। बाजुओं से टकरा कर टूटे हैं, सृष्टि के स्तम्भ।

लेखक हालात को बदलने के लिए बहुत कुछ करना चाहता है, उसने महाभारत और पुराणकाल के कुछ उद्धरण भी दिए हैं। उसने कुछ घटनाओं व प्रसंगों द्वारा अपनी चिंता के साथ आगे क्या करना है, इसका चिंतन का समाज से आग्रह किया है। ***कभी सोचता हूं/खुशियों की खुशबू शब्दों में पिरोकर/दो घड़ी के लिए/किसी भूखे पेट को/व्यंजन की अनुभूति करा दूं/*** कुल मिलाकर तेजी से गिरते मानवीय मूल्यों और दरकते सामाजिक ताने-बाने को बचाने के लिए लेखक, पाठकों का साथ चाहता है।

- विष्णु शर्मा हितैषी

यूसीसीआई एक्सीलेंस अवार्ड्स

31 दिसम्बर तक मांगे आवेदन

उदयपुर। अगले वर्ष 12 फरवरी को उदयपुर चैंबर ऑफ कॉमर्स एण्ड इंडस्ट्री के स्थापना दिवस पर यूसीसीआई एक्सीलेंस अवार्ड सम्मान समर्पण समारोह होगा।

अध्यक्ष हंसराज चौधरी ने यह जानकारी दी। अवार्ड के लिए 31 दिसम्बर तक आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। अवार्ड के लिए यूसीसीआई की अधिकारिक वेबसाइट पर ऑनलाइन आवेदन किया जा सकता है। इन पुरस्कारों के लिए उदयपुर, राजसमंद, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, सिरोही, कोटा, बूंदी, झालावाड़ एवं अजमेर के उद्यमी व उपक्रम भी आवेदन कर सकेंगे। यूसीसीआई एक्सीलेन्स अवार्ड्स सब कमेटी की चेयरपर्सन नन्दिता सिंघल ने बताया कि उद्योग एवं व्यवसाय जगत की ओर से रोजगार मुहैया करवाने, आमजन का आर्थिक स्तर ऊंचा उठाने, समृद्धि लाने के साथ सामाजिक विकास को लेकर किए जा रहे सकारात्मक कार्यों की जानकारी लोगों तक पहुंचाने तथा सामाजिक सौहार्द को बढ़ावा देने के उद्देश्य के साथ यूसीसीआई एक्सीलेंस अवार्ड प्रदान कर रही है।

यूसीसीआई सभागार में अवार्ड समारोह की जानकारी देते अध्यक्ष हंसराज चौधरी एवं कमेटी की चेयरपर्सन नंदिता सिंघल।

2019 तक 75 सेंटर होंगे : डॉ. मुर्डिया

उदयपुर। इंदिरा आईवीएफ ग्रुप के चेयरमैन डॉ. अजय मुर्डिया का बर्थडे उदयपुर मुख्यालय में मनाया गया। डॉ. मुर्डिया ने 66 वर्ष पूर्ण करने पर ऑफिस स्टाफ के सान्निध्य में केक काटा। सेंटर पर डॉक्टरों की टीम, लैब स्टाफ, रिसर्चर, डाटा मैनेजर, कॉलिंग सेंटर के स्टाफ आदि ने उन्हें शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर डॉ. अजय मुर्डिया ने कहा कि टीम वर्क से उनका लक्ष्य वर्ष 2019 तक देश में 75 आईवीएफ सेंटर खोलने का है। गौरतलब है कि इंदिरा आईवीएफ ग्रुप के आज देश में 51 सेंटर हैं। 150 से ज्यादा आईवीएफ विशेषज्ञ और 2000 से अधिक का स्टाफ है। ग्रुप नि:संतानता भारत छोड़ो की जागृति लाने के लिए देश के विभिन्न शहरों में अब तक 1700 से अधिक नि:शुल्क परामर्श शिविर लगा चुका है। सात वर्ष पूर्व शुरू किए गए इनके टेस्ट ट्यूब सेंटर के कार्य को राष्ट्रीय सम्मान से नवाजा जा चुका है।

महिला सुरक्षा एप किया लांच

उदयपुर। शगुन सेवा संस्थान की महिला शाखा शगुन इन्टरनेशनल क्लब की ओर से महिलाओं को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए पिछले दिनों तीन दिवसीय शगुन एक्सपो का आयोजन हुआ। संस्थान प्रमुख सीमा भण्डारी ने बताया कि इस मौके पर महिला सुरक्षा को लेकर एप भी लांच किया गया। अशोका ग्रीन में एक्सपो का आगाज प्रीति अग्रवाल, स्वीटी छाबड़ा, लवीना सिंघटवाड़िया एवं मोनिका मेवाड़ा ने किया।

गीतांजली में दूसरी कैथ लैब

उदयपुर। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल में जर्मन तकनीक से युक्त सीमेन्स की दूसरी कैथ लैब की शुरुआत ग्रुप चेयरमैन जेपी अग्रवाल ने पिछले दिनों की। हॉस्पिटल में अब एक साथ दो नवीनतम एवं अत्याधुनिक कैथ लेब की सुविधा उपलब्ध होगी। कार्डियोलॉजी विभागाध्यक्ष डॉ. कपिल भार्गव ने बताया कि नई कैथ लेब की मशीन से मरीजों को रेडिएशन का खतरा कम होगा। इसी मशीन पर इलाज के दौरान आपात स्थिति में तुरन्त सीटी स्केन की जा सकेगी। न्यूरो वेसक्यूलर इंटरवेंशनल रेडियोलॉजिस्ट डॉ. सीताराम बारहठ ने बताया कि रोगियों के लिए मशीन काफी सुरक्षित है। शुभारंभ के मौके पर ग्रुप कार्यकारी निदेशक अंकित अग्रवाल, डीन डॉ. एफ. एस. मेहता, चिकित्सा अधीक्षक डॉ. नरेन्द्र मोगरा, रजिस्ट्रार भूपेन्द्र मंडालिया मौजूद थे।

उद्घाटन करते गीतांजली ग्रुप के चैयरमेन जे.पी. अग्रवाल, कार्यकारी निदेशक अंकित अग्रवाल एवं अन्य।

राह नहीं आसान, मुकाबला हाईवोल्टेज

प्रत्यूष राजस्थान

3293	2294	614	579	उम्मीदवार	200	195	191	143	16	28	63	58
नामांकन भरे गए थे	प्रत्याशी मैदान में	नामाकंन रद्द	नामाकंन वापस लिए		भाजपा	कांग्रेस	बसपा	आप	सीपीआई	सीपीएम	भारत वाहिनी	रालोपा

- सुनील पंडित

इस बार राजस्थान के चुनाव काफी रोचक और हाईवोल्टेज होते दिख रहे हैं। चुनावी रणभेरी बजने के साथ शुरू हुए समीकरण पल-पल बनते-बिगड़ते दिख रहे हैं। टिकट नहीं मिलने की नाराजगी से उठी बगावत की लौ अब प्रचंड हो गई है। राज्य में भाजपा दोबारा सत्ता-सुख भोगने के सपने देख रही है जबकि कांग्रेस सत्ता में आने को बेताब है। राजनीति का पिछला इतिहास टटोला जाए तो पता चलता है कि यहां 'एकांतरा' की परंपरा हावी है। यानी की एक बार भाजपा और एक बार कांग्रेस। इसी सिद्धांत को ध्यान में रखकर भाजपा की टांग पकड़कर कांग्रेस 'उतर गिंगलिया मारी बारी' का जाप कर रही है। हालांकि कांग्रेस में मुख्यमंत्री को लेकर चल रही खींचतान और मैदान में डटे 23 बागी सत्ता पाने की उम्मीदों पर पानी फेरने पर आमादा है। जबकि भाजपा की बोतल से निकले हनुमान बेनीवाल की 'बोतल' और कद्दावर नेता घनश्याम तिवाड़ी की 'बांसुरी' कांग्रेस के लिए संजीवनी का काम कर रही है। जातीय समीकरण के हिसाब से हनुमान के साथ जाट और तिवाड़ी के साथ ब्राह्मण मतदाता खिसक सकते है। तिवाड़ी की भारत वाहिनी पार्टी से 63 और बेनीवाल की राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी से 58 उम्मीदवार चुनावी रण में ताल ठोक रहे हैं। कांग्रेस का मानना है कि इससे भाजपा को ही नुकसान होगा लेकिन जातीय समीकरण के चश्मे से देखा जाए तो दोनों ही पार्टियां (भारत वाहिनी व राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी) कांग्रेस-भाजपा दोनों के वोट काट सकती हैं। क्योंकि भाजपा-कांग्रेस दोनों से रूठे बागी और बड़े नेता घनश्याम तिवाड़ी और हनुमान बेनीवाल के साथ जुड़ चुके हैं। कईयों को भारत वाहिनी व राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी ने हाथों हाथ पाले में मिलाकर टिकट की सौगात दे दी। हालांकि 7 दिसंबर के मतदान के चार दिन बाद आने वाले परिणाम ही बताएंगे कि राज्य में तीसरा मोर्चा सफल होता है या हर बार की तरह ध्वस्त। पिछली बार डॉ. किरोणी लाल मीणा ने तीसरा मोर्चा खोला था जो अब भाजपा खेमे में शामिल है। सभी 200 सीटों के उम्मीदवारों पर गौर करें तो लगता है कि भाजपा-कांग्रेस ने जीत के लिए 'रथ' को नैतिक, सैद्धांतिक और बने बनाए रास्तों से नीचे उतारने से भी गुरेज नहीं किया है। इससे योग्यता, जनाधार, जमीनी सर्वे और दावे हवा हवाई हो गए हैं। कई सीटों पर उम्मीदवारों को उतारने के लिए अपनी पार्टी (स्लेट) पर लिखे सिद्धांत ही मिटा दिए। जमीनी सर्वे, जनाधार वाले, ईमानदार, अनुशासित पार्टी कार्यकर्ता को टिकट, बाहरी और पैराशूट पर पाबंदी, मोकापरस्त-दलबदलुओं पर बैन आदि नारे और बयान गौण कर दिए। टिकट वितरण से पहले के दावों की धज्जियां उड़ाकर दोनों ही दलों ने शुद्ध राजनीति के अपने वादे पर कालिख पोत दी। दोनों ही दलों ने 50 दागियों को टिकट देकर अपने ही वादे की निर्मम हत्या कर दी। जाति समीकरण के आधार पर कई सीटों पर पलक झपकते ही टिकट बागियों की झोली में चले गए और कतार में खड़े उम्मीदवार मुंह ताकते रहे गए। भाजपा ने करीब 10 और कांग्रेस ने 20 ऐसे प्रत्याशियों को मौका दिया जो किसी न किसी परिवार से जुड़े हैं। महिला सशक्तिकरण की बात करने वाले दोनों ही दलों ने महिलाओं को सिर्फ 12 प्रतिशत टिकट ही दिए। भाजपा से 23 महिलाएं और कांग्रेस ने 26 महिलाओं को मौका दिया। युवाओं को मौका देने के मामले में कांग्रेस ने पहली बार 40 साल से कम उम्र के 36 और भाजपा ने 27 चेहरे उतारे। इधर, कांग्रेस ने जिन-जिन सीटों पर मुस्लिम उम्मीदवार खड़े किए हैं, वहां निर्दलीय उम्मीदवारों की फौज खड़ी हो गई। इस तरह से देखा जाए तो भाजपा की टक्कर तीसरे मोर्चे से जबकि कांग्रेस की सीधी टक्कर बीजेपी से कम और निर्दलीय उम्मीदवारों से अधिक लग रही है।

हाईवोल्टेज दलबदलु जिनको मिला टिकट

भाजपा : राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्ष रही ममता शर्मा को 17 नवंबर को पार्टी छोड़ने के बाद 8.50 बजे पीपलदा से टिकट मिला। पूर्व कांग्रेसी सांसद इज्येराज की पत्नी कल्पना को अंतिम दिन लाड़पुरा कोटा से टिकट दिया गया। कांग्रेस के पूर्व मंत्री रामकिशोर सैनी को पार्टी छोड़ने के अगले दिन 17 नवंबर को बांदीकुई विधायक अल्का गुर्जर का टिकट काटकर उनको दे दिया गया। ओपी सैनी 18 नवंबर दोपहर एक बजे आईएएस से वीआरएस लेकर शामिल हुए और अंतिम दिन उनको करौली से टिकट मिला। महेश प्रताप सिंह कांग्रेस छोड़ तीन महीने पहले ही भाजपा में शामिल हुए। उन्हें कद्दावर नेता सीपी जोशी के सामने मैदान में उतारा है। राजेंद्र भामू को कांग्रेस छोड़ शामिल होने के 7 घंटे बाद ही झुंझुनू से टिकट मिल गया। अभिनेष महर्षि को 14 नवंबर को भाजपा में शामिल होने के दो दिन बाद मंत्री राजकुमार रिणवा की जगह रतनगढ़ से टिकट दिया है।

कांग्रेस : पूर्व डीजीपी और अपने भाई नमोनारायण मीणा को हराकर भाजपा से दौसा सांसद बने हरीश मीणा को भाजपा छोड़ने के एक दिन बाद देवली उनियारा से टिकट दिया गया। हबीबुर्रहमान का तीसरी पारी का टिकट कटा तो भाजपा छाड़ने के बाद पहली ही सूची में ही टिकट मिल गया। कन्हैयालाल झंवर की 16 नवंबर की रात को कांग्रेस में एंट्री होने के बाद एक बार तो टिकट कट गया। लेकिन डूडी के विरोध करने पर बीकानेर पूर्व से टिकट देकर भाजपा की सिद्धि कुमारी के सामने उतारा। जमींदारा पार्टी की विधायक सोना देवी को रायसिंह नगर से टिकट मिला। पूर्व सांसद एवं शिव विधायक मानवेंद्र सिंह को भाजपा छोड़ने के एक महीने बाद ही कांग्रेस ने सीएम वसुंधरा राजे के सामने झालरापाटन से मैदान में उतार दिया। नवलगढ़ से निर्दलीय विधायक राजकुमार शर्मा को कांग्रेस ने नवलगढ़ से टिकट दिया। भारतीय प्रशासनिक सेवा से इसी साल सेवानिवृत्त सवाई सिंह को कांग्रेस ने खींवसर से प्रत्याशी बनाया।

हाईवोल्टेज बागी जो डटे रहे

कांग्रेस : कठूमर से पूर्व विधायक रमेश खींची, केशोरायपाटन से सी.एल.प्रेमी, खंडेला से पूर्व केंद्रीय मंत्री महादेव सिंह खंडेला, दूदू से बाबूलाल नागर, किशनगढ़ से नाथूराम सिनोदिया, तारानगर से डा. सी.एस.वैद, बारां-अटरू से धर्मराज मेहरा, कुशलगढ़ से रमीला खड़िया, सुजानगढ़ से बीदासर प्रधान संतोष मेघवाल, रतनगढ़ से पूर्व प्रधान पूसाराम गोदारा, बांदीकुई से इंजीनियर वेद प्रकाश शर्मा, सलूंबर से पूर्व प्रधान रेशमा मीणा, सिवाना से बालाराम चौधरी, विद्याधर नगर से विक्रम सिंह शेखावत, बीकानेर पूर्व एवं पश्चिम से गोपाल गहलोत, नीमका थाना पूर्व से विधायक रमेश खंडेलवाल, मारवाड़ जंक्शन से खुशवीर सिंह। शाहपुरा से आलोक बेनीवाल।

इनका गुस्सा पड़ा ठंडा : नागौर से सभापति कृपाराम सोलंकी, विराटनगर से रामचंद्र सराधना, मसूदा से पूर्व विधायक ब्रह्मदेव कुमावत, अजमेर दक्षिण से ललित भाटी।

भाजपा : थानागाजी से विधायक हेमसिंह भडाना, जैतारण से विधायक सुरेंद्र गोयल, बांसवाड़ा से मौजूदा विधायक घनसिंह रावत, घाटोल से विधायक नवनीतलाल निनामा, श्रीडूंगरगढ़ से किशना राम नाई, डूंगरपुर से विधायक देवेंद्र कटारा, सागवाड़ा से विधायक अनिता कटारा, रतनगढ़ से राजकुमार रिणवा, सुजानगढ़ से रामेश्वर भाटी, परबतसर से राकेश मेघवाल, तारानगर से त्रिलोकाराम कस्वां, बांदीकुई से रामकरण सैनी, फुलेरा से जयपुर जिला देहात के पूर्व अध्यक्ष डीडी कुमावत, बानसूर से यूआईटी चेयरमैन देवी सिंह शेखावत शामिल है।

इनका गुस्सा पड़ा ठंडा : ज्ञानदेव आहूजा, भवानी सिंह राजावत कठूमर से मंगलाराम कोली, अलका गुर्जर, श्रीराम भींचर, चौहटन से तरुण राय कागा, बाड़मेर से प्रियंका चौधरी, लाडनूं से पुष्पाकंवर।

हाईवोल्टेज सीटें जिन पर मुकाबला रोचक

झालरापाटन

वसुंधरा V/S मानवेन्द्र

वसुंधरा राजे : झालरापाटन से लगातार तीन बार विधायक। चौथी बार भी अपनी परंपरागत सीट से ही मैदान में। पिछला चुनाव रिकॉर्ड 60,896 मतों से जीता था। झालावाड़ से 5 बार सांसद रहीं राजे की पकड़ मजबूत है।

मानवेन्द्र सिंह : पूर्व केन्द्रीय मंत्री जसवंत सिंह के बेटे मानवेंद्र बाड़मेर-जैसलमेर से एक बार सांसद रह चुके हैं। पिछली बार शिव विधानसभा सीट से बीजेपी के टिकट पर कांग्रेस के अमीन खां को 31,425 वोटों से हराया था। लेकिन वे हाल ही में कांग्रेस में शामिल हो गए थे। कांग्रेस ने मानवेन्द्र को राजे के सामने उतारा है। इस सीट पर सबकी निगाहें रहेंगी।

टोंक

सचिन V/S यूनूस

सचिन पायलट : प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष पायलट दौसा एवं अजमेर लोकसभा सीट से सांसद रह चुके हैं। इस बार कांग्रेस ने पायलट को टोंक से उतारा है। पिछले चुनाव में कांग्रेस ने यहां से जकिया को टिकट दिया था। वे बीजेपी के अजित सिंह मेहता के सामने अपनी जमानत भी नहीं बचा सकी थी।

यूनूस खान : वसुंधरा सरकार में नंबर 2 मंत्री रहे। डीडवाना सीट से दो बार विधायक रहे। यहीं से टिकट की मांग कर रहे थे। खान को बीजेपी का ट्रंप कार्ड माना जा रहा है। 2013 का चुनाव जीते अजित मेहता की जगह नामांकन के आखिरी 48 घंटे में टोंक भेज दिया।

सरदारपुरा

अशोक गहलोत V/S शंभूसिंह

अशोक गहलोत : राजस्थान के दो बार मुख्यमंत्री रहे गहलोत पांचवी बार अपनी परंपरागत सीट से मैदान में। 2013 के विधानसभा चुनाव में मोदी लहर के बावजूद गहलोत 18,478 वोटों से जीते थे। जमीनी स्तर पर गहलोत की पकड़ मजबूत मानी जाती है।

शंभूसिंह खेतासर : जोधपुर की सरदारपुरा सीट से खेतासर लंबे समय से बीजेपी प्रत्याशी रहते आए हैं। लेकिन वे कभी भी चुनाव नहीं जीत पाए हैं। उम्मीद है कि इस बार खेतासर कुछ करिश्मा करके बीजेपी को दिखा सकते हैं। 2013 के विधानसभा चुनाव में शंभूसिंह को 59 हजार से अधिक वोट मिले थे।

नाथद्वारा

सीपी जोशी V/S महेशप्रताप

सीपी जोशी : कांग्रेस के वरिष्ठ नेता जोशी नाथद्वारा से चार बार विधायक रहे। सीएम के दावेदार रहे जोशी 2008 के विधानसभा चुनाव में बीजेपी के कल्याण सिंह से एक वोट से हार गए थे। वे यूपीए सरकार में ग्रामीण विकास और परिवहन समेत अहम मंत्रालय संभाल चुके। उन्हें राहुल गांधी का करीबी माना जाता है

महेश प्रताप सिंह : बीजेपी ने नाथद्वारा से सीपी जोशी के सामने इस बार 11 साल बाद भाजपा में वापस लौटे महेश प्रताप सिंह को अपना उम्मीदवार बनाया है। वे भैरोसिंह शेखावत सरकार में मंत्री रहे शिवदान सिंह के भतीजे हैं।

उदयपुर

कटारिया V/S गिरिजा

गुलाब चंद कटारिया : बीजेपी के वरिष्ठ नेता और वर्तमान वसुंधरा सरकार में गृहमंत्री। मेवाड़ के कद्दावर नेता कटारिया एक बार गिरिजा व्यास से हारे। इस बार फिर गिरिजा के सामने है।

गिरिजा व्यास : वे विधानसभा चुनाव में एक बार कटारिया को हरा चुकी हैं। गिरिजा मेवाड़ में कांग्रेस का बड़ा चेहरा हैं। राज्य सरकार और केंद्र में मंत्री तथा राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्ष रह चुकी है। इस बार कटारिया के सामने मैदान में है।

सपोटरा

गोलमा देवी V/S रमेश

गोलमा देवी : डॉ. किरोड़ी लाल मीणा की पत्नी गोलमा देवी गहलोत सरकार में मंत्री रह चुकी है। 2013 का विधानसभा चुनाव गोलमा दो सीटों से लड़ी। अलवर की राजगढ़-लक्ष्मणगढ़ से उन्हें जीत मिली लेकिन दौसा जिले की महुआ सीट से गोलमा चुनाव हार गई।

रमेश मीणा : कांग्रेस विधायक दल के उपनेता। डॉ. किरोड़ी लाल मीणा का धुर-विरोधी होने के कारण यह मुकाबला कड़ा माना जा रहा है। रमेश 2013 का विधानसभा चुनाव इसी सीट से जीत चुके है।

डीग-कुम्हेर

विश्वेन्द्र V/S शैलेष

विश्वेन्द्र सिंह : भरतपुर राज परिवार के विश्वेन्द्र सिंह डीग-कुम्हेर से पिछला चुनाव कांग्रेस से जीते। वर्ष 2008 में चुनाव हारे। सांसद भी रहे।

डॉ. शैलेष सिंह : भाजपा के दिवंगत नेता डॉ. दिगंबर सिंह के बेटे हैं। वे पहली बार चुनाव लड़ रहे है। उनके पिता दिगंबर सिंह यहीं से विश्वेन्द्र को चुनाव हरा चुके थे।

सेवा कार्य पर यूसीसीआई ने किया विशिष्ट सम्मान

उदयपुर। उदयपुर चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री के स्नेह मिलन समारोह में यूसीसीआई वोकेशनल ट्रेनिंग सेन्टर की अलग विंग का निर्माण करने पर पूर्व अध्यक्ष बी. एच. बापना व उल्लेखनीय कार्य के लिए सन्दीप बापना का सम्मान किया गया। इस मौके पर कलाकारों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी। यूसीसीआई के पर्यावरण पार्क में हुए आयोजन में बतौर अतिथि राष्ट्रीय महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष डॉ. गिरिजा व्यास, सुखाड़िया विवि के कुलपति प्रो. जेपी शर्मा, बी. आर. भाटी, सी. एस. आर. मेहता व अरविन्द सिंघल मौजूद थे। स्वागत उद्बोधन में यूसीसीआई अध्यक्ष हंसराज चौधरी ने दिया। वरिष्ठ उपाध्यक्ष आशीष छाबड़ा, सांस्कृतिक कार्यक्रम उप-समिति अध्यक्ष नीलिमा काला, अंशु कोठारी, पूर्व उपाध्यक्ष आर. के. सिंघवी, रमेश चौधरी, महेन्द्र टाया, जीएस सिसोदिया मौजूद थे।

समारोह में सम्मानित पूर्व अध्यक्ष बी.एच. बाफना व संदीप बाफना के साथ पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. गिरिजा व्यास, अरविन्द सिंघल एवं अध्यक्ष हंसराज चौधरी।

डॉ. अरविन्दर का शोध अन्तरराष्ट्रीय जर्नल में प्रकाशित

उदयपुर। अर्थ डायग्नोस्टिक्स के सीईओ तथ सीएमडी डॉ. अरविन्दर सिंह का रिसर्च आर्टिकल पीसीपीएनडीटी एक्ट एण्ड लेटेस्ट डेवलपमेंट दुबई स्थित अंतरराष्ट्रीय जर्नल ऑफ लॉ, क्राइम जस्टिस में प्रकाशित हुआ है। पीसीपीएनडीटी एक्ट बनाने का मुख्य उद्देश्य भ्रूण हत्या तथा लिंग परीक्षण को रोकना है। डॉ. सिंह ने बताया कि इण्डियन रेडियोलोजिकल एण्ड इमेजिंग एसोसिएशन ने इस अहम मुद्दे को कई बार सरकार तथा कोर्ट के समक्ष प्रस्तुत किया जिसके दूरगामी सकारात्मक परिणाम आए। डॉ. सिंह ने रिसर्च आर्टिकल में पाया कि चिकित्सक भी लिंग परीक्षण व भ्रूण हत्या रोकने में सरकार के साथ हैं। वे सरकार से छोटी लिपिकीय त्रुटियों पर की जाने वाली सख्त कार्रवाई से राहत चाहते हैं जिससे कि चिकित्सक अपना कार्य अच्छे से कर सकें। यह शोध लेख प्रसव पूर्व लिंग परीक्षण व लिंग निर्धारण को रोकने के लिए पीसीपीएनडीटी एक्ट के विषय में लिखा गया।

टेक्नो इंडिया एनजेआर की टीम पुरस्कृत

उदयपुर। इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय स्तर की ओपन गोवा डाटा हैक प्रतियोगिता में टेक्नो इंडिया एनजेआर उदयपुर के छात्रों ने राष्ट्रीय स्तर पर 735 टीमों में से द्वितीय स्थान प्राप्त किया। टीम को डॉटकॉप प्लेटफॉर्म सिस्टम के लिए केन्द्रीय मंत्री रवि शंकर प्रसाद ने एक लाख रुपए का नकद पुरस्कार दिया। कॉलेज के प्रबन्ध निदेशक आर. एस. व्यास ने बताया कि इसमें राजस्थान की एक मात्र टीम ने फाइनल में पहुंच कर प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार वीआईओ की टीम, द्वितीय पुरस्कार टेक्नो पुरस्कार टेक्नो एनजेआर टीम और तीसरा पुरस्कार आईआईटी, पटना ने जीता था। डॉ. जितेन्द्र श्रीमाली के निर्देशन में टेक्नो एनजेआर की टीम के सदस्यों तथागत, भव्य, मोहित, वेदांत, जीविका ने राष्ट्रीय अपराध रिपोर्ट ब्यूरो के लिए भारत के सभी पुलिस थानों से सूचना एकत्रित कर भारत में होने वाले अपराधी का विश्लेषण कर उसे रोकने के उपाय बता कर प्रतियोगिता जीती।

पायरोटेक को उद्योग रत्न अवार्ड

पुरस्कार देते उद्योग मंत्री राजपाल सिंह शेखावत।

उदयपुर। मई दिवस एवं विश्वकर्मा जयंती पर जयपुर में आयोजित राज्य स्तरीय समारोह में उद्योग जगत में बेहतर प्रदर्शन करने वाले राज्य के उद्योगों व निर्यातकों को सम्मानित किया गया।

समारोह में उद्योग मंत्री राजपाल सिंह शेखावत ने उदयपुर की पायरोटेक इलेक्ट्रोनिक्स प्रा. लि. को लघु उद्यम श्रेणी में बेस्ट बिजनेस प्रेक्टिक कैटेगरी में राजस्थान उद्योग रत्न अवार्ड से नवाजा। अवार्ड पायरोटेक के प्रबंध निदेशक प्रताप सिंह तलसेरा ने ग्रहण किया। पुरस्कार स्वरूप एक लाख रुपए व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

जे.के.टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज़ लिमिटेड

जेकेग्राम, कांकरोली (राज.)

दीपावली

के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं

JK TYRE & INDUSTRIES LTD.

SELECTED Superbrand INDIA 2009-10 CONSUMER VALIDATED

ठंडे पड़े 'तनातनी' के अंगारे

– अमित शर्मा

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) तथा केंद्र सरकार के बीच अलग-अलग मुद्दों को लेकर टकराव के बाद 19 नवंबर को रिजर्व बैंक बोर्ड की बैठक हुई। ये अपने किस्म की पहली बैठक थी। करीब 9 घंटे बैठक चली। इससे पहले इतनी लंबी बैठक कभी नहीं हुई। बैठक के बाद सरकार और बैंक के बीच तनातनी से उठी आग न केवल ठंडी पड़ी बल्कि इसकी राख से भविष्य के कई रास्ते भी प्रशस्त हुए। इसके अलावा सरकार, रिजर्व बैंक, उद्योग जगत की महत्वपूर्ण हस्तियों और बैंकिंग विशेषज्ञों की आम राय से देश की पूंजी और मौद्रिक व्यवस्था भी पटरी पर लौटी। इस लिहाज से आरबीआई और केंद्र सरकार के विवाद को सकारात्मक दृष्टि से देखना चाहिए। रिजर्व बैंक अधिनियम की धारा-7 की रोशनी में हुए फैसलों से कई मार्ग भी प्रशस्त हुए। बैठक के पहले कयास लगाए जा रहे थे कि केंद्रीय बैंक पर सरकार द्वारा मनोनीत प्राइवेट निदेशक अपने संख्याबल के आधार पर हावी हो जाएंगे लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। अलग-अलग मदों से जो जानकारी बाहर आई है उसके अनुसार किसी भी प्रस्ताव पर मतदान की नौबत नहीं आई। बैंक-प्रतिनिधियों ने सरकार की बातों को गौर से सुना और सरकार ने बैंक प्रतिनिधियों को पूरा सम्मान दिया। दोनों पक्षों ने एक-दूसरे की आग पर पानी डालने का काम किया। इस आग को हवा देने का काम किया मीडिया और राजनीति के मैदान में हुए इसके बाद ट्विटीकरण ने। वस्तुत: सरकार और रिजर्व बैंक दोनों को ही अर्थव्यवस्था के विकास और उसमें अनुशासन की फिक्र होनी चाहिए और वह दिखाई भी दी। अंतत: दोनों ने वास्तविकता को समझा और रास्ता निकाला। अब 5 दिसंबर को रिजर्व बैंक जिस मौद्रिक नीति की घोषणा करेगा उसमें इस बैठक के निहितार्थ ज्यादा स्पष्ट होंगे। इस वक्त दोनों पक्षों के सामने तीन-चार सवाल थे। पहला-छोटे और मझोले उद्यमों के लिए पूंजी की व्यवस्था को सरल और सुगम बनाना ताकि विकास दर बढ़े और नए रोजगारों का सृजन हो। इतना ही नहीं उनके पुराने फंसे कर्जों को फिर से नई शक्ल देना ताकि उनकी वसूली आसान हो सके। दूसरा-अनियमितताएं बरतने वाले बैंकों पर रिजर्व बैंक की सख्ती को कुछ नरम करना ताकि मार्केट में पूंजी आए। तीसरा- यह तय करना कि रिजर्व बैंक के पास आरक्षित पूंजी के भंडार की सीमा क्या हो ताकि अतिरिक्त पूंजी से अर्थव्यवस्था की गाड़ी की गति को तेज किया जा सके। दरअसल इस बैठक को जरूरत वित्त मंत्रालय और रिजर्व बैंक के कुछ उत्तेजक बयानों के कारण पैदा हुई थी। इसको लेकर कई अटकलें थीं जैसे कि सरकार पहली बार रिजर्व बैंक के अधिनिम की धारा-7 के तहत कार्रवाई करेगी या रिजर्व बैंक के गवर्नर उर्जित पटेल इस्तीफा दे देंगे वगैरह-वगैरह। अब अगर

इन मामलों में खिंचीं थी तलवारें

पीसीए

सरकार : केंद्र पीसीए नियमों में ढील चाहता है ताकि कर्ज देना बढ़ सके।

आरबीआई : कुछ नए नियम तय किए और 12 बैंकों को त्वरित कार्रवाई की श्रेणी में डाला है। ये नया कर्ज नहीं दे सकते, नई ब्रांच नहीं खोल सकते। आरबीआई का कहना है कि बैंकों की बैलेंस सीट न बिगड़ इसलिए रोक जरूरी है।

पेमेंट-सेटलमेंट रेगुलेटर

सरकार:अंतर-मंत्रालय समिति ने अलग पेमेंट-सेटलमेंट रेगुलेटर की सिफारिश की है।

आरबीआई : रिजर्व बैंक इसके खिलाफ है। उसका कहना है कि कि यह आरबीआई के अधीन हो। इसका प्रमुख आरबीआई गवर्नर ही हो।

एनपीए

सरकार : एनपीए के मामले में आरबीआई ने कुछ नियम बनाए। इसमें ढील देने का आग्रह सरकार ने किया लेकिन आरबीआई ने नहीं माना।

आरबीआई : एनपीए और विल्फुल डिफॉल्टर्स मामले में नियम बदले। कर्ज लौटाने में एक दिन की भी देरी हुई तो डिफॉल्ट मानकर रिजॉल्यूशन प्रक्रिया शुरू करनी पड़ेगी।

पीएनबी फ्रॉड

सरकार : नीरव मोदी का पीएनबी फॉड सामने आने के बाद सरकार ने इस मामले में रिजर्व बैंक की निगरानी की आलोचना की।

आरबीआई : आलोचना पर आरबीआई गवर्नर ने ज्यादा अधिकार मांगे ताकि सरकारी बैंकों के खिलाफ कार्रवाई की जा सके।

डिविडेंड

सरकार : रिजर्व बैंक से ज्यादा डिविडेंड चाहती है ताकि अपना घाटा कम कर सके।

आरबीआई : रिजर्व बैंक का कहना है कि सरकार बैंक की स्वायत्तता को कम रह रही है। अभी इसकी बैलेंस शीट मजबूत बनाने की जरूरत है।

अर्थतंत्र के लिहाज से देखें तो सरकार और रिजर्व बैंक एक ही गाड़ी के दो पहिए हैं। इनके समन्वय से ही गाड़ी आगे बढ़ती है। यह भी सही है कि दोनों के बीच मौद्रिक संतुलन को लेकर मतभेद चलते रहते हैं पर ये मतभेद इस प्रकार खुलकर सामने नहीं आते जैसा इस बार हुआ। सरकार चाहती है कि रिजर्व बैंक अपनी नीतियों में थोड़ी नरमी लाए ताकि वह अपने राजनीतिक लक्ष्यों को साधते हुए आम जनता को कुछ राहत दे सके। यह सच है कि कुछ दशकों से हमारे बैंकिंग सेक्टर में अराजकता की स्थिति आई थी। आरबीआई ने भी लंबे समय तक सरकारी बैंकों के फंसे हुए कर्ज को लेकर अपना मुंह फेरा और अब अचानक से सारे मानक सख्त कर दिए जो अंतरराष्ट्रीय मानकों से भी कड़े हैं। निश्चित रूप से ऐसा करने के पीछे आरबीआई की मंशा में बढ़ते एनपीए को रोकने और इसे वापस मार्केट में जाने की होगी। यही बात शायद दोनों के लिए गतिरोध बन रही थी। फिलहाल अच्छी बात यह है कि सरकार और केंद्रीय बैंक की पूंजी डूबने को लेकर जो जानकारियां सामने आई हैं वे तभी आई जब रिजर्व बैंक के नियम बदले। कंपनियों को दिवालिया घोषित करने का कानून इसीलिए बनाना पड़ा ताकि डूबी हुई पूंजी को वसूला जा सके। इस लिहाज से दोनों के बीच हुई बैठक एक महत्वपूर्ण पड़ाव साबित होगी।

उर्जित पटेल व अरूण जेटली

ऐसे उठी सेक्शन 7 की बात

रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया एक्ट, 1934 की धारा 7 कहती है, 'केंद्र सरकार सार्वजनिक हित के लिए अनिवार्य मानते हुए बैंक के गवर्नर से मशविरे के बाद समय-समय पर इस तरह के निर्देश दे सकती है।' सेक्शन 7 के तहत आरबीआई को निर्देश दिए जाने का मामला पहली बार तब आया जब कुछ बिजली उत्पादक कंपनियों ने आरबीआई के 12 फरवरी को जारी सर्कुलर को इलाहाबाद हाई कोर्ट में चुनौती दी। इस सर्कुलर में डिफॉल्ट हो चुके लोन को रीस्ट्रक्चरिंग स्कीम में डालने से रोका गया है। आरबीआई के सलहाकार ने जब बताया कि कानूनी तौर पर सरकार सेंट्रल बैंक को आदेश दे सकती है, तो कोर्ट ने अगस्त महीने में जारी अपने आदेश में कहा कि सरकार ऐसा निर्देश देने पर विचार कर सकती है।

पहले भी हुआ है टकराव

उर्जित पटेल से पहले आरबीआई गवर्नर रघुराम राजन के कार्यकाल में ब्याज दरों और राजन के बयानों को लेकर टकराव सामने आया था। ब्याज दरों और कर्ज को लेकर 2008-12 के दौरान वित्त मंत्री रहे पी चिदंबरम और तत्कालीन आरबीआई गवर्नर डी सुब्बाराव के बीच भी मतभेद रहे। टैक्स, ब्याज दरों व एफडीआई पर 2004 से 2008 के दौरान वित्त मंत्री और आरबीआई गवर्नर के बीच अनबन रही।

MDS SENIOR SECONDARY SCHOOL
UDAIPUR (RAJ.)

दीपावली एवं नववर्ष की
हार्दिक शुभकामनाएं

MDS Senior
Secondary School

H.O. : MDS Campus, MDS Road, Hiran Magri, Sec. 3, Udaipur

Extn. : Dheekli (Old RTO) Road, Pratap Nagar, Udaipur

'सरदार' खुश होंगे?

नर्बदा के तट पर दुनिया की विशाल ऊंचाई पर प्रतिष्ठापित हुए लौहपुरुष, 2332 करोड़ रुपए से बनी 597 फीट ऊंची प्रतिमा

31 अक्टूबर 2013 को गुजरात राज्य के नर्मदा तट पर तत्कालीन सीएम नरेंद्र मोदी ने लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल को समर्पित 'स्टेच्यू ऑफ यूनिटी' की आधारशिला रखी थी। मोदी के ड्रीम प्रोजेक्ट में शामिल 597 फीट (182 मीटर) ऊंची दुनिया की सबसे विशालकाय प्रतिमा को बनने में 44 माह का रिकॉर्ड समय लगा। 30 अक्टूबर 2018 को लौह पुरुष की प्रतिमा का अनावरण कर पीएम मोदी ने जनता को समर्पित किया। इसमें 2332 करोड़ रुपए खर्च हुए। जबकि 70 हजार टन सीमेंट, 22500 टन स्टील, 1700 मीट्रिक टन तांबे का उपयोग किया गया। इसकी विशालता और भव्यता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उनके जैकेट में टंगे बटन का व्यास ढाई मीटर से ज्यादा है। इस विशाल प्रतिमा से आने वाली पीढियां सरदार पटेल के राजनीतिक कौशल, उनकी बुद्धिमता व राष्ट्रभक्ति से परिचित होगी। वाकई यह प्रतिमा इतिहास की एक जिल्द है जो अपने में छिन-भिन्न आजाद भारत को एकजुट करने की गौरव गाथा के पन्ने समेटे है। निश्चित रूप से इतनी बड़ी प्रतिमा देखकर हर कोई सरदार के बारे में जानना चाहेगा। जो उनकी क्षमता और दक्षता को जानेंगे उन पर उनके योगदान का प्रभाव जरूर पड़ेगा। कोई न कोई पटेल के पदचिन्हों पर चलने के लिए प्रेरित भी होगा। इस परिप्रेक्ष्य में पीएम मोदी की दूरदृष्टि काबिले तारिफ है। लेकिन इसके इतर आलोचकों का मानना है कि यह प्रोजेक्ट फिजूलखर्च के सिवाय कुछ नहीं है। उनका यह भी कहना है कि यह अतीत के नायकों को कब्जाने की भाजपा की कोशिशों का एक हिस्सा है। इसके जवाब में गुजरात सरकार का कहना है कि 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' भारत के गर्व का प्रतीक है। इससे पर्यटन भी बढ़ेगा। इस प्रतिमा के अनावरण के बाद हम दुनिया के ऐसे देश के शिखर पुरुष बन गए हैं जहां सबसे ऊंची मूर्ति लगी है। ये गौरव इसलिए भी है क्योंकि 565 छोटी-बड़ी रियासतों का विलय कर एकीकृत भारत का निर्माण करने वाले सरदार पटेल के नाम पहली बार हम में से किसी ने कुछ ऐसा किया है कि दुनिया टकटकी लगाये देखती ही रह जाए। जो सरदार पटेल के कृतित्व और व्यक्तित्व के बारे में नहीं जानते थे वे अब बहुत कुछ जान गए हैं। सवाल ये भी है कि सरदार पटेल जीवित होते तो क्या वे इस प्रोजेक्ट पर खुश होते ? अगर वे खुश होते तो सिवाय इस बात को लेकर कि देर सवेरे ही सही भारत कुछ नया करने को तो निकल पड़ा है। और अगर दुखी होते तो ये सोचकर कि 3000 करोड़ की इतनी बड़ी रकम से भारत में गरीबों के लिए बहुत कुछ किया जा सकता था। लेकिन विशालकाय प्रतिमा बनने के बाद ऐसी बातों पर सोचने का कोई औचित्य नहीं है। गृहमंत्री रहते हुए पटेल ने अनेक विवादास्पद मसलों और चुनौती पूर्ण स्थितियों में कठोर फैसले किए, जिसके चलते उन्हें लौह पुरुष की संज्ञा दी गई। लेकिन यह बात सब जानते है कि जवाहरलाल नेहरू के समकालीन नेताओं में से एक रहे सरदार पटेल को मृत्यु के 41 साल बाद यानी 1955 में देश का सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न दिया गया। जबकि नेहरू को यह सम्मान उनके जीवित रहते 11 साल पहले ही मिल गया। सवाल यह उठता है कि सालों तक सत्ता में रही कांग्रेस को सरदार का कृतित्व और व्यक्तित्व 41 साल बाद भी दिखाई नहीं दिया या वो जानबूझकर उन्हें भूलने की गलती करती रही। सवाल तो यह भी है कि सरदार पटेल कांग्रेस के नेता थे, फिर

इतने लंबे समय तक कांग्रेस के शासन के बावजूद उनकी प्रतिमा लगाने का विचार पार्टी के किसी व्यक्ति के मन में क्यों नहीं आया? भाजपा इसी चूक का लाभ उठाते हुए आसन्न चुनावों में नेहरू-पटेल के विचारों में मतभेदों को भुनाने की कोशिश में है।

ये सवाल कोसते हैं

सरदार पटेल ऐसे नेता थे, जो दीन दुखियों का भला चाहते थे। वे कहते थे कि 'मेरी एक ही इच्छा है कि भारत एक अच्छा उत्पादक देश हो, जहां अन्न उगाने वाला आंसू बहाते भूखे पेट न सोये।' लेकिन सरदार पटेल की मूर्ति स्थापना को लेकर किसान, आदिवासी भी विरोध करते रहे। उनका कहना था कि उनकी जमीन का अधिग्रहण करके उसी महान नेता की मूर्ति लगाई गई है, जो कृषि प्रधान देश में साल दर साल उत्पादन बढ़ते और किसान को खुशहाल देखना चाहता था। जो स्वयं एक खेतीहर परिवार से संबद्ध था। क्या इस मूर्ति से किसान खुशहाल हो जाएगा, क्या कुपोषित बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार आएगा? क्या किसानों की आत्महत्या का दौर थम जाएगा?

72 में से 32 गांव सबसे ज्यादा प्रभावित

मीडिया रिपोर्ट की मुताबिक बात करें स्टैच्यू ऑफ यूनिटी प्रोजेक्ट की वजह से प्रभावित गांवों की तो 72 में से 32 गांव सबसे ज्यादा प्रभावित हुए हैं। इनमें से 19 गांवों में तथाकथित रूप से पुनर्वास नहीं हुआ है। सभी को मुआवजा नहीं दिया गया है। जमीन और नौकरी जैसे वादों को अभी तक पूरा नहीं किया गया है। इसीलिए आदिवासियों ने मूर्ति के अनावरण के दिन घर में खाना ना पकाने का फैसला भी किया था। आदिवासियों के इस तर्क को यह कहकर नकारा गया कि इसको बनाने के लिए 250 इंजीनियर, 3,400 मजदूरों को 4 साल तक रोजगार मिला। सरकार इस पर टिकट लगाएगी तो उससे पैसा आएगा। लेकिन सवाल ये है कि आदिवासियों को क्या मिला? यह तो एक तरफा विकास के सिवाय कुछ नहीं है। आखिरी बात, क्या इस मूर्ति से पटेल खुश हो जाएंगे? वो भी तब जब देश कुपोषण, भूखमरी और बेरोजगारी से जूझ रहा हो। क्या यह बेहतर नहीं होता कि उनके नाम से कोई विकास की योजना शुरू होती? पटेल तो खुद कहते थे, 'आज हमें ऊंच-नीच, अमीर-गरीब, जाति-पंथ के भेदभावों को समाप्त कर देना चाहिए।' उन्होंने तो जनता को भी सलाह दी, 'जब जनता एक हो जाती है, तब उसके सामने क्रूर से क्रूर शासन भी नहीं टिक सकता। अतः जात-पांत के ऊंच-नीच के भेदभाव को भुलाकर सब एक हो जाइए।' आज जो नफरत की राजनीति हो रही है, उसे खत्म करने के लिए जनता को पटेल के विचारों पर विचार करना होगा। उनके विचारों पर अमल ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

हिन्दुस्तान जिंक का लगा 200 टन जस्ता

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के निर्माण में तीन कंपनियों ने 3000 टन गैल्वनाइज्ड स्ट्रक्चरल स्टील की आपूर्ति की। स्टील को मजबूती देने के लिए हिन्दुस्तान जिंक का 200 टन जस्ता लगा। जिंक के वाइस प्रेसीडेंट एंड हेड-कॉर्पोरेट कम्यूनिकेशन पवन कौशिक ने बताया कि जिंक की परत स्टील को जंग लगने से सुरक्षा देगी और इससे प्रतिमा को मजबूती मिलेगी।

– मनीष उपाध्याय

दीपावली एवं नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

shreenath®

Travellers

Head Office : 9, Kan Nagar, Main Road, Near Sub City Center

Udaipur Ph. : 0294 - 2488333, 2489555

Daily Parcel Service Available

Udaipur : 3, Yatri Hotel Udaipole, Udaipur 313 001
Ph. : 0294 - 2423181, 2423182

Fatehpura, Udaipur (Rameshwar)
Shreenath Travellers, Fatehpura
Ph. : 09571210045

बुढ़ापे का इलाज मन की ताकत

- ओम शर्मा

जैसा मन वैसा तन। जब कोई बूढ़ा न होने की ठान लेता है तो वह चिर युवा बना रहता है और अंत तक सक्रिय व सक्षम भी। वस्तुतः मनुष्य उतना ही बूढ़ा या जवान है जितना वह अनुभव करता है। बुढ़ापा तन का नहीं, मन का होता है...

मन जवां तो तन जवां। आप की सोच इस दिशा में सबसे महत्वपूर्ण है अतः सोच में सकारात्मक परिवर्तन द्वारा सदैव युवा बने रहें और सक्रिय जीवन व्यतीत करें। वैसे भी यदि आप सक्रिय जीवन व्यतीत करते हैं तो बुढ़ापा पास नहीं फटकता।

- अपनी दिनचर्या को नियमित रखें तथा समय पर सब काम पूरे करें।
- पर्याप्त नींद लें। अधिक सोना और कम सोना दोनों ही अच्छे स्वास्थ्य के शत्रु हैं।
- पर्याप्त आराम करें। थक जाने पर आराम जरूरी है लेकिन थकान भी जरूरी है ताकि आराम का आनंद लिया जा सके। थकान के बिना आराम का कोई मतलब नहीं, इसलिए शारीरकि श्रम जरूरी है।
- नजदीकी आने-जाने के लिए वाहन के बजाय पैदल आएं-जाएं।
- अपना छोटा-मोटा सामान खुद उठाएं और पैदल चलकर घर आएं। सीढ़ियों पर बार-बार चढ़ने-उतरने और इधर-उधर आने-जाने को परेशानी का कारण न मानें अपितु इसे व्यायाम के रूप में लें।
- हंसना न केवल एक अच्छा व्यायाम और उपचार क्रिया है अपितु तनावमुक्ति का साधन भी है। खूब ठहाके लगाइए।
- मन को सकारात्मक विचारों से ओत-प्रोत रखें। इसके लिए नियमित रूप से प्रेरणास्पद साहित्य पढ़ें।
- आत्मविश्वास से भरपूर रहें। विषम परिस्थितियों में अपने मनोबल को ऊंचा बनाए रखें।
- भावनात्मक संतुलन रखें। छोटी-छोटी बातों पर भावुक न हों।
- मानसिक रूप से चुस्त-दुरुस्त रहने के लिए दिमागी कसरत करते रहें। वर्ग-पहेली भरने अथवा गणित के सवाल निकालन से व्यक्ति दिमागी तौर पर अधिक सक्रिय रहता है।

'भारत-रत्न' से सम्मानित वैज्ञानिक डॉ. मोक्षगुण्डम् विश्वेश्वरैया ने सौ वर्ष से अधिक की आयु पाई और अन्त तक सक्रिय जीवन व्यतीत किया। एक बार एक व्यक्ति ने उनसे पूछा - 'आपके' चिर यौवन का रहस्य क्या है? डॉ. विश्वेश्वरैया ने जवाब दिया - 'जब बुढ़ापा मेरा दरवाजा खटखटाता है तो मैं भीतर से बोलता हूँ कि विश्वेश्वरैया घर पर नहीं हैं।' बुढ़ापे से मेरी मुलाकात हो नहीं पाती तो वह मुझ पर हावी कैसे हो सकता है?

- भोजन के संबंध में विशेष रूप से सतर्क रहें। फास्ट फूड व जंक फूड की बजाय सादा व प्राकृतिक भोजन ही लें। भोजन में ताजा फल-सब्जियों की मात्रा अधिक होनी चाहिए ताकि पर्याप्त मात्रा में एंटीऑक्सीडेंट मिल सकें।

बढ़ती उम्र के अहसास को परिवर्तित करके, विषाक्त मनोभावों तथा आदतों से छुटकारा पाकर जीवन में सक्रियता अथवा क्रियाशीलता बनाए रखकर, जीवन में लचीला होने की विधि सीखकर तथा जीवन में प्रेम को अत्यधिक महत्वपूर्ण तत्व बनाकर हम सदैव युवा बने रह सकते हैं।

चिरयुवा रहने के लिए मन में नियमित स्वीकारोक्तियां करें -

- मैं एकदम युवा हूं और मेरा स्वास्थ्य बहुत अच्छा है।
- प्रतिदिन हर तरह से मैं अधिकाधिक स्वस्थ हो रहा हूं।
- निर्भय होकर मैं अत्यन्त सक्रिय, साहसी तथा अनुशासित जीवन व्यतीत कर रहा हूं।
- मेरी प्रकृति में लचीलापन है तथा मैं जीवन में परिवर्तनों तथा चुनौतियों को स्वीकार करता हूं। मैं आत्मविश्वास तथा उत्साह से परिपूर्ण हूं।
- मैं विषाक्त मनोभावों तथा आदतों से मुक्त हूं।
- नकारात्मक विचारों तथा नकारात्मक सुझावों का मुझ पर तथा मन के किसी भी स्तर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
- प्रेम, करुणा तथ देखभाल मेरे जीवन के महत्वपूर्ण तत्व हैं।
- जीवन एक अमूल्य उपहार है। मैं पूर्ण चेतना के साथ उसका आनंद उठाता हूं।

क्रियाशीलता के लिए

- नियमित रूप से व्यायाम तथा सैर करें।
- घर की साफ-सफाई तथा अपने काम खुद करें।
- पेड़-पौधे लगाएं और उनकी देखभाल खुद करें। बागवानी स्वयं में एक उपचार पद्धति है। पालतू जानवरों का स्पर्श और साहचर्य भी उपचारक है क्योंकि वे व्यक्ति को न केवल सक्रिय रखते हैं अपितु तनावमुक्त करने में भी सहायक होते हैं।

भुखमरी और कुपोषण का फैलता दायरा

अरब और एशिया के कुछ राष्ट्र भुखमरी और कुपोषण की भीषण समस्या से जूझ रहे हैं। माताओं में कुपोषण के कारण लाखों बच्चे दम तोड़ देते हैं। यमन में गृहयुद्ध के चलते 11 लाख से अधिक माताएं कुपोषण की शिकार हैं तो एशिया में 48.6 करोड़ की आबादी भूख से जूझ रही है। भारत में पांच साल से कम उम्र के 21 फीसदी बच्चे कुपोषण की मार झेल रहे हैं।

– शिल्पा नागदा

अरब राष्ट्रों में यमन सबसे गरीब देश है। पिछले चार वर्ष से वह सऊदी नेतृत्व वाले गठबंधन और यमनी हूथी बागियों की लड़ाई में पिस रहा है और इसकी सबसे ज्यादा मार आम लोगों पर पड़ रही है। सन् 2015 से आरंभ हुए इस गृहयुद्ध में अब तक 8000 से अधिक आम नागरिक मारे जा चुके हैं। घायलों का आंकड़ा 42 हजार के आसपास है। यमन के हालात पर विश्व समुदाय को तत्काल ध्यान देने की जरूरत है। दो करोड़ से अधिक लोगों को यदि मदद नहीं मिली तो वहां की स्थिति मानवता की ललाट पर बदनुमा दाग होगा।

कुपोषण की शिकार माताएं

संयुक्त राष्ट्र के जनसंख्या फंड के अनुसार खाने की कमी, विस्थापन, पोषण की कमी, बीमारियां फैलने और स्वास्थ्य सेवाएं ध्वस्त होने से यमन में 11 लाख से अधिक माताएं कुपोषण की शिकार हैं। अगर हालात ऐसे ही खराब रहे तो लगभग 20 लाख माओं पर मौत के मंडराते रहने का खतरा है। इस समय भी यमन सूखे की ऐसी स्थिति से रूबरू है, जो किसी की कल्पना से भी परे है। पिछले दिनों संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में इसकी विस्तार से जानकारी संयुक्त राष्ट्र के मानवीय सहायता प्रमुख मार्क लोवकॉक ने प्रस्तुत की।

एशिया में भी भुखमरी

संयुक्त राष्ट्र की ताजा रिपोर्ट में दावा किया गया है कि एशिया में 48.6 करोड़ की आबादी भूख से जूझ रही है। ऐसा इसलिए है क्योंकि खाद्य सुरक्षा व बुनियादी जीवन स्तर सम्बन्धी प्रगति थम जाने के कारण ऐसा हो रहा है। बैंकॉक और कुआलालंपुर में भी कई ऐसे गरीब परिवार हैं, जो बच्चों के लिए पर्याप्त भोजन नहीं जुटा पा रहे हैं। खाद्य एवं कृषि संस्थान तथा संयुक्त राष्ट्र की तीन एजेन्सियों द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट के मुताबिक पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी एशिया में भुखमरी के हालात सबसे बुरे हैं। हालांकि 2005 से 2017 के बीच कुपोषण के मामलों में करीब 7 फीसदी की गिरावट जरूर हुई है लेकिन बावजूद इसके इस क्षेत्र में शुद्ध पेयजल, खाद्य सुरक्षा और स्वच्छता के अभाव में हालात बुरे हैं और बच्चे कुपोषण का शिकार हो रहे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक सबसे अधिक खतरा बच्चों और किशोरों को हैं। पर्याप्त खुराक नहीं मिलने के कारण बच्चों के वजन में तेजी से गिरावट होती है, जो आगे जाकर बीमारी का रूप ले लेती है। दक्षिण-पूर्व एशिया में कुपोषण की स्थिति बेहद खराब है। इण्डोनेशिया, मलेशिया, कम्बोडिया आदि में हर 10 में से एक बच्चा कुपोषित है। वहीं दक्षिण एशिया में 15 प्रतिशत बच्चे कुपोषित है। पाकिस्तान में 4 प्र.श. बच्चों को ही जीने के लिए जरूरी न्यूनतम आहार मिल पाता है। एशिया में पांच साल से कम उम्र के 7.9 करोड़ बच्चे कुपोषण के शिकार हैं। सन् 2030 तक 1.10 लाख लोगों को प्रतिदिन भुखमरी की रेखा से ऊपर लाने के प्रयत्न करने होंगे अन्यथा हालात चिंताजनक होते जाएंगे।

भारत की स्थिति

जहां तक भारत का सवाल है। पांच साल से कम उम्र के 21 फीसदी बच्चे कुपोषण शिकार हैं। देश में बाल कुपोषण 1998-2002 के बीच 17.1 फीसदी था, जो 2012-16 के बीच बढ़कर 21 फीसदी हो गया। दुनिया के पैमाने पर यह काफी ऊपर है। एक सच्चाई यह भी है कि पांच साल से कम उम्र के हर पांचवें बच्चे का वजन कम है और इस मोर्चे पर हम उत्तर कोरिया, बांग्लादेश और इराक से भी पीछे हैं। अंतरराष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान (आईएफपीआरआई) के ग्लोबल हंगर इंडेक्स (जीएचआई) की बात करें तो इसमें भारत 100वें स्थान पर पहुंच गया। यह रिपोर्ट पिछले साल अक्टूबर में ही आई थी। रिपोर्ट के अनुसार 2016 में विकासशील देशों के इस सूचकांक में भारत की रैंकिंग 97 थी, लेकिन एक साल में यह तीन पायदान और गिर गई।

लोगों को लोगों से जोड़ रहा केटीएस

हिन्दुस्तान के ब्रांडेड प्रॉडेक्ट और रोज काम आने वाली वस्तुओं को ई-कॉमर्स के जरिये सस्ती उपलब्ध करा रहे हैं निशित चपलोत

आयुर्वेद वास्तव में चिकित्सा की जितनी प्राचीन पद्धति है उतनी ही विश्वनीय भी है। इसमें रोगी को फायदा भले ही धीरे-धीरे होता है लेकिन पूर्ण रूप से होता है। यही कारण है कि वर्तमान में मेडिकल टेक्नोलॉजी और एलोपैथ ग्लोबल मार्केट के बीच भी आयुर्वेद की अपनी खास जगह और पहचान है। आने वाले समय में आयुर्वेद और ई-कॉमर्स यानी चैन मार्केटिंग ही बचा रहेगा। क्योंकि खान-पान, रहन-सहन और वातावरण में बदलाव के कारण घर-घर बीमारियों ने दस्तक देना शुरू कर दिया है।

ऐसे में आयुर्वेदिक औषधियां ही कारगर साबित होंगी। इसी प्रकार बढ़ते ग्लोबल मार्केट और आमजन की व्यस्तता से चैन मार्केटिंग लगातार बढ़ती जाएगी। आयुर्वेद और ई-कॉमर्स इन दोनों की लगातार बढ़ती डिमांड को 1991 में ही उदयपुर सेक्टर-14 निवासी निशित पुत्र जीतमल चपलोत ने भांप लिया। जीवन के कई उतार चढ़ाव, संघर्षों और चुनौतियों का सामना कर इन्होंने जुलाई 2018 में केटीएस प्राइम मर्चेंनडाइज प्राइवेट लिमिटेड नाम से डायरेक्ट सेलिंग मल्टिलेवल मार्केटिंग कंपनी की शुरुआत की। निशित के लिए मल्टिलेवल मार्केटिंग कंपनी बनाना सिर्फ एक सपना नहीं था बल्कि उनसे जुड़ने वाले हर एक शख्स को आर्थिक आजादी प्रदान करना था। निशित ने 'प्रत्यूष' को एक मुलाकात में बताया कि यह बात उनके जहन में हर बार गूंजती रहती थी। उन्होंने जब कंपनी खोली थी तो उस वक्त उनके पास डायबिटीज और जोड़ों के दर्द की दवा ही थी। लेकिन लगातार नया करने के जुनून और लोगों के विश्वास की बदौलत उन्होंने वर्तमान में 17 उत्पाद रजिस्टर्ड करवा दिए। निशित ने 2 वर्ष में लगभग 10 हजार से अधिक मल्टीलेवल मार्केटिंग लीडर के माध्यम से देश के कई राज्यों में कंपनी का विस्तार किया। उनका मानना है कि स्वच्छ भारत के साथ, स्वस्थ्य शरीर का होना जरूरी है। इसी को ध्यान में रखकर बेहतरीन और उच्च गुणवत्तापूर्ण आयुर्वेदिक उत्पादों का निर्माण करवाया जिससे मानव समाज शरीर को स्वस्थ्य रखते हुए आनंदपूर्ण जीवन यापन कर सके।

सर्व जन सुखाय मुख्य उद्देश्य

केटीएस का दृष्टिकोण मानव जाति की विभिन्न तरीकों से सेवा करना है। जिससे मानव समुदाय और अधिक ज्ञान अर्जित कर अधिक से अधिक आय प्राप्त करे और खुश रहे। कंपनी सक्षम स्मार्ट क्लास (कोचिंग) के माध्यम से समाज के हर तबके को शिक्षित करने के लिए प्रतिबद्ध है। निशित बताते हैं कि उनका लक्ष्य मानव समुदाय को खुश करने में सहायक बनना है। साथ ही ऐसे आयुर्वेटिक उत्पाद तैयार करना है जिससे मानव शरीर रोग मुक्त रह सके। इसके अलावा असाधारण व्यापार योजना के तहत सभी सदस्यों को और अधिक आय प्राप्त करने में मददगार बनना है।

सेवा के लिए किया ट्रस्ट का गठन

कंपनी के सामाजिक उत्तरदायित्वों को निर्वहन करने की दृष्टि से केटीएस मर्चेंनडाइज प्राइवेट लिमिटेड उदयपुर द्वारा केटीएस फाउंडेशन चेरिटबल ट्रस्ट का गठन किया गया। निशित चपलोत इसके फाउंडर मेनैजिंग ट्रस्टी तथा एडवोकेट मंजूद हुसैन शेख को फाउंउर सचिव बनया। यह ट्रस्ट 'केटीएस' कर्मा टुबर्डस सक्सेस यानी 'सघनता के लिए कार्य' के मूल मंत्र पर समाज के सभी वर्गों व श्रेणी के लोगों को सघनता के लिए कठोर श्रम हेतु प्रोत्साहित करने का लक्ष्य लेकर काम कर रही है। ट्रस्ट का संचालन शोभागपुरा स्थित कॉरपोरेट कार्यालय से किया जा रहा है।

केटीएस के उत्पाद

ग्लोयोकेयर, रूमावत, हर्टोलिप, ट्रिपल एक्स जोश, वेट गो, इम्युनोवेल, स्पिरूलिना, मल्टिविटामिन-13, प्रो न्युटीहर्ब, मेमोगेन ग्रेन्यूअलस, रजवाड़ी ठंडाई, तुलसी अमृत, केश रिच हेयर क्लीनर, केश रिच ऑयल आदि।

Director
Dr. D.C. Sharma
MD (Medicine)
DM (Endocrinology) AIIMS, Delhi
Former Prof. & Head Endocrinology,
RNT Medical College, Udaipur

डॉ.डी.सी.शर्मा

डायबिटीज़, थायरॉइड व हॉर्मोन्स हॉस्पिटल

सृजन हॉस्पिटल

डायबिटीज़ क्लिनिक

थायरॉइड रोग

मोटापा Obesity

अनचाहे बाल

ढिगनापन व विकास

सेक्स व यौन हॉर्मोन्स
सम्पर्क: 0946870718 9

गर्भावस्था में डायबिटीज़ व थायरॉइड रोग

डायबिटीज़ फुट (पाँव) थायरॉइड व अन्य ऑपरेशन

ब्लड प्रेशर क्लिनिक

नवीनतम उपचार व तकनीक

डायबिटीज़ चेकअप पैकेज, डायबिटीज़ एक्जीक्यूटीव चेकअप पैकेज
थायरॉइड पैकेज, सेक्स हॉर्मोन्स चेकअप पैकेज
सामान्य हेल्थ चेकअप पैकेज

उत्तरी भारत का सर्वश्रेष्ठ डायबिटीज़, थायरॉइड, सेक्स व हॉर्मोन्स हॉस्पिटल

111, आनन्द नगर, आयड़, लेकसिटी मॉल के सामने, उदयपुर (राज.)
फोन : 0294-2429690, 2429850, M.: 09468707189, 08949068184
www.drdcsharma.in srajanhospitalidth@gmail.com

ज़ायकेदार पालक

*सर्दियों में आने वाली हरी पत्तेदार भाजियां पौष्टिक व स्वादिष्ट होती हैं। पालक भी इनमें से एक है। जिसमें आयरन काफी मात्रा में पाया जाता है। इस बार **शिवनिका** बता रही हैं, पालक से बनी स्वादिष्ट और चटपटी रेसिपी के बारे में।*

काजू-दाल पालक

सामग्री : रोस्टेड काजू : 100 ग्राम, पालक : 250 ग्राम, मूंगदाल : एक चौथाई कप, टमाटर : 2, अदरक : 1 छोटी गांठ, हरी मिर्च : 1, नमक : स्वादानुसार, जीरा : 1 छोटा चम्मच, लाल मिर्च पाउडर : एक चौथाई छोटा चम्मच, गरम मसाला : आधा छोटा चम्मच, फेंटा हुआ दही : एक चौथाई कप, कॉर्न फ्लोर : एक छोटा चम्मच, रिफाइंड तेल : 1 छोटा चम्मच, घी : 2 छोटे चम्मच।

विधि : पहले पालक, मूंगदाल, टमाटर, अदरक और हरी मिर्च कुकर में उबाल लें। ठंडा होने पर मिक्सी में दरदरा पेस्ट बना लें। कड़ाही में तेल डालकर आंच पर रखें। तैयार पेस्ट और फेंटा हुआ दही डालें। स्वादानुसार नमक डालें। कॉर्न फ्लोर को थोड़े से पानी में घोल कर मिलाएं। काजू भी डाल दें। अच्छी तरह गाढ़ा होने तक पकाएं। आंच से उतारकर गरम मसाला बुरक दें। घी में जीरे और लाल मिर्च का छौंक तैयार करें। तैयार पालक पर कुछ रोस्टेड काजू ऊपर से डालें। जीरे, लाल मिर्च का छौंक डालकर गरम-गरम परोसें।

पालक भुर्जी

सामग्री : 1 गुच्छा पालक, 2 चम्मच तेल, 4 चम्मच लहसुन का पेस्ट, 1 चम्मच देसी घी, 2 चम्मच अदरक का पेस्ट, 2-3 कटे टमाटर, 1 चम्मच जीरा पाउडर, 1 चम्मच धनिया पाउडर, 3 मक्खन के क्यूब, 2 कटे प्याज, 2 चम्मच लाल मिर्च पाउडर, 100 ग्राम मसला हुआ पनीर, 4-5 बारीक कटी हरी मिर्च, थोड़ा-सा बारीक कटा हरा धनिया, आधा चम्मच अदरक की कतरन।

विधि : पालक साफ़ करके काट लें। कड़ाही में तेल गर्म करें। थोड़ा-सा लहसुन का पेस्ट, पालक व नमक डालें और पकने दें। इस मिश्रण को अलग रख लें। एक पैन में घी गर्म करें। लहसुन का पेस्ट, अदरक का पेस्ट डालें और भूनें। सुनहरा हो जाने पर टमाटर, जीरा पाउडर, धनिय पाउडर मिलाएं और पकाएं। अब पालक वाली कड़ाही में मक्खन गर्म करें और कटे प्याज डालकर भूनें। इसमें तैयार पालक, पके हुए टमाटर का मिश्रण, नमक, लाल मिर्च पाउडर, पनीर, हरी मिर्च और धनिया डालकर मिलाएं। थोड़ी देर इस मिश्रण को पकने दें। अदरक की क़तरन से सजाएं और गर्मागर्म सर्व करें।

पालक छोले

तीन चौथाई कप काबुली चने धोकर रात भर के लिए भिगो दें। अगले दिन कुकर में डेढ़ कप पानी व नमक मिलाकर उबलने रख दें। एक सीटी आने के बाद मध्यम आंच पर रखकर 20 मिनट पकने दें। अब आवश्यकतानुसार पालक के पत्ते को ब्लांच कर लें। पानी निथारकर तुरंत ठंडा पानी डालें, ताकि पत्तियों का हरा रंग बरक़रार रहे। इसी तरह टमाटर को भी नर्म होने तक ब्लांच करें और ठंडा होने पर छिलका उतार लें। अब एक चौथाई कप काजू को मिक्सर में पीसकर पाउडर बना लें। टमाटर की प्यूरी तैयार करें और फिर पालक के उबले पत्तों की प्यूरी बना लें। अब कड़ाही में एक चम्मच तेल गर्म करें और आधा चम्मच जीरा तड़काएं। इसमें आधा कप बारीक कटा प्याज व ज़रा-सा नमक डालकर सुनहरा होने तक भूनें। इसमें एक-एक चम्मच अदरक व लहसुन का पेस्ट डालें और एक मिनट तक भूनें। अब टमाटर प्यूरी डालें और पानी सूखने तक भूनें। इसमें एक चम्मच धनिया पाउडर, आधा चम्मच गरम मसाला और एक चम्मच कसूरी मेथी डालकर एक मिनट तक भूनें। अब पालक की प्यूरी डालें और मिलाएं। एक उबाल आने पर काजू का पाउडर डालें और मिलाएं। इसमें पके चने डालकर मिलाएं। आवश्यकता हो, तो पानी मिलाएं और पकने दें।

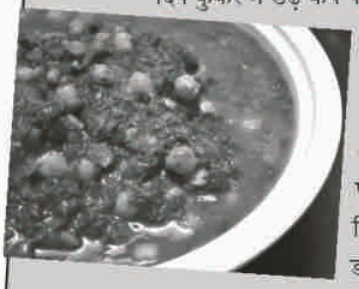

चमकन हरियाली

सामग्री : एक चौथाई किसा या कटा पनीर, 2-2 कप पालक व मेथी के गुच्छे(डंठल अलग कर पत्तियां साफ़ कर लें), मुट्ठीभर बारीक कटी मेथी, तीन चौथाई चम्मच जीरा, 1 बड़ा प्याज, 2-3 हरी मिर्च, 1 चम्मच लाल मिर्च पाउडर, 1 चम्मच धनिया पाउडर, आधा चम्मच मलाई, 6-8 भीगे हुए काजू, 1 चम्मच मगज बीज, चुटकीभर गरम मसाला पाउडर, डेढ़ चम्मच तेज, स्वादानुसार नमक।

विधि : 3 कप पानी में प्याज़ व हरी मिर्च डालें और लगभग 3 मिनट के लिए उबलने रख दें। आंच धीमी करें और मेथी व पालक डालकर 2 मिनट उबालें। आंच बंद कर ठंडा होने दें। उबला हुआ प्याज, हरी मिर्च और दोनों भाजियों का पेस्ट बना लें। एक चौथाई कप पानी में मगज़ के बीज डालकर 3-4 मिनट तक उबालें। इसे ठंडा करें और काजू मिलाकर पेस्ट बना लें। गहरी कड़ाही में तेल गर्म करें और जीरा तड़काएं। इसमें कच्ची मेथी डालें और 3-4 मिनट तक पकाएं। नमक, लाल मिर्च व धनिया पाउडर डालें और मिलाएं। इसमें प्याज, मिर्च और भाजियों का तैयार पेस्ट डालें और मिलाएं। 8-10 मिनट तक मध्यम आंच पर पकने दें। 1 कप पानी डालें और तेज़ आंच पर 3-4 मिनट तक पकाएं। अब काजू-मगज का तैयार पेस्ट व मलाई डालें। आंच धीमी कर दें और 4-5 मिनट तक पकने दें। सब्जी गाढ़ी चाहिए, तो अधिक पकाएं। अब किसा हुआ पनीर सब्जी में डालकर 1 मिनट के लिए मध्यम आंच पर पकाएं। नमक व गरम मसाला डालें। रोटी के साथ गर्मागर्म परोसें।

दावा

डॉक्टरों को एसीसी प्रशिक्षण मिले तो टल जाएंगी हजारों मौत

नई दिल्ली। भारत में प्रतिवर्ष लाखों लोगों की मौत चिकित्सकीय लापरवाहियों की वजह से होती है। डॉक्टरों और अस्पतालकर्मियों के लिए महज दो दिन का एक विशेष पाठ्यक्रम इस आंकड़े को घटाकर आधा कर सकता है।

यह पाठ्यक्रम इस बात पर केन्द्रित है कि गंभीर रूप से बीमार या जख्मी मरीज को इलाज के दौरान शुरुआत में किस तरह संभालना चाहिए। ब्रिटेन के रॉयल लीवरपुल यूनिवर्सिटी हॉस्पिटल में परामर्श चिकित्सक और प्रत्यारोपण विशेषज्ञ अजय शर्मा ने बताया कि एक्यूट क्रिटिकल केयर कोर्स(एसीसीसी) को 1980 के दशक की शुरुआत में तैयार किया गया था। हार्वर्ड विश्वविद्यालय द्वारा पिछले साल कराए गए एक अध्ययन में खुलासा हुआ था कि भारत में हर साल चिकित्सकीय लापरवाहियों की वजह से लाखों लोगों की जान चली जाती है।

जोखिम की पहचान में सक्षम

एससीसी का उद्देश्य शल्य चिकित्सा, प्रसूति, अस्थिरोग और आकस्मिक चिकित्सा समेत विभिन्न विशिष्टताओं वाले चिकित्सकों एवं सर्जन को मरीजों की हालत बिगड़ने के जोखिम की पहचान करने में सक्षम बनाना है। भारतीय अस्पतालों में इस पाठ्यक्रम को लागू करने से इस तरह की मौत के आंकड़ों को आधा किया जा सकता है। विदेशों में लागू किए गए इस प्रशिक्षण से शुरुआत में ही 10 फीसदी से ज्यादा लाभ दिखा। एसीसीसी प्रशिक्षण को पहली बार इंग्लैंड के हिल्सबोरफ आपदा के बाद प्रायोगिक तौर पर लाया गया।

देश में गंभीर स्थिति

- 50 लाख लोगों की मौत हो जाती है भारत में हर साल चिकित्सकीय लापवाही से
- 98 हजार लोगों की जान हर साल जाती है ब्रिटेन में इस लापरवाही से
- 0.4 लाख से ज्यादा लोगों की मौत हर साल अमेरिका में होती है
- 50 फीसदी तक कम किया जा सकता है मौत का आंकड़ा प्रशिक्षण के बाद
- 06 साल पहले भारत में एसीसीसी प्रशिक्षण को पहली बार लाया गया
- 450 डॉक्टरों को ही अब तक इसका प्रशिक्षण दिया जा सका है।

हेल्दी बनाने के मोह में बच्चों को न खिलाएं ठूंस कर खाना

उदयपुर में सम्पन्न हुई दो दिवसीय पहली कार्डियेक कॉन्फ्रेंस

कॉलेस्ट्रोल बढ़ने से हार्ट अटैक

बच्चों को हेल्दी बनाने के चक्कर में माता-पिता लाड-प्यार में इतना कुछ न खिलाएं कि वो बच्चों के लिए घातक बनता जाए। क्योंकि कम उम्र में ही उनके हृदय की नसों में कॉलेस्ट्रोल जमना शुरू हो जाता है। बच्चों का एक्टिविटी लेवल काफी ज्यादा होता है। ऐसे में कोई भी चीज लिमिट से ज्यादा होने पर वह नुकसानदायक हो जाती है।

यह बात 17-18 नवंबर को हार्ट एंड रिद्म सोसायटी, उदयपुर की ओर से आयोजित कार्डियेक कॉफ्रेंस-2018 के अंतिम दिन एपीआई चेप्टर और जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल की एकेडमिक पार्टनरशिप वाले समापन सत्र को संबोधित करते हुए महात्मा गांधी हॉस्पीटल जयपुर के कार्डियोलोजिस्ट डॉ. दीपेश अग्रवाल ने कही। उन्होंने बताया कि आईवीयूएस से हार्ट की धमनी के अंदर ब्लॉकेज, धमनी की मोटाई और ब्लॉकेज की स्थिति के साथ उसमें लगने वाले स्टंट व बैलून की साइज का पता अल्ट्रासाउंड से लगाया जाता है। ब्लॉकेज में जमा कैल्शियम को तोडने का काम रोटा एब्लेशन करती है। इससे धमनी में जमा कैल्शियम हटने से ब्लॉकेज छोटा रह जाता है। इसके बाद की गई एंजियोप्लास्टी से मरीज के हार्ट की नाड़ी के दूरगामी परिणाम बेहतर हो जाते हैं। प्रारंभिक सत्र में देश के 250 से अधिक हृदय रोग विशेषज्ञ और फिजिशियन हृदय रोग के कारण और निवारण पर मंथन के लिए जुटे। इसमें चेयरमैन डॉ. अमित खंडेलवाल ने कहा कि भारत में 26 साल से कम उम्र के लोगों में हृदय रोग का खतरा 34 प्रतिशत बढ़ जाता है। अकादमिक सत्र में बत्रा हार्ट सेंटर नई दिल्ली के डायरेक्टर डॉ. उपेंद्र कौल ने हार्ट फेल्योर में हृदय का पंपिंग फंक्शन कम होने के कारणों और उस समय की स्थिति पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि सडन हार्ट अटैक होता जरूर है लेकिन इसके लक्षण कहीं न कहीं हार्ट के भीतर लंबे समय से विद्यमान रहते हैं। जिससे रोगी अनजान होता है। कौल ने कहा कि हार्ट बीट तभी रुकती है जब उसे ऑक्सीजन न मिले यानी मांसपेशियों को खून न मिले। ये

अनियंत्रित जीवनशैली की वजह से होता है। मुंबई में होली फैमिली हॉस्पीटल में कार्डियेक विभाग के डायरेक्टर एव विभागाध्यक्ष डॉ. ब्रियान पुंटो ने हृदय के इलाज में नई दवाइयों जैसे आरनी आदि के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि सडन डेथ के शिकार सर्वाधिक युवा होते हैं। बढ़ते तनाव से उनकी जीवनशैली भी अव्यवस्थित हो गई है। मोटापे के कारण ट्राइग्लिसराइड्स और एलडीएल (बैड कोलेस्ट्रॉल) का स्तर बढ़ जाता है। इससे भी सडन हार्ट अटैक हो जाता है। पीएसआरआई हार्ट इंस्टीट्यूट नई दिल्ली के चेयरमैन डॉ. टी.एस क्लेर ने बताया कि हाईएंड पेसमेकर हार्ट फैल्योर के दौरान बहुउपयोगी साबित होता है। नई तकनीक के पेसमेकर छोटे होते हैं। इसकी बैट्री लाइफ 15 साल होने से यह 24 घंटे के दौरान मरीज के हृदय के फंक्शन की स्टडी करके ऑटोमेटिक काम शुरू कर देता है। होली फैमिली हॉस्पीटल गुरुग्राम के चेयरमैन एवं इंटरनेशनल कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. प्रवीण चंदा ने आधुनिक तकनीक के वाल्व से एओटिक वाल्व प्रत्यारोपण पर चर्चा की। डॉ. राहुल मेहरोत्रा ने कहा कि इको कार्डियोग्राफी से ब्लॉकेज की स्थिति का पता चलना आसान होता है। कांफ्रेंस में संरक्षक डॉ. एसके कौशिक, डॉ. कपिल भार्गव, डॉ. जे.के. छापरवाल और डॉ. मुकेश शर्मा भी मौजूद थे। दूसरे और अंतिम दिन डॉ. शोमू बोहरा ने क्विज प्रतियोगिता के डॉक्टर्स हृदय रोग संबंधित प्रश्न पूछकर तकनीकी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि ईसीजी इमरजेंसी में फर्स्ट पाइंट टेस्ट है। यह सबसे पहली और सबसे सस्ती जांच होती है। इससे आधी जानकारी का पता चल जाता है और उससे ही आगे का ट्रीटमेंट शुरू होता है। समापन सत्र के मुख्य अतिथि डॉ. एचके बैदी थे। कांफ्रेंस के अंत में देशभर से आए डॉक्टर्स का चेयरमैन डॉ. अमित खंडेलवाल, संरक्षक डॉ. एसके कौशिक, डॉ. कपिल भार्गव और डॉ. मुकेश शर्मा ने सोसायटी का स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

इनका हुआ सम्मान

देश के हृदय रोगियों के इलाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने पर डॉ. उपेंद्र कौल, डॉ. प्रवीण चंदा और डॉ. टीएस क्लेर को सोसायटी चेयरमैन डॉ. अमित खंडेलवाल ने सम्मानित किया। उदयपुर संभाग में हृदय रोगियों के इलाज एवं चिकित्सा शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने पर डॉ. एसके कौशिक, डॉ. एचके बेदी, डॉ. अरुण बोर्दिया, और डॉ. एचएनएस भटनागर का सम्मान किया गया।

-रिपोर्ट : उमेश शर्मा

सेहत के सखा-सहेली

सर्दी की मौसम में ऐसी कई चीजें हैं, जिनके दैनन्दिन उपयोग से स्वास्थ्य अच्छा रहता है। इनमें 'गरीबों का काजू' कहलाने वाली मूंगफली और इन दिनों बहुतायत में उपलब्ध आंवला भी है। मूंगफली में प्रोटीन की मात्रा भरपूर होती है, तो आंवला में भी रोगशामक अनेक औषधीय गुण हैं।

बलवर्धक मूंगफली

मूँगफली में प्रोटीन, चिकनाई और शर्करा पाई जाती है। एक अंडे के मूल्य के बराबर मूँगफलियों में जितनी प्रोटीन व ऊष्मा होती है, उतनी दूध व अंडे से संयुक्त रूप में भी नहीं होती। इसकी प्रोटीन दूध से मिलती-जुलती है, चिकनाई घी से मिलती है। मूँगफली के खाने से दूध, बादाम और घी की पूर्ति हो जाती है।

मूँगफली शरीर में गर्मी पैदा करती है, इसलिए सर्दी के मौसम में ज्यादा लाभदायक है। यह खाँसी में उपयोगी है व मेदे और फेफेड़े को बल देती है। भोजन के बाद यदि 50 या 100 ग्राम मूँगफली प्रतिदिन खाई जाए तो सेहत बनती है, भोजन पचता है, शरीर में खून की कमी पूरी होती है और मोटापा बढ़ता है। इसे भोजन के साथ सब्जी, खीर खिचड़ी आदि में डालकर नित्य खाना चाहिए। मूँगफली में तेल का अंश होने से यह वायु की बीमारियों को भी नष्ट करती है।

मुट्ठीभर भुनी मूँगफलियाँ निश्चय ही पोषक तत्वों की दृष्टि से लाभकारी हैं। मूँगफली में प्रोटीन, केलोरिज और विटामिन के, इ तथा बी होते हैं, ये अच्छा पोषण प्रदान करते हैं। मूँगफली पाचन शक्ति को बढ़ाती है, रुचिकर होती है, लेकिन गरम प्रकृति के व्यक्तियों को हानिकारक भी है। मूँगफली ज्यादा खाने से पित्त बढ़ता है अत: सावधानी रखें। देसी मूँगफली ज्यादा उपयोगी है।

गुणों का खजाना आंवला

आंवला सर्दी की मौसम में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। गृहणियां इसका उपयोग चटनी, मुरब्बे, चूर्ण, सब्जी, आचार आदि में करके अपने रोजमर्रा के भोजन को स्वादिष्ट बनाने के साथ-साथ औषधीय गुणों से युक्त पौष्टिक भी बना लेती हैं। आंवला में रोगशामक अनेक औषधीय गुण पाये जाते हैं। त्रिफला व च्यवनप्राश का तो आंवला एक प्रमुख घटक है। आयुर्वेद में इसे ठण्डी प्रकृति का, रक्तशोधक, भूख बढ़ाने वाला, नेत्र ज्योतिवर्द्धक, कफनाशक, रक्तपित्तनाशक, बुढ़ापा दूर करने वाला, हृदय व शरीर को निरोग करने वाला माना गया है।

कहां होता है फायदेमंद

- चक्कर आते हों या दिल घबराता हो तो आंवले का रस निकाल कर उसका शर्बत बनाकर पिएं। कुछ ही दिनों में राहत महसूस होगी।
- दिल जोरों से धड़कने की शिकायत हो तो प्रतिदिन आंवले का मुरब्बा खाएं।
- खूनी बवासीर से छुटकारा पाने हेतु सूखे आंवले के एक छोटे चम्मच चूर्ण को ताजा दही के रायते या छाछ में बुरक कर सेवन करें। सर्दियों में गुनगुने दूध के साथ आंवला चूर्ण का सेवन करने से खूनी बवासीर से छुटकारा मिलता है।
- कब्ज दूर करने के लिए भोजनोपरांत एक छोटा चम्मच आंवला चूर्ण गुनगुने पानी के साथ लें।
- अम्लपित्त की शिकायत दूर करने हेतु आंवला रस व मिश्री का प्रयोग करें।
- श्वेत प्रदर में एक छोटा चम्मच शहद व आधा चम्मच आंवला रस या चूर्ण प्रतिदिन लेने से कुछ हफ्तों बाद रोग दूर हो जाता है।
- पेशाब करते वक्त जलन होने पर दो चम्मच आंवला रस व शहद का रोजाना दोनों वक्त सेवन करें।
- खून की कमी दूर करने के लिए आधा कप आंवला रस व 2 चम्मच शहद रोजाना दोनों वक्त कुछ हफ्तों तक लें।
- हृदय रोग में आधा कप आंवला रस लेने से राहत महसूस होती है।
- गुर्दे में पथरी होने पर मूली व आंवला चूर्ण का प्रयोग करें। कुछ ही दिन बाद पथरी गल जाएगी।
- त्वचा में निखार लाने हेतु मिट्टी के सकोरे में सूखे आवंले की फांकें डालकर रात भर भिगो कर रखें। सुबह होने पर फांकों को मसलकर चेहरे व गर्दन में लगाकर कुछ मिनट बाद धो लें। हर हफ्ते करीब दो बार ऐसा करने से एक महीने पश्चात् ही त्वचा काफी निखर जाएगी।

– डॉ. शोभालाल औदिच्य आयुर्वेद विशारदी

वर्ष 2019 : छुट्टियों का कलैंडर

राखी और स्वतंत्रता दिवस एक ही दिन

जयपुर/प्रत्यूष ब्यूरो

राजस्थान सरकार की ओर से 2019 में छुट्टियों का कैलेंडर जारी कर दिया गया है। अवकाशों की सूची में 11 त्योहार शनिवार-रविवार को अवकाश वाले दिन ही होंगे। हालांकि अगले साल 4 बार ऐसे मौके आएंगे, जब एक सार्वजनिक अवकाश सहित 3 दिन लगातार छुट्टियां रहेंगी। साल में 3 अवकाश स्थानीय पर्वों पर जिला कलक्टर कर सकेंगे। फरवरी व जुलाई माह में सिवाय शनिवार-रविवार के कोई भी सार्वजनिक अवकाश नहीं होगा। स्वतंत्रता दिवस पर जिस दिन राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाएगा, उसी दिन भाइयों की कलाई पर बहनें रक्षा-सूत्र बांधेगी।

कैलेंडर में घोषित अवकाश

गुरु गोविन्द सिंह जयंती 13 जनवरी रविवार, गणतंत्र दिवस 26 जनवरी शनिवार, महाशिवरात्रि 4 मार्च सोमवार, होलिका दहन 20 मार्च बुधवार, धुलण्डी 21 मार्च गुरुवार, चेटीचंड 6 अप्रेल शनिवार, रामनवमी 13 अप्रेल शनिवार, अम्बेडकर जयंती 14 अप्रेल रविवार, महावीर जयंती 17 अप्रेल बुधवार, गुडफ्राइडे 19 अप्रेल शुक्रवार, परशुराम जयंती 7 मई मंगलवार, इदुलफितर(चांद से) 5 जून बुधवार, महाराणा प्रताप जयंती 6 जून गुरुवार, इदुलजुहा 12 अगस्त सोमवार, रक्षाबंधन 15 अगस्त गुरुवार, स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त गुरुवार, जन्माष्टमी 24 अगस्त शनिवार, रामदेव जयंती 8 सितम्बर रविवार, मोहर्रम(चांद से) सितम्बर मंगलवार, नवरात्र स्थापना 29 सितम्बर रविवार, गांधी जयंती 2 अक्टूबर बुधवार, दुर्गाष्टमी 6 अक्टूबर रविवार, विजयदशमी 8 अक्टूबर मंगलवार, दिवाली 27 अक्टूबर रविवार, गोवर्धन पूजा 28 अक्टूबर सोमवार, भैया दूज 29 अक्टूबर मंगलवार, बारावफात 10 नवम्बर रविवार, गुरुनानक जयंती 12 नवम्बर मंगलवार, क्रिसमस डे 25 दिसम्बर बुधवार।

2019 में विवाह के श्रेष्ठ मुहूर्त

माह	तारीख
जनवरी	17, 18, 22, 23, 25 और 29
फरवरी	9, 10 और 21
मार्च	7, 8, 9 और 12
अप्रैल	16, 17, 18, 19, 20 और 22
मई	6, 7, 12, 17, 18, 19, 28, 29 और 30
जून	8, 9, 10, 11, 12, 16, 24 और 25
जुलाई	7, 8, 10 और 11
नवम्बर	19, 20, 21, 22, 23, 28 और 30
दिसम्बर	11

पाठकपीठ

न्याय की लंबी और खर्चीली डगर

प्रत्यूष का संपादकीय 'मुकदमों के बोझ से दबा इंसाफ' नवंबर

अंक की खास विशेषता थी। देश की अदालतों में लाखों मुकदमे लम्बित हैं। लोग न्याय के लिए दर-दर भटक रहे है। समय पर इंसाफ नहीं मिलने से कई घर बर्बाद हो चुके हैं। इस स्थिति का मतलब है हताशा, निराशा और आमजन का कानून पर से विश्वास उठना। इंसाफ की लंबी और खर्चीली डगर को कम करने के लिए रिक्त पदों पर भर्ती के त्वरित कदम उठाने के साथ फास्ट ट्रेक कोर्ट के गठन की आवश्यता है।

राहुल अग्रवाल, चेयरमैन, पैसेफिक यूनिवर्सिटी

त्योहार अपनों को लाता है करीब

दीपावली के दिन राष्ट्रीय एकता का स्वर्णदीप हर एक हृदय में जगमगाता है। वाकई त्योहार अपनों के अपनों से करीब होने का अहसास करवाते हैं। 'प्रत्यूष' के दीपावली विशेषांक ने हमें इस बार यही आभास करवाया।

शांतिलाल जैन,
उद्योगपति

स्वास्थ्य के प्रति सजगता जरूरी

पारिवारिक पत्रिका 'प्रत्यूष' में प्रकाशित होने वाले आलेख काफी सारगर्भित, सामयिक व पठनीय होते हैं। यह सामाजिक सरोकार वाली मासिक पत्रिका है। सभी विषयों पर निष्पक्ष राय रखने वाली पत्रिका के 16 साल की सफलतम प्रकाशन यात्रा पूरी करने पर शुभकामनाएं।

डॉ. जिनेंद्र शास्त्री, जिलामंत्री, भाजपा

बाबाओं से बाय-बाय...

धर्म की आड़ में अनैतिक गतिविधियों में लिप्त बाबाओं की करतूतें परत-दर परत खुलने के बाद उनसे आमजन का विश्वास उठता जा रहा है। नवंबर के अंक में 'बाय-बाय...' पढ़ने के बाद लगा कि अगर ऐसा ही चलता रहा तो बाबाओं को देखते ही लोग बाय-बाय कहने की हद पार कर और कुछ कर बैठेंगे।

कैलाश अग्रवाल,
व्यवसायी

कुरुक्षेत्र में द्वादश कुंभ जागरण

धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में सदियों से विलुप्त कुंभ एक बार फिर आयोजित होने जा रहा है। 5, 6, और 7 दिसम्बर को धर्मनगरी में कुंभ का योग बन रहा है। जब वृश्चिक राशि में सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति एक साथ होंगे, तब 5 दिसम्बर रात 10 बज कर 23 मिनट पर यह दुर्लभ योग शुरू हो जाएगा, जो ढाई दिन तक चलेगा। मान्यतानुसार द्वादश महाकुंभ के इस योग में कुरुक्षेत्र स्थित ब्रह्मसरोवर में स्नान करने से चारों धामों की तीर्थयात्रा के फल के साथ ही सांसारिक, मानसिक सभी पाप-ताप से मुक्ति मिलती है। वर्तमान में चार स्थानों-हरिद्वार, प्रयाग, नासिक और उज्जैन में कुंभ लगता है। लेकिन वैदिक काल से भारतवर्ष में 12 तीर्थों पर कुंभ स्नान का वर्णन मिलता है। द्वादश कुंभ के प्रमाणों की बात करें, तो परमहंस स्वामी करपात्री जी महाराज ने भी 'कुंभ पर्व निर्णय' पुस्तक में देवताओं के 12 दिनों में और मनुष्यों के 12 वर्षों में 12 कुंभ पर्वों का वर्णन किया है -

'देवानां द्वादशाहोभिर्भर्त्यैद्वादशवत्सरैः।
जायन्ते कुम्भपर्वाणि तथा द्वादशसंख्यया।।'

शिव-पार्वती संवाद पर आधारित 'रुद्रयामलोक्ताअमृतीकरणप्रयोग' ग्रंथ में भी देश के 12 स्थानों पर अलग-अलग 12 मास में कुंभ के आयोजन का वर्णन आता है। इस ग्रंथ के श्लोक संख्या 122 से 128 के अनुसार, सूर्य, चंद्र एवं गुरु के योग से सिंह राशि में नासिक, मिथुन राशि में जगन्नाथपुरी, मीन राशि में कामाख्या, धनु राशि में गंगासागर, कुंभ राशि में कुंभकोणम, तुला राशि में शाल्मलीवन अर्थात सिमरियाधाम, वृश्चिक राशि में कुरुक्षेत्र, कर्क राशि में द्वारका, कन्या राशि में रामेश्वरम्, मेषार्क मेष राशिगत गुरु में हरिद्वार, मकरार्क मेष राशिगत गुरु में प्रयाग और मेषार्क सिंहस्थ गुरु में उज्जैन में कुंभ का योग होता है। इस दौरान इन सभी

तीर्थस्थानों में अमृतघट के संयोग से जल अमृतमय हो जाता है इन प्रमाणों से स्पष्ट है कि भारत में कभी 12 स्थानों पर कुंभ की परम्परा थी, जिसमें कुरुक्षेत्र का भी वर्णन आता है। हालांकि कालांतर में प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक को छोड़ कर आठ जगहों पर कुंभ परम्परा का लोप हो गया। कुंभकोणम(तमिलनाडु) में कुंभ महाल्या के रूप में आज भी कुंभ की परम्परा है। हालांकि वहां महीनों का आयोजन न होकर एक दिन में ही सारा कार्यक्रम संपन्न हो जाता है।

वर्ष 2011 से सर्वमंगला अध्यात्म योग पीठ, सिमरिया के परमाचार्य स्वामी चिदात्मन महाराज समेत हजारों साधु-संतों और लाखों धर्म प्रेमियों के सद्प्रयासों से सुप्त आठ कुंभ स्थलियों को फिर से जागृत करने का अभियान शुरू किया गया। अब इसी क्रम में कुंभ का पुनर्जागरण कुरुक्षेत्र में भी होने वाला है। सात वन, नौ नदियों और पांच कूपों में सुसज्जित 48 कोस में फैली कुरुक्षेत्र की पावन भूमि ऋषियों, मुनियों और देवताओं की तपस्थली, कर्मभूमि और यज्ञभूमि के रूप में विख्यात है।

- राज सहाय

निःशुल्क नेत्र सेवा प्रकल्प

दीपावली एवं नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

सोमवार से शनिवार

तारा संस्थान

के नेत्र चिकित्सालय तारा नेत्रालय में निःशुल्क

PHACO पद्धति द्वारा मोतियाबिन्द ऑपरेशन,

नेत्र परीक्षण एवं लेन्स प्रत्यारोपण तथा चश्मे के नम्बर

236, सेक्टर 6, हिरण मगरी (जे.बी. हॉस्पीटल के पास वाली गली),
उदयपुर-313002 (राज.) भारत (+91) 9549399993, 9649399993

कैसा रहेगा आपके लिए यह माह ?

पं. शोभालाल शर्मा

माह के प्रमुख उत्सव

दिनांक	तिथि	पर्व/त्योहार
2 दिसम्बर	मार्गशीर्ष कृष्णा 10	महावीर स्वामी दीक्षा कल्याणक
12 दिसम्बर	मार्गशीर्ष शुक्ला 5	श्रीराम-जानकी विवाहोत्सव
14 दिसम्बर	मार्गशीर्ष शुक्ला 7	नरसी मेहता जयंती
18 दिसम्बर	मार्गशीर्ष शुक्ला 10	गीता जयंती
21 दिसम्बर	मार्गशीष शुक्ला 14	संभवनाथ जयंती
22 दिसम्बर	मार्गशीर्ष शुक्ला 15	दत्तप्रभु जयंती
25 दिसम्बर	पौष कृष्णा 3	यीशु जयंती(क्रिसमस)
31 दिसम्बर	पौष कृष्णा 10	पार्श्वनाथ जयंती

मेष

माह के पूर्वार्द्ध में किंकर्तव्यविमूढ़ सी स्थिति में रहेंगे, जबकि उत्तरार्द्ध सकून भरा है। प्रेम प्रसंग में हानि उठानी पड़ सकती है, आर्थिक पक्ष में भी उलझने रहेंगी। लम्बे समय से चली आ रही शारीरिक समस्याओं से निजात मिलेगी, कर्म क्षेत्र में सन्तुलन बनाए रखना ही श्रेष्ठ होगा। संतान पक्ष सामान्य, दाम्पत्य जीवन श्रेष्ठ।

वृषभ

राशि स्वामी का स्व राशि में भ्रमण नई ऊर्जा से ओत-प्रोत रखेगा, साझेदारी लाभप्रद रहेगी, खर्चों में बढ़ोतरी होगी, आय-व्यय पर नियन्त्रण रखें, स्वभाव से परिवार में असंतुष्टि, भाई-बहिनों से व्यर्थ विवाद संभव।

मिथुन

परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न होंगे, शिक्षा के क्षेत्र में प्रयास आपको सफलता दिलाएगा। नये विचार, नई सोच के साथ नए कार्यों का सृजन होगा। आपके तर्क से लोग प्रभावित होंगे, आर्थिक पक्ष मजबूत होगा, स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देवें, व्यापार में हालात पहले से बेहतर होंगे, जीवन साथी का सहयोग बराबर मिलता रहेगा।

कर्क

मन एवं आत्मा में अंतर्द्वंद्व चलने से निर्णय क्षमता प्रभावित होगी। आय पक्ष सुदृढ़ बनेगा, लेकिन उधार दिये धन की प्राप्ति न होने से मन अशांत रहेगा। अनावश्यक कार्यों में समय व्यतीत हो सकता है। किसी पर भी पूर्ण भरोसा न करें। दाम्पत्य जीवन में असंतोष की स्थिति बनेगी।

सिंह

भौतिक सुख में वृद्धि होगी, किसी अजनबी व्यक्ति के सहयोग से कोई विशेष कार्य बनेगा, गहरे विचार एवं चिन्तन से समस्याओं का हल निकलेगा, फिजूल खर्च से बचें। किसी को भी उधार नहीं दें, आय पक्ष सन्तोषप्रद रहेगा। पेट सम्बंधी समस्याओं से निजात मिल सकती है लेकिन वैवाहिक जीवन में कटुता रहेगी।

कन्या

राशि स्वामी का उदित होकर मार्गी होना, नई ऊर्जा का संचार करेगा, भूतकालिक गिले-शिकवे दूर होंगे, आर्थिक पक्ष को कुछ उलझनें प्रभावित करेंगी। पैतृक मामले पक्ष में बनेंगे, परिवार के साथ बैठकर नया काम कर पायेंगे, संतान की ओर से परेशानियां संभव।

तुला

तुलना : नई ऊर्जा एवं शक्ति से ओत-प्रोत रहेंगे। राज्य कर्मचारियों को यह महीना परेशानी में डाल सकता है, इसलिए लापरवाही कदापि नहीं करें, पैतृक मामले लाभ दिलायेंगे। स्वास्थ्य की दृष्टि से आपको माइग्रेन या वात सम्बन्धी समस्या उत्पन्न हो सकती है, कार्य क्षेत्र में अड़चनें सम्भव, दाम्पत्य जीवन उत्तम रहेगा।

वृश्चिक

अति आत्मविश्वास से हानि की सम्भावनाएं, शत्रु पक्ष हावी होने का प्रयास करेगा, सतर्कता बरतें। विकट परिस्थिति में विश्वस्त मित्रों या रिश्तेदारों के साथ विचारों का आदान-प्रदान करें। इससे राहत महसूस करेंगे एवं लाभ होगा। आय पक्ष ठीक, स्वास्थ्य सामान्य, व्यवसाय एवं नौकरी में तरक्की संभव। दैनन्दिन भी कार्य में जीवन साथी का पूर्ण सहयोग लेवें।

धनु

धनु : माह का उत्तरार्द्ध श्रेष्ठ रहेगा, न्यायिक क्षेत्र से जुड़े लोगों से लाभ प्राप्त होगा, अनावश्यक व्यस्तता रहेगी, पारिवारिक रिश्तों में मधुरता आएगी, अपने तर्क से लोगों को प्रभावित करेंगे, लम्बे समय से चले आ रहे ऋण से मुक्ति सम्भव है। शत्रु पक्ष पर हावी रहेंगे, आय के नये स्रोत खुलेंगे, मानसिक थकान से व्यथित रहेंगे, भाग्य सामान्य, गृहस्थ जीवन में तालमेल की कमी

मकर

भौतिक सुखों में अत्यधिक लिप्तता परेशानी का सबब बन सकती है, परिवार में तनावपूर्ण माहौल रह सकता है। जिससे मन अशान्त रहेगा, सन्तान पक्ष से हर्ष एवं खुशखबरी मिलेगी, आय पक्ष उत्तम, परन्तु आय-व्यय में सन्तुलन बिठाना आवश्यक। दाम्पत्य जीवन में परेशानी, व्यवसाय एवं नौकरी में नये आयाम, सांस सम्बन्धी परेशानी रहेगी।

कुम्भ

यह माह हर्षोल्लासित एवं आनन्दित करने वाला रहेगा, आपकी लोकप्रियता में वृद्धि रहे, सामाजिक प्रतिष्ठा एवं मान-सम्मान मिलता रहे, एक तरफा लगाव खुशियाँ उजाड़ सकती है, आय पक्ष उत्तम, भाग्य का पूर्ण सहयोग रहेगा, आंखों से सम्बन्धित समस्याएं उभर सकती है, राजकीय एवं न्यायालयिक मामले आपके पक्ष में रहेंगे, जीवन साथी का सहयोग लेकर आगे बढ़ें।

मीन

यह माह मिश्रित फलदायी प्रतीत होता है, अचानक यात्रा के कारण आपाधापी एवं तनाव का शिकार हो सकते हैं। आपके बुजुर्ग एवं वरिष्ठों की अपेक्षाएं भी परेशानी का कारण बन सकती हैं, मधुमेह से ग्रसित जातक विशेष सावधानी बरतें, व्यवसाय करने वालों के लिये अच्छा समय, परन्तु नौकरी वाले अपने काम के बोझ से परेशान एवं संतान पक्ष से असन्तुष्ट रहेंगे।

लक्ष्यराज को 'यंग होटेलियर ऑफ द ईयर' अवार्ड

उदयपुर। द फैडरेशन ऑफ होटल एण्ड रेस्टोरेन्ट एसोसिएशन ऑफ इंडिया(एफएचआरएआई)की तरफ से लखनऊ के होटल रमाडा में आयोजित भव्य समारोह में एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स के निदेशक लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ को यंग होटेलियर ऑफ द ईयर 2018 के अवार्ड से नवाजा गया। मेवाड़ को यह सम्मान उत्तरप्रदेश के उपमुख्यमंत्री डॉ. दिनेश शर्मा ने प्रदान किया। एफएचआरएआई के अध्यक्ष डॉ. गिरीश ओबेराय ने कहा, एसोसिएशन को लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ द्वारा समय-समय पर दिए गए सुझाव होटल व्यवसायियों के लिए अहम साबित हुए हैं।

'कल भी सूरज उगेगा' का विमोचन

उदयपुर। बाल विनय मन्दिर उच्च माध्यमिक स्कूल, हरिदास जी की मगरी में नितिन मेनारिया की पुस्तक 'कल भी सूरज उगेगा' का पिछले दिनों विमोचन किया गया। अध्यक्षता संस्था प्रधान शंकरलाल मेनारिया ने की। मुख्य अतिथि डॉ. अरविन्द सिंह और विशिष्ट अतिथि डॉ. मलय पानेरी, डॉ. मनीषा शर्मा व रजनेश कुमार यादव थे। मेनारिया ने बताया कि पुस्तक में सृजनात्मकता के साथ-साथ सकारात्मकता प्रदान करने का प्रयास किया गया है।

नेहा को सर्वश्रेष्ठ छात्रा सम्मान

उदयपुर। गीतांजली इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नीकल स्टडीज की एमटेक वीएलएसआई डिजाइन विषय की छात्रा नेहा शर्मा को राजस्थान तकनीकी विवि कोटा में आयोजित दीक्षांत समारोह में कुलपति एनपी कौशिक ने सम्मानित किया। निदेशक डॉ. विकास मिश्र ने बताया कि गेट की परीक्षा उत्तीर्ण नेहा ने रिसर्च स्कॉलर के तौर पर गिट्स में प्रवेश लिया है। प्रदेश की पांच सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थियों में शामिल नेहा को दीक्षांत समारोह कोटा में शामिल होने का अवसर मिला है। इलेक्ट्रोनिक्स एण्ड कम्यूनिकेशन के विभागाध्यक्ष प्रो. राजीव माथुर, वित्त नियन्त्रक बी एल जांगिड़ व एमटेक समन्वयक अनुराग पालीवाल ने छात्रा के उज्जवल भविष्य की कामना की।

डॉ. ज्योति का अभिनंदन

उदयपुर। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग, राजस्थान द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस पर वरिष्ठ स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. ज्योति चौधरी को जयपुर में राज्यस्तरीय सम्मान प्रदान किया गया। उदयपुर लौटने पर रोटरी क्लब 'मीरा', फैडरेशन ऑफ एनजीओ, राजस्थान व चिकित्सा ज्योत ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में सरल ब्लड बैंक सभागार में उनका स्वागत-अभिनंदन किया गया। मुख्य अतिथि सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के उपनिदेशक गिरीश भटनागर व विशिष्ट अतिथि 'प्रत्यूष' के प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी व रोटरी क्लब 'मीरा' की अध्यक्ष प्रीति सोगानी थी। अध्यक्षता समाजसेवी सीए श्याम एस. सिंघवी ने की। संचालन ज्ञान हेल्थ इंस्टीट्यूट सोसायटी के डॉ. ओ. पी. महात्मा ने किया। इस अवसर पर वीणा सनाढ्य, डॉ. के. एस. मोगरा, उमेश शर्मा, विजय सिंह कच्छावा, भरत कुमावत, विनोद पाण्डे, डॉ. नरेन्द्र सिंह देवड़ा, वैद्य शिवनारायण व्यास, सत्यनारायण चौबीसा, विमला मेहता, डॉ. सुनील शर्मा, रमेशराज सुवालका सहित अनेक गण्यमान्य नागरिक उपस्थित थे।

सनाढ्य प्रतिभाएं सम्मानित

उदयपुर। अखिल भारतीय सनाढ्य प्रतिभा सम्मान समारोह में समाज की प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. इंदुशेखर शर्मा और डॉ. सतीशचन्द्र तिवारी थे। विशिष्ट अतिथि न्यायमूर्ति भूपेन्द्र सनाढ्य, के. के. शर्मा, जमनालाल तिवारी व प्रमोद सनाढ्य थे। प्रवक्ता डॉ. अनिल शर्मा ने बताया कि राष्ट्रीय स्तर पर दसवीं बोर्ड श्रेणी में अन्ता (कोटा) की पूर्वी शर्मा 95.83 प्रतिशत अंक प्राप्त कर प्रथम रही। उदयपुर की समृद्धि शर्मा को द्वितीय तथा नाथद्वारा के शुभ जोशी को तृतीय पुरस्कार दिया गया। बारहवीं बोर्ड की परीक्षा में नाथद्वारा के अविरल सनाढ्य और अधिश्री सनाढ्य को 92.8 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर पुरस्कृत किया गया। द्वितीय पुरस्कार उदयपुर के मेघांश शर्मा और तृतीय पुरस्कार कांकरोली की श्रेया सनाढ्य दिया गया। स्नातक श्रेणी में अहमदाबाद की राशि शुक्ला प्रथम, जयपुर की रुचिका सनाढ्य द्वितीय

और उदयपुर की प्राची सनाढ्य तृतीय रही। अधिस्नातक श्रेणी में कांकरोली की विदुषी सनाढ्य को पुरस्कृत किया गया। सर्व ब्राह्मण समाज में समर्पित सेवा के लिए 'महर्षि वशिष्ट सेवा सम्मान' विप्र फाउंडेशन जोन 1ए के अध्यक्ष केके सनाढ्य को दिया गया। संचालन अर्जुन सनाढ्य ने किया।

द स्कॉलर्स एरिना को चल वैजयन्ती

उदयपुर। 'द स्कॉलर्स एरिना गर्ल्स बी.एड. कॉलेज' की छात्राध्यापिका प्रेमलता सुथार एवं आकांक्षा जैन ने हाल ही में रविन्द्रनाथ टैगोर स्नातकोत्तर महाविद्यालय कपासन में राज्यस्तरीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त कर 5001 एवं 3001 रुपये का नकद पुरस्कार प्राप्त किया। इसी तरह मातेश्वरी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में आयोजित राज्यस्तरीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर संयुक्त रूप से चल वैजयन्ति प्राप्त की। इस उपलब्धि पर उन्हें महाविद्यालय के प्रशासक डॉ. लोकेश जैन द्वारा सम्मानित किया गया।

प्रदर्शनी में झलकी बच्चों की प्रतिभा

उदयपुर। बोहरा समाज के धर्मगुरु सैयदना सा. द्वारा इन्दौर में आयोजित आशूरा कार्यक्रम के दौरान दिए गए 8 विषयों को ध्यान में रखते हुए स्थानीय सैफी, सी. सै. स्कूल में पिछले दिनों एक दिवसीय चित्रकला प्रदर्शनी हुई। उद्घाटन देश के ख्यातनाम आर्टिस्ट वाजिद खान ने किया। प्रदर्शनी में पहाड़, प्रकृति, नदी, पशु, बादल, फूल आदि विषयों पर कक्षा 3 से 12 तक के बच्चों ने अपनी कल्पनाओं को कागज पर उकेरा तो समाज का हर एक व्यक्ति अचंभित रह गया। प्रदर्शनी में उदयपुर सहित सलूम्बर, परतापुर, डूंगरपुर के करीब 350 बच्चों ने अपनी कला का परिचय दिया।

रोटरी सेवा सम्मान से 15 जने सम्मानित

उदयपुर। रोटरी क्लब पन्ना की ओर से पिछले दिनों रोटरी व्यावसायिक सेवा सम्मान आयोजित किया गया, जिसके तहत 15 जनों को सम्मानित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि रोटरी के पूर्व प्रान्तपाल निर्मल सिंघवी थे। क्लब अध्यक्ष तारिका भानुप्रताप सिंह ने बताया कि सिंघवी के नये सदस्यों को रोटरी पिन लगाकर सम्मानित किया। विशिष्ट अतिथि सहायक प्रान्तपाल श्रद्धा गट्टानी एवं

मधु सरीन थी। इस अवसर पर सचिव कमल गौड़, भावना माहेश्वरी, उमेश मनवानी, सुरेन्द्र औदिच्य, निहार बापना, दीपक माहेश्वरी आदि मौजूद थे।

योजना मंच का उद्घाटन

उदयपुर। राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के संघटक माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी महाविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग में पिछले दिनों योजना मंच का उद्घाटन एवं विस्तार व्याख्यान का आयोजन किया गया। 'पर्यावरणीय समपोषित तथा कुशलक्षेम का अर्थशास्त्र' विषय पर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, किशनगढ़ के प्रो. गणेश कावड़िया ने अर्थशास्त्र के विभिन्न आयामों की जानकारी दी। मुख्य अतिथि, कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने कहा कि भारत के युवा वर्ग को भारतीय अर्थव्यवस्था के समावेशी विकास के प्रयत्न करने चाहिए। परन्तु अपनी संस्कृति को भी नहीं भूलना चाहिए। उन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास से जुड़ी कुछ चुनौतियों पर भी चर्चा की और कहा कि विकास में सामंजस्य की आवश्यकता होती है। विशिष्ट अतिथि रियाज हुसैन, डिप्टी रजिस्ट्रार थे। अध्यक्षता प्रो. सुमन पामेचा आचार्य, श्रमजीवी महाविद्यालय ने की।

डेस्टिनी-125 स्कूटर लॉन्च

उदयपुर। हीरो मोटो कॉर्प ने 125 सीसी स्कूटर सेगमेंट में प्रवेश करते हुए 15 नवम्बर को आई 3 एस और आइडल स्टार्ट स्टॉप तकनीक वाला स्कूटर डेस्टिनी 125 को सेलिब्रेशन मॉल में लॉन्च किया। इस अवसर पर 5 स्कूटर की डिलीवरी ग्राहकों को दी गई। कंपनी के टेरिटरी सेल्स मैनेजर राहुल कलाल ने बताया कि एल एक्स व वीएक्स वेरीयंट में स्कूटर शहर के तीनों डीलर वीएसएस हीरो, रॉयल हीरो मोटर्स एवं मनामा हीरो मोटर्स के शोरूम पर उपलब्ध है। सेल्स हेड संजय भान ने बताया कि स्कूटर में 6750 आरपीएम पर 8.7 बीएचपी का पावर आउटपुट और 5000 आरपीएम पर 10.2 एन एम का अधिक टार्क पैदा करता है। लांचिग कार्यक्रम में बीएसएस हीरो के सतपाल सिंह, रॉयल मोटर्स के शेख शब्बीर मुस्तफा तथा मनामा मोटर्स के हुसैन मुस्तफा मौजूद थे।

हिन्दुस्तान ज़िंक को 'नॉन-फेरस बेस्ट परफोरमेन्स अवार्ड'

उदयपुर। विश्व की अग्रणी जस्ता-सीसा एवं चांदी उत्पादक कंपनी हिन्दुस्तान जिंक को 'नॉन-फेरस लार्ज इण्टिग्रेटेड मैन्यूफैक्चरिंग प्लान्ट्स' की श्रेणी में उत्कृष्ट कार्य के लिए 'इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ मेटल्स नॉन-फेरस बेस्ट परफोरमेन्स अवार्ड-2018' से पुरस्कृत किया गया है। यह अवार्ड कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारत सरकार के इस्पात मंत्रालय के सचिव विनय कुमार ने इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ मेटल्स द्वारा 56वें राष्ट्रीय धातुकर्मी दिवस समारोह के अवसर पर कोलकाता में आयोजित एक भव्य समारोह में 14 नवम्बर को प्रदान किया। हिन्दुस्तान ज़िंक की ओर से यह अवार्ड मनोज नसीने, यूनिट हेड-ज़िंक स्मेल्टर देबारी एण्ड शीबा मशूरवाला, उप-प्रबन्धक-टेक्नोलॉजी डवलपमेंट ने ग्रहण किया। हिन्दुस्तान ज़िंक के वाइस प्रेसीडेन्ट एण्ड हेड-कार्पोरेट कम्यूनिकेशन पवन कौशिक ने बताया कि यह पुरस्कार हिन्दुस्तान ज़िंक के जीरो वेस्टेज एवं जारी डिस्चार्ज के प्रयासों को प्रमाणित करता है।

108 यूनिट रक्तदान

उदयपुर। राउण्ड टेबल इण्डिया, लेडीज सर्किल इण्डिया के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित सेवा सप्ताह के तहत गत दिनों मधुबन स्थित पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल में रक्तदान शिविर लगाया गया। राउण्ड टेबल इण्डिया के वरूण मुर्डिया ने बताया कि शिविर में 50 यूनिट ब्लड एकत्रित करने के लक्ष्य के मुकाबले 108 यूनिट एकत्रित किया गया। इस अवसर पर 80 बार से अधिक रक्तदान करने वाले रविन्द्रपाल सिंह कप्पू व दिनेश चोर्डिया को सम्मानित किया।

पारिवारिक हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रत्यूष
मंगवाने के लिए निम्न नम्बरों पर सम्पर्क करें
75979-11992
9414157703

सूक्ष्म कृति शिल्पकार चन्द्रप्रकाश चित्तौड़ा द्वारा निर्मित 'दीप-यात्रा' का विमोचन करते हुए पद्मश्री कैलाश 'मानव', भंवर सेठ, विष्णु शर्मा हितैषी, डॉ. देवेन्द्र सरीन एवं मधु सरीन।

शोक समाचार

उदयपुर। वरिष्ठ कांग्रेस नेता और यूआईटी के पूर्व चेयरमैन **रूपकुमार जी खुराना** का 18 नवम्बर 2018 को देहावसान हो गया। वे पिछले कुछ समय से अस्वस्थ थे। उनके निधन पर पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष सचिन पायलट, पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. सी. पी. जोशी, सीडब्ल्यूसी सदस्य रघुवीर सिंह मीणा, पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. गिरिजा व्यास, प्रदेश कांग्रेस सचिव पंकज कुमार शर्मा, शहर कांग्रेस अध्यक्ष गोपाल कृष्ण शर्मा, देहात जिलाध्यक्ष लालसिंह झाला, गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया, यूआईटी चेयरमैन रविन्द्र श्रीमाली, सहित अनेक राजनेताओं और सिंधी समाज के प्रमुखों ने श्रद्धा सुमन अर्पित किये हैं। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती सरोज देवी, पुत्र राजीव व विकास खुराना, पुत्री साधना लालवानी तथा पौत्र-पौत्रियों दोहित्र-दोहित्रियों का समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

रानी रोड पर राजीव गांधी उद्यान खुराना की ही देन है। दो बार यूआईटी चेयरमैन रहे खुराना ने अपने पहले कार्यकाल में इस पार्क का विकास शुरू करवाया। साइफन-बेदला मार्ग पर नदी की रपट के स्थान पर ऊंची पुलिया बनवाई थी। भुवाणा-प्रतापनगर बाईपास को टू लेन से फोर लेन किया। वे उदयपुर नगर परिषद अध्यक्ष, डेयरी चेयरमैन तथा तीन बार शहर कांग्रेस के अध्यक्ष रहे। खुराना सिंधी समाज की विभिन्न पंचायतों के संरक्षक भी थे।

उदयपुर। शिक्षक नेता एवं समाजसेवी **श्री अर्जुन जी मंत्री** का 4 नवम्बर 2018 को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे पुत्र नरेन्द्र-शर्मिला, श्रीमती संतोष(पत्नी स्व. प्रकाश मंत्री), पुत्री किरण नामधर सहित पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों व भाई-भतीजों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। मंत्री की आजीवन एक जुझारू शिक्षक नेता के रूप में पहचान रही। वे शिक्षकों व राज्य कर्मचारियों की वाजिब मांगों को लेकर कई सफल आन्दोलनों के प्रणेता रहे। वे राजस्थान शिक्षक संघ के सभाध्यक्ष, पेंशनर हितकारी सहकारी समिति के अध्यक्ष व राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के सदस्य भी रहे। वे अपने मृदुल व्यवहार व शिक्षकों के हित में किए संघर्ष के लिए याद किये जाते रहेंगे।

उदयपुर। मावली पंचायत समिति के पूर्व प्रधान दिलीप जी प्रभाकर की माता **श्रीमती गुलाब देवी जी** (धर्मपत्नी श्री हनुमान प्रभाकर पूर्व मंत्री, राजस्थान) का 29 अक्टूबर 2018 को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं। वे धर्मप्राण एवं समाजसेवी महिला थीं।

उदयपुर। श्री गोपालकृष्णन् जी नायर का 14 नवम्बर 2018 को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती बसंती देवीजी, पुत्र विनीत नायर एवं पुत्री गीता सुनील पिल्लई(पत्रकार) सहित भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। धानमंडी निवासी **श्रीमती कमला बाई पंचोली** पत्नी श्री रामचन्द्र पंचोली (साहू) का पिछले दिनों निधन हो गया। वे अपने पीछे पांच पुत्र राजेन्द्र, सुखलाल, बद्रीलाल, विजय, नागराज (दत्तक) एवं एक पुत्री हेमलता तथा पौत्र-पौत्रियां एवं दोहित्रों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

Mahindra
Rise.
महिंद्रा ट्रैक्टर्स
टेक्नोलॉजी से तरक्की
नवरात्रि एवं दीपावली
के उपलक्ष्य में
यह है युवो की
रीसेल वैल्यू
गारंटी
4 साल में महिंद्रा
डीलरशिप पर पाइए*
• ₹4.7 लाख रीसेल वैल्यू युवो 475DI पर
• ₹4 लाख रीसेल वैल्यू युवो 275DI पर
Mahindra
YUVO
ज़्यादा. जल्दी. बेहतर.
अधिकृत विक्रेता :
भूमिपुत्र ट्रैक्टर्स
महिन्द्रा ट्रैक्टर्स, सेल्स-सर्विस एण्ड इम्पलिमेन्ट्स
हेड ऑफिस : टोल प्लाजा के पास, N.H.27, गोगुन्दा, जिला-उदयपुर
ब्रांच ऑफिस : बस स्टेण्ड, तहसील के पास, गोगुन्दा, जिला-उदयपुर
मो.: 9772360010, 9829262148

मनमोहक एवं सुगन्धित खुशबू जो आपके जीवन में लाये खुशहाली

250 Products Available

चेतक घोड़ा CHETAK HORSE ®

ISO 9001:2008 CERTIFIED

Archana®
Agarbatti

EXPORT QUALITY Since 1947 AGARBATTI

Registered Office :
ARCHANA AGARBATTI
NAVBHARAT INDUSTRIES

N.H. 76, Airport Road, Glass Factory Choraha,
UDAIPUR - 313001 (Rajasthan)
Customer Care Number : 0294-2492161, 2490899

E-mail : sales@archanaagarbatti.com
Website : www.archanaagarbatti.com
www.facebook.com/Archana Agarbatti

गिरनार स्वाद का वादा, उन्नत कृषि सम्पन्न किसान

रामा फॉस्फेट्स लिमिटेड

Rama

ISO 9001:2015

गिरनार®

QUALITY CERTIFIED

हमारे उत्कृष्ट उत्पात

बोरानेटेड सिंगल सुपर फॉस्फेट | सिंगल सुपर फॉस्फेट | जिंकेटेड सिंगल सुपर फॉस्फेट | मेग्नेशियम सल्फेट

4807/11, उमरा, झामरकोटड़ा रोड, तहसील - गिर्वा, उदयपुर (राजस्थान)

Ph. : 0294-2342010, E-mail : rama.udaipur@ramagroup.co.in visit us : www.ramaphosphates.com

Founded on Trust. Envisioning Infinite Possibilities.

Becoming a leading Agri Chem company took us foresight, acumen and ability. But it all started with our foundation of trust. Our principles of complete business transparency and an adherence to the highest standards have made us global experts and a partner of choice in our business. We are confident that our belief in trust will lead us to infinite possiblities by leveraging our capabilities across the Agri Sciences value chain by providing integrated and innovative services & solutions by partnering with the best.

OUR BUSINESS PRINCIPLES

ADAPTABILITY
Constantly transforming ourselves like water, we are nimble footed and highly responsive to change.

TRUST
We work with integrity of purpose, honesty in action and fairness in all our dealings.

SPEED
Blazing ahead, we constantly strive to work with speed in the way we observe, think and act.

INNOVATION
The constant quest for horizon, the never ending search for a better, newer way to do things. Innovation is a way of life for us.

Inspired by Science

PI Industries Ltd

www.piindustries.com | info@piindustries.com